इवान

व्लादीमिर बोगोमोलोव



इवान

व्लादीमिर बोगोमोलोव





अनुराग ट्रस्ट



मूल्य : 40 रुपये

पहला भारतीय संस्करण 2005

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी – 68, निरालानगर

लखनऊ – 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन

मुद्रक : वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ

इवान

युद्ध और बच्चे

ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने कभी युद्ध को जाना ही नहीं। उनके शहरों पर कभी हवाई जहाजों ने बम नहीं बरसाये, टैंकों ने उनकी फ़सलों को कभी रौंदा नहीं। उनके संबंधियों की मृत्यु का दुःखद समाचार लानेवाले मौन डाकियों ने कभी उनका दरवाजा नहीं खटखटाया । उन्होंने युद्ध के बारे में बस किताबों, फिल्मों और बुजुर्गों की कहानियों से ही जाना है।

युद्ध से अपरिचित लोगों को यह पुस्तक अचंभे में डाल सकती है। उन लोगों को यह असंभव लगेगा कि एक साधारण सा लड़का, जिसकी उम्र स्कूल जाने और पढ़ने-लिखने की थी, अपने दोस्तों के साथ खेलने की थी, युद्ध की आग में कूद पड़ा और बहादुर सिपाहियों की तरह वीरगति प्राप्त की।

लेकिन यह कहानी की तरह क्रुर सत्य का एक अंग है, उस आश्चर्यजनक, वीरतापूर्ण इतिहास का एक पृष्ठ है जिसका नाम है : बच्चे युद्ध में।



साम्राज्यवादी, दूसरे देशों को हड़पने वाले युद्ध बहुत निर्मम होते हैं। ये युद्ध न बच्चों के प्रति न औरतों के प्रति और न ही बूढ़ों के प्रति दया दिखाते हैं। इन युद्धों में आक्रमण करने वाले सिपाही नहीं, बल्कि सिपाहियों के भेष में हत्यारे होते हैं।

ऐसा ही था सोवियत संघ के विरुद्ध फ़ासिस्ट जर्मनी का युद्ध- मानवजाति के इतिहास का सबसे क्रूर और विनाशकारी युद्ध।

...21 जून, 1941 को देर गये रात को सोवियत रेलवे स्टेशन ब्रेस्त से जर्मनी की ओर एक मालगाड़ी चली। मालगाड़ी के डिब्बों पर खड़िया से एक छोटा- सा प्यारा शब्द लिखा थाः अनाज। हमारे देश ने पश्चिम की ओर अनाज भेजा था, हम शांति चाहते थे।

लेकिन दो घंटे बाद 22 जून को तड़के सुबह उसी ओर से, जिधर अनाज से लदी मालगाड़ी गई थी, हमारे ऊपर अग्नि-लावा बरसने लगा। फ़ासिस्ट बर्बर रास्ते में सब कुछ रौंदते हुए हमारी सीमा में घुस आये। उन्होंने घर ढा दिए, फ़सलें जला डालीं। सिपाहियों के साथ-साथ बच्चे भी मारे गये।

बच्चों को दूर, आग की लपटों से सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के लिए हमारे लोगों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। सबसे पहले उन्हें युद्ध-स्थल से दूर ले जाया गया, उनके लिए मोटरगाड़ियों और हवाई जहाजों का प्रबंध किया गया।

फिर भी हमारे लोग सभी बच्चों को नहीं बचा पाये...

ब्रेस्त के पास के जंगल में एक क़ब्र की मुझे याद है। एक छोटे-से खंभे पर लगी तख्ती पर लिखा था : "यहाँ तान्या सो रही है।" कौन थी वह तान्या?कैसे वह फ़ासिस्टों की बलि चढ़ी?क्या वह भी इस पुस्तक के नायक इवान की तरह एक छोटी-सी सिपाही थी?या उसे फासिस्टों ने यूँ ही मार डाला, बस इसलिए कि वह जिन्दा थी और अपने देश में सुख से रहती थी?

बहुत-से सोवियत बच्चे जो दुश्मन के क़ब्ज़ेवाले इलाकों में फँसे रह गये थे बड़ों के साथ लड़ाई में जूझ गये।

युद्ध से पूर्व ही वे बहुत कुछ सीख चुके थे। वे जानते थे कि लगातार मीलों चलना और उसके बाद अलाव के पास बैठकर सोये बिना रातें काटना कितना मुश्किल होता है। उन्हें अचूक निशाना लगाना और घायलों की मरहम-पट्टी करना आ गया था।

उन्हें यह सब कुछ उन बड़े लोगों ने सिखाया था, जिन्हें नवस्थापित सोवियत राज्य की रक्षा के लिए हुई लड़ाई अभी तक याद थी। उन्होंने स्कूलों में सीखा, किताबों से सीखा। यह सीख हमारे बच्चों के काम आई।

लड़ाई के आख़िरी गोले के धमाके को कितने ही साल बीत चुके हैं, लेकिन लोगों को अभी तक इन किशोर वीरों के नाम याद हैं जैसे वोलोद्या दुबीनिन, गूल्या कोराल्योवा, जोया कोस्मोदेम्यांस्काया और ऐसे ही कितने और।

जोया कास्मोदेम्यांस्काया अठारह साल की थी। वह छापामारों की एक टोली में लड़ रही थी। एक दिन वह

टोह लेने गई थी। इस नाजुक और शान्त लड़की ने अपनी इच्छा-शक्ति और साहस के बल पर फ़ासिस्टों को हरा दिया। उससे पूछताछ किये जाते वक्त वह चुप्पी साधे रही और भीषण यंत्रणाएँ दिये जाने के बावजूद उसने अपने साथियों के बारे में कुछ भी नहीं बताया। बाद में जब उसे नंगे पाँव बर्फ़ पर चलाकर फाँसी के तख़्ते की ओर ले जाया जा रहा था, तब भी उसने दया की भीख नहीं मांगी और शांत भाव से मौत को गले लगाया। उसकी चर्चा घर-घर होने लगी। उसके नाम ने हमारे किशोरों और किशोरियों को विजय की प्रेरणा दी और दुश्मन के दिल में दहशत बिठा दी।

वोलोद्या दुबीनिन युद्ध से पहले छठी कक्षा में पढ़ता था। जब लड़ाई शुरू हुई तो वह दुश्मन की नजरों से बचकर केर्च के भूमिगत गुफाओं में छिपे हुए छापामारों की टोली में गुप्तचर बन गया। लड़का

बहुत चतुर और निडर था; वह उन दरारों में घुस जाता था जिनमें बड़ी उम्र के लोग नहीं घुस पाते थे। वह छापामारों की टोली के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। वह भी शहीद हो गया- एक अनमोल सिपाही की मौत।

बच्चे युद्ध में! यह सच है कि सभी ने हथियार नहीं उठाये; बहुतों ने अपनी क्षमता के अनुसार बड़ों की सहायता की।

मुझे याद है कि एक छोटे-से संग्रहालय की, जिसे लेनिनग्राद में बच्चों ने अपने हाथ से बनाया था। इस संग्रहालय में मैंने स्कूली बच्ची का हाजिरी और परीक्षाओं में पाये नम्बरों का कार्ड देखा था। उसमें केवल अच्छे और सर्वोत्तम नम्बर ही थे। इस तरह के कार्डों की संख्या अब भी लाखों में है, उन सबको तो संग्रहालयों में नहीं रखा जा सकता। लेकिन हाजिरी और नम्बरोंवाला वह कार्ड एक लड़की का था, जो 1941-42 की सर्दियों में लेनिनग्राद में रहती और पढ़ती थी। शहर जल रहा था, भूख और सर्दी से मर रहा था, उस पर लगातार बमबारी और गोलों की बौछार हो रही थी–वह फौलादी नाकेबंदी के शिकंजे में जकड़ा हुआ था। युद्ध की इन परिस्थितियों में भी वह लड़की अपना काम करती रही–अपनी पढ़ाई करती रही और बहुत अच्छी तरह करती रही। यही उसके दृढ़ संकल्प और साहस का प्रमाण था; इस तरह उसने शत्रु का सामना किया और उसके खिलाफ लड़ीं

मैं युद्ध में कितने ही और बच्चों के बारे में बता सकता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि इस पुस्तक में जो कहानी तुम्हारे सामने प्रस्तुत की गई है उसमें तुम्हारे ही एक हमउम्र लड़के की वीरता का बहुत सच्चा, आडंबरहीन और जीता-जागता चित्रण किया गया है। इह बच्चा आज का दिन नहीं देख पाया। वह फासिस्टों के विरुद्ध संघर्ष में शहीद हो गया। बच्चों ने इस युद्ध में वीरता का जो प्रदर्शन किया है इसकी स्मृति अमर रहेगी।

यूरी याकोव्लेव





1

ठीक चार बजे जगाने का हुक्म देकर उस रात मैं नौ बजे ही सोने चला गया। मैं फौजी सुरक्षा चौकियों का मुआयना पौ फटने से पहले ही कर लेना चाहता था।

मुझे काफी जल्दी उठा दिया गया : घड़ी के चमकते डायल में सुइयाँ समय बता रही थीं—एक बजने में पाँच मिनट।

"कामरेड सीनियर लेफ्टिनेण्ट... कामरेड सीनियर लेफ्टिनेण्ट... आपसे कुछ बात करनी है..." कोई मेरा कन्धा जोर से झिंझोड़ रहा था। मेज पर जलती हुई ट्रोफी बत्ती की रोशनी में मैंने लांस कार्पोरल वसील्येव को देखा, जिसका प्लाटून फौजी सुरक्षा चौकियों पर तैनात किया गया था।

"एक आदमी गिरफ्तार किया गया है... जूनियर लेफ्टिनेण्ट ने आपके पास ले जाने का हुक्म दिया है..."

"बत्ती जरा तेज करो!" मन ही मन गालियाँ देकर मैंने आदेश दिया : मेरे बिना भी तो यह काम निबटाया जा सकता था।

वसील्येव ने लैंप जलाया और मेरी ओर मुड़कर बोला :

"नदी के किनारे पानी में रेंग रहा था। क्यों—कुछ बोलता नहीं, बस हेडक्वार्टर पहुँचाने की माँग

कर रहा है। सवालों का कोई जवाब नहीं : कहता है बस कमाण्डर से बात करूँगा। लगता तो कमजोर-सा है, पर हो सकता है बन रहा हो। जूनियर लेफ्टिनेण्ट ने हुक्म दिया है कि..."

मैंने थोड़ा सा उठकर कम्बल के नीचे से पैर निकाले और आँखें मलते हुए बेंच पर बैठ गया। भारी डील-डौल का वसील्येव मेरे सामने खड़ा था। उसकी गहरे रंग की फौजी बरसाती से पानी टपक रहा था।

बत्ती की लौ बढ़ते ही लम्बे-चौड़े डग-आउट में रोशनी फैल गई। ठीक दरवाजे के पास खड़े, दुबले-पतले, कोई ग्यारह साल के लड़के को मैंने देखा–वह ठण्ड से बिल्कुल नीला पड़ गया था और काँप रहा था। उसके पैंट और कमीज बिल्कुल गीले हो गये थे और शरीर से चिपके हुए थे। छोटे, नंगे पैर मिट्टी से सने थे। उसे ठण्ड से ठिठुरता देखकर मुझे भी कँपकँपी छूट गई।

"अँगीठी के पास चले जाओ," मैंने कहा। "तुम हो कौन?"

बड़ी-बड़ी, आश्चर्यजनक हद तक एक-दूसरे से दूर आँखों से मुझे ध्यान और चौकसी से देखते हुए वह अँगीठी के पास खिसक आया। उसके गालों की हड्डियाँ काफी चौड़ी थीं और चेहरा मिट्टी से सन जाने की वजह से गहरा भूरा लग रहा था। गीले, अजीब से रंगवाले बाल बेतरतीबी से बिखरे थे। उसके भिंचे, नीले पड़े होंठोंवाले चेहरे और थकी निगाहों में एक अन्दरूनी तनाव था और, जैसा कि मुझे लगा, अविश्वास और द्वेष का भाव।

"तुम हो कौन?" मैंने फिर पूछा।

"पहले उसे बाहर भेज दीजिये," उसने वसील्येव की ओर देखकर दाँत किटकिटाते हुए क्षीण स्वर में कहा।

"अँगीठी में लकड़ी बढ़ा दो और ऊपर जाकर इंतजार करो!" मैंने वसील्येव को हुक्म दिया।

उसने जोर से साँस ली और गर्म डग-आउट में ज्यादा से ज्यादा देर ठहर सकने के लिए आराम से, बिना किसी हड़बड़ाहट के अँगीठी को खपच्चियों से भर दिया और वैसे ही धीरे-धीरे बाहर चला गया। इस बीच मैंने अपने बूट चढ़ा लिये और उत्सुकता से लड़के को देखने लगा।

"अब क्यों चुप हो?कहाँ से आये हो?"

"मैं बोंदरेव हूँ," उसने धीमे-से इस तरह कहा जैसे उसका यह कुलनाम मुझे न केवल कुछ बता सकता हो, बल्कि सभी कुछ साफ-साफ समझा सकता हो। "फौरन हेडक्वार्टर में नम्बर इक्यावन को सूचना भेजिये कि मैं यहाँ हूँ।"

"अरे वाह!" मैं अपनी हँसी रोक नहीं पाया। "ठीक है, उसके बाद?"

"बाद से आपको कोई मतलब नहीं। वे लोग खुद सब कर लेंगे।"

"'वे लोग' कौन हैं?किस हेडक्वार्टर में सूचना भेजी जाये?और यह नम्बर इक्यावान कौन है?"

वह चुप रहा।

"तुम्हारा मतलब किस फौज के हेडक्वार्टर से है?"

"डाक-यूनिट का नम्बर है 49550..."

उसने हमारी फौज के हेडक्वार्टर की डाक-यूनिट का नम्बर ठीक-ठीक बता दिया।

मैं हँसी रोककर अचरच से उसे देख रहा था और कुछ समझने की कोशिश कर रहा था।

उसने जाँघों तक लम्बी, मैली कमीज और उटँगी, देहाती ढंग से सिली हुई, शायद घर के बने टाट जैसे मोटे कपड़े की, पुरानी पतलून पहन रखी थी; उसकी बातचीत का लहजा बिल्कुल मास्को और बेलोरूस वासियों जैसा लगता था। उसके बोलने के ढंग से पता लग रहा था कि वह शहर में ही पैदा हुआ है।

धीरे-धीरे नाक सुड़कते हुए और सिर से पाँव तक काँपते हुए वह मेरे सामने खड़ा था, और बीच-बीच में भौंहें सिकोड़कर सतर्क दृष्टि से मुझे देख लेता था।

"कपड़े उतारकर तौलिये से रगड़-रगडकर बदन पोंछों। फुरती से!" मैंने उसकी ओर इस्तेमाल किया हुआ, पतला तौलिया बढ़ाते हुए कहा।

उसने मिट्टी से सने और ठिठुरी पसलियोंवाले, दुबले-पतले शरीर से कमीज उतार दी और हिचकिचाहट से तौलिये की ओर देखा।

"ले लो, ले लो! गंदा ही है।"

वह हाथ, छाती पीठ आदि तौलिये से रगड़-रगड़कर पोंछने लगा।

"और पैंट भी उतार दो!" मैंने कहा। "अरे शरमा रहे हो क्या?"

उसने वैसे ही चुपचाप पेटी की जगह बँधी हुई डोरी की फूली हुई गाँठ को मुश्किल से खोला और पैंट उतार दिया।

वह अभी बिल्कुल बच्चा ही था; छोटे-छोटे कन्धे, दुबले-पतले हाथ-पैर—देखने में दस-ग्यारह साल से ज्यादा का नहीं लग रहा था, हालाँकि उसके उभरे हुए माथे की झुर्रियाँ और गम्भीर, उदास चेहरा आम बच्चों के समान नहीं थे। इन्हें देखकर उसे तेरह साल का भी कहा जा सकता था। उसने अपने पैंट और कमीज उठाकर दरवाजे के पास कोने में फेंक दिये।

"और सुखायेगा कौन उन्हें, चाचा तुम्हारा?" मैंने पूछा।

"मेरे लिये और आ जायेंगे।"

"ओह!" मैंने मजा लेते हुए कहा। "तो कहाँ से और आ जायेंगे?"

वह चुप रहा। मैं पूछने ही वाला था कि उसके कागजात कहाँ हैं, तभी मुझे याद आया कि वह अभी बहुत छोटा है, उसके पास कागजात हो ही नहीं सकते।

मैंने बेंच के नीचे से अरदली की एक पुरानी रुई भरी जाकेट निकाली। अरदली इस समय मेडिकल बटालियन में गया हुआ था। लड़का मेरी ओर पीठ करके अँगीठी के पास खड़ा था—बाहर की ओर निकली हुई पखोरे की नुकीली हड्डियों के बीच में काले रंग का, बड़ा पैदाइशी निशान दिखाई दे रहा था। उससे कुछ ऊपर, दाहिने पखोरे पर गहरे-लाल रंग का घाव का निशान था—शायद गोली का घाव होगा।

"यह क्या है?"

उसने मुँह मोड़कर कन्धे के ऊपर से मुझे देखा, पर कुछ नहीं कहा।

"मैं तुम्हीं से पूछ रहा हूँ, यह तुम्हारी पीठ पर क्या है?" मैंने उसकी ओर जाकेट बढ़ाते हुए ऊँची आवाज से पूछा।

"इससे आपको कोई मतलब नहीं है। और आपको चीखने का कोई अधिकार नहीं है, उसने बड़ी

ढिठाई से बिल्ली जैसी अपनी कंजी आँखों को चमकाते हुए कुछ रूखेपन से कहा, हाँ जाकेट उसने ले ली। ''आपका काम बस सूचना पहुँचाना है कि मैं यहाँ हूँ। बाकी का आपसे कोई मतलब नहीं।''

''तुम मुझे मत सिखाओ!'' गुस्सा होकर मैंने उससे चिल्लाकर कहा। ''तुम्हें इतनी भी समझ नहीं कि तुम इस समय कहाँ हो और कैसा बर्ताव तुम्हें करना चाहिए। तुम्हारे कुलनाम से मुझे कुछ भी पता नहीं चल रहा। जब तक तुम यह नहीं बताओगे कि तुम कौन हो, कहाँ से आये हो और नदी पर क्यों पहुँचे, मैं उँगली तक नहीं हिलाऊँगा।''

''आपको इसके लिये जवाब देना पड़ेगा!'' साफ धमकी भरी आवाज में उसने घोषणा की।

"तुम मुझे डराओ मत—अभी तुम बच्चे हो!

इस तरह चुप रहने की तुम्हारी चाल सफल नहीं होगी। साफ़-साफ़ बताओ, कहाँ से आये हो तुम?"



लगभग टखनों तक लम्बी जाकेट में लिपटा एक तरफ़ मुँह करके वह चुप खड़ा रहा।

"तुम बैठे रहो यहाँ एक दिन, तीन दिन, पाँच दिन, पर जब तक तुम बता नहीं दोगे कि तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, तब तक मैं तुम्हारे बारे में कोई भी खबर कहीं नहीं पहुँचाऊँगा," मैंने निर्णय के स्वर में कहा।

उसने बड़ी बेपरवाही से ठण्डी नजरों से मेरी ओर देखा और पलटकर चुपचाप खड़ा रहा।

"कुछ बोलेंगे भी?"

"आपको फ़ौरन हेडक्वार्टर में नम्बर इक्यावन को ख़बर भेजनी हे कि मैं यहाँ हूँ," उसने हठ करते हुए दोहराया।

" मुझे तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं करना है," मैंने झुझलाहट से कहा। "और जब तक तुम साफ़-साफ नहीं बताओगे कि तुम कौन हो ओर कहाँ से आये हो, मैं कुछ करनेवाला भी नहीं, इतना याद रखो?!.. यह नम्बर इक्यावन कौन है?"

उसने भौं चढ़ाकर मेरी ओर ग़ौर से देखा, पर चुप ही रहा।

कहाँ से आये हो तुम?... मुश्किल से अपने आपको रोकते हुए मैंने पूछा। "अगर चाहते हो कि तुम्हारे बारे खबर पहुँचाऊँ तो कुछ तो बोलो।"

लम्बे मौन और तनाव भरे सोच-विचार के बाद उसने होंठ खोले :

"उस पार से।"

"उस पार से?" मुझे विश्वास नहीं हुआ। "और यहाँ कैसे पहुँचे?तुम कैसे साबित करोगे कि तुम उस पार से आये हो?"

"मैं साबित नहीं करूँगा। मैं आगे कुछ बताऊँगा भी नहीं। आपको मुझसे पूछने का कोई अधिकार नहीं, आपको इसके लिए जवाब देना पड़ेगा। और हाँ, फ़ोन पर भी कुछ नहीं कहना है इस बारे में कि मैं उस पार से आया हूँ, यह बस नम्बर इक्यावन को मालूम है। आपको उसे तुरन्त खबर भेजनी चाहिए कि बोंदरेव मेरे पास है। और बस! वे लोग मुझे लेने आ जायेंगे!" उसने विश्वास के साथ जोर से कहा।

"फिर भी कुछ तो बताओ कि तुम कौन हो और कौन तुम्हें लेने आयेगा?"

वह चुप रहा।

मैं थोड़ी देर देखता रहा और सोचता रहा। उसके कुलनाम से मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा था, पर हो सकता है फ़ौज के हेडक्वार्टर में उसके बारे में जानते हों। लड़ाई के दौरान मुझे किसी भी चीज़ पर आश्चर्य न करने की आदत पड़ गई थी।

वह शक्ल-सूरत से दयनीय और थका हुआ लग रहा था पर मुझसे वह न केवल विश्वास के साथ बल्कि रोब से बातें कर रहा था: उसने मुझसे अनुरोध नहीं किया, उसने माँग की। बच्चों से भिन्न उसकी उदास, गम्भीर और सतर्क मुद्रा ने मेरे मन पर अजीब-सी छाप डाली; उसका यह दावा कि वह उस पार से आया है, मुझे बिल्कुल झूठ लग रहा था।

यह ठीक है कि मैं यों भी सीधे फौज के हेडक्वार्टर में उसके बारे में सूचना भेजनेवाला नहीं था, पर रेजिमेण्ट में उसके बारे में बताना मेरा फर्ज था। मैंने सोचा कि वे लोग आकर इसे ले जायेंगे और खुद ही मामला सुलझा लेंगे और मैं दो घण्टे और सोकर चौकियों के निरीक्षण के लिये चला जाऊँगा।

मैंने रिसीवर उठाकर रेजिमेण्ट के हेडक्वार्टर का नम्बर मिलाया।

"नम्बर तीन सुन रहा है," मुझे हेडक्वार्टर के प्रधान कैप्टन मास्लोव की आवाज सुनाई दी।

"कामरेड कैप्टन, नम्बर आठ बोल रहा है! यहाँ मेरे पास बों-द-रेव! उसकी माँग है कि उसके बारे में 'वोल्गा' को सूचना भेज दी जाये।.."

"बोदरेव?.." मास्लोव ने आश्चर्य से पूछा। "कौन बोंदरेव?ऑपरेशंज़ू विभाग का मेजर, मुआयना करनेवाला?तुम्हारे पास कहाँ से पहुँच गया वह?" मास्लोव ने प्रश्नों की बौछार कर दी, मुझे लगा कि वह कुछ घबराया हुआ था।

"अरे नहीं, यह मुआयना करनेवाला कहाँ का! मुझे खुद नहीं मालूम, कौन है यह : बताता ही नहीं। बस कहता है कि मैं उसके बारे में 'वोल्गा' में नम्बर इक्यावन को सूचना पहुँचा दूँ कि वह यहाँ है।"

"मैंने सोचा आपको मालूम होगा।"

"हमें 'वोल्गा' का संकेत नहीं मालूम है, बस डिवीजन का मालूम है। आखिर कौन है यह बोंदरेव,

किस पद पर है यह?"

" पद पर !" यह न चाहते हुए भी अनायास मैंने हँसकर कहा। "वह अभी लड़का है... कोई बारह साल का लड़का..."

"हँसी कर रहे हो क्या?... किसके साथ मज़ाक़ कर रहे हो?!"मास्लोव फ़ोन पर ही फाड़कर चिल्ला पड़ा। "कोई तमाशा दिखाने का इरादा है क्या?! मैं मेजर को ख़बर करूँगा! तुमने क्या बहुत पी ली है, या करने को कुछ नहीं बचा?मैं तुम्हें...

"कामरेड कैप्टन,!" हक्का-बक्का होकर मैंने चिल्ला- कर कहा। "कामरेड कैप्टन" मैं सच कह रहा हूँ यह लड़का है। मैंने सोचा, आपको इसके बारे में मालूम होगा..."

"न मुझे मालूम है और न जानना चाहता हूँ!" मास्लोव ने झुझलाकर कहा। "तुम मुझे बकवास से परेशान मत करो! मेरा काम के मारे वैसे ही बुरा हाल है, और तुम..."

"मैंने सोचा कि..."

"बस बातचीत ख़त्म..."

"जी! पर कामरेड कैप्टन, इसका मैं करूँ क्या, इस लड़के का?"

"क्या करो?... पर वह तुम्हारे पास पहुँचा कैसे?"

"नदी के किनारे सुरक्षा गार्ड ने पकड़ा।"

"और नदी के किनारे कैसे पहुँचा?"

"जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ..." मैं एक पल के लिये उलझन में पड़ गया। "कह रहा है कि उस पार से आया है!"

"'कह रहा है'!" मास्लोव ने चिढ़ते हुए कहा।

"क्या उड़न-खटोले पर?उसने झूठ बोल दिया और तुमने विश्वास कर लिया। उसे संतरी के हवाले कर दो!" उसने आदेश दिया। "और अगर तुम खुद उससे नहीं निबट सकते तो ज़ोतोव के हवाले कर दो, यह उनका काम है, उन्हीं को निबटने दो!"

"इाप उनसे कह दीजिए कि अगर वह चिल्लायेंगे और अभी नम्बर इक्यावन को सूचना नहीं देंगे तो इसके लिये उन्हें जवाब देना पड़ेगा!" अचानक, दृढ़ और तेज आवाज़ में लड़के ने कहा।

पर मास्लोव तब तक रिसीवर रख चुका था। लड़के पर और उससे भी ज्यादा मास्लोव पर अपना गुस्सा दिखाते हुए मैंने भी अपना रिसीवर पटक दिया।

असल में बात यह है कि मैं सिर्फ़ अस्थाई तौर पर बटालियन के कमाण्डर के पद पर था और सभी को मालूम था कि मैं "अस्थाई" हूँ। उसके अलावा मेरी उम्र भी बस इक्कीस साल थी, और स्वभावतः दूसरे बटालियन कमाण्डरों की तुलना में मेरे साथ व्यवहार अलग ढ़ग से किया जाता था। रेजिमेण्ट का कमाण्डर और डिप्टी कमाण्डर तो प्रकटतः ऐसा नहीं करते थे, पर मास्लोव, जो मेरी रेजिमेण्ट के कमाण्डरों मे सबसे छोटा था, इस बात को कभी छिपाता नहीं था कि वह मुझे छोटा समझता है और मेरे साथ वैसा ही बर्ताव भी करता था, हालाँकि मैं लड़ाई के शुरू के महीनों से ही लड़ता रहा था, और मुझे घाव भी लग चुके थे और पदक भी मिल चुके थे।



यह बात साफ है कि पहले और तीसरे बटालियनों के कमाण्डरों से इस ढ़ग से बात करने की हिम्मत मास्लोव में नहीं थी, पर मेरे साथ... बिना सुने और बिना मामला साफ़ किये बेमतलब चिल्लाना... मुझे विश्वास हो गया था कि वह सही नहीं है। फिर भी लड़के से मैंने बदले के भाव से कहा :

"तुमने मुझसे अपने बारे में सूचना पहुँचाने को कहा और मैंने पहुँचा दी। हुक्म हुआ है कि तुम्हें डग-आउट में बैठा दिया जाये," मैंने झूठ बोला, "और तुम्हारे ऊपर संतरी तैनात कर दिया जाये। अब तो खुश हो?

"मैंने आपसे फ़ौज के हेडक्वार्टर में नम्बर इक्यावन को सूचना देने को कहा था और आपने कहाँ फ़ोन किया?"

"तुमने 'कहा था'!.. मैं खुद फ़ौज के हेडक्वार्टर से बात नहीं कर सकता।"

"लाइये, मैं फोन करता हूँ।" उसने जल्दी से जाकेट में से हाथ निकालकर रिसीवर उठा लिया।

"ख़बरदार!... किसे फ़ोन करोगे?किसे जानते हो तुम फ़ौज के हेडक्वार्टर में?"

वह थोड़ी देर चुप रहा, पर रिसीवर उसने नहीं छोड़ा, फिर उदास आवाज में बोला :

"लेफिटनें-कर्नल ग्रिज़्नोव को।"

लेफिटनें-कर्नल ग्रिज़्नोव फ़ौज के गुप्चर विभाग के प्रधान थे। मैंने उसके बारे में सुना ही नहीं था, बल्कि उन्हें निजी तौर पर जानता भी था।

"फ़ौज के हडक्वार्टर में और किसे जानते हो?" फिर चुप्पी।... उसने भौंहें चढ़ाकर मुझे उड़ती नजर से देखा और कहा :

"कैप्टन होलिन को हेडक्वार्टर के गुप्तचर विभाग के अफ़सर से—भी मैं परिचित था।

"इन लोगों को तुम कैसे जानते हो?"

"अभी ग्रिज़्नोव को ख़बर पहुँचाइये कि मैं यहाँ हूँ," लड़के ने मेरी बात का जवाब न देते हुए मांग की, "या मैं खुद फोन कर लूँ!"

उसे रिसीवर लेकर मैं और आधे मिनट सोचता रहा, फिर हिम्मत बटोरकर मैंने नम्बर मिलाया। मेरा टेलीफ़ोन फिर माक्स्लोव से मिला दिया गया।

"नम्बर आठ फिर आपको तकलीफ़ दे रहा है। कामरेड कैप्टन, मेरी बात सुन तो लीजिए," अपनी परेशानी छिपाने की कोशिश करते हुए मैंने कहा। "मैं फिर बोंदरेव के बारे में फ़ोन कर रहा हूँ। वह लेफ्टिनेंट-कर्नल ग्रिज़्नोव और कैप्टन होलिन को जानता है।"

"इन लोगों को वह कैसे जानता है?" मास्लोव ने थके स्वर में पूछा।

"वह नहीं बताता है। उसके बारे में लेफ्टिनेंट-कर्नल ग्रिज़्नोव को ख़बर पहुँचाना मैं जरूरी समझता हूँ।"

"अगर जरूरी समझते हो तो पहुँचा दो ख़बर," लापरवाही से मास्लोव ने कहा। तुम समझते हो ऊटपटाँग बातों को लेकर बड़े अफ़सरों तक पहुँचा जा सकता है। इस मामले में अफ़सरों को परेशान करने की मैं कोई वजह नहीं समझता हूँ, और वह भी रात को। ऐसी कोई जरूरत नहीं है!"

"तो मुझे फ़ोन करने की इजाज़त दीजिये।"

"मैं कोई इजाज़त नहीं दे रहा हूँ, और तुम मुझे इसमें मत फँसाओ... हाँ, दुनायेव को फोन कर सकते हो। मैं उससे थोड़ी देर पहले बात कर रहा था, वह सो नहीं रहा है।"

मैंने फोन मिलाकर डिवीजन के गुप्तचर विभाग के प्रधान मेजर दुनायेव को बताया कि बोंदरेव मेरे पास है और वह जल्द से जल्द लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ग्रिज्नोव को इसकी खबर देने की माँग कर रहा है...

''ठीक है,'' दुनायेव ने बीच में कहा। ''जरा ठहरो, मैं ख़बर कर दूँगा।''

दो मिनट बाद तेज और आग्रहपूर्ण स्वर में टेलीफोन बज उठा।

''नम्बर आठ?... 'वोल्गा' से बात कीजिये,'' टेलीफोन ऑपरेटर ने कहा।

''गाल्त्सेव?.. हेलो, गाल्त्सेव!'' लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ग्रिज्नोव की मोटी, खुरदुरी आवाज मैंने पहचान ली। आवाज न पहचानना मेरे लिए नामुमकिन था : गर्मियों तक ग्रिज्नोव हमारी डिवीजन के गुप्तचर विभाग के प्रधान थे। मैं उस समय संचार-अफसर था और अक्सर उससे मेरा मिलना होता था। ''बोंदरेव तुम्हारे पास है?''

''हाँ, कामरेड लेफ्टिनेण्ट-कर्नल!''

''शाबाश!'' (मैं झट नहीं समझ सका यह तारीफ किसकी हो रही है : मेरी या उस लड़के की।) ''ध्यान से सुनो : डग-आउट से सबको बाहर निकाल दो, ताकि लड़के को कोई देखे नहीं और तंग न करे। किसी तरह की पूछताछ और किसी भी तरह की बातें उसके बारे में न हों! समझे?... मेरी ओर से उसे सलाम कहो। होलिन अभी निकल रहा है, कोई तीन घण्टे में वह तुम्हारे पास पहुँच जायेगा। तब तक लड़के को पूरी सुविधाएँ देना! उससे नरमी के साथ बात करना, ध्यान रखो : वह जरा तेज स्वभाव का है। सबसे पहले उसे कागज़ और स्याही या पेंसिल दे दो। जो कुछ वह लिखे, उसे लिफाफे में रखकर किसी भरोसेमन्द आदमी के साथ तुरन्त रेजीमेण्ट के हेडक्वार्टर भेज दो। मैं उन लोगों से कह दूँगा, वे तुरन्त मेरे पास पहुँचा देंगे। उसे पूरी सुविधाएँ देना और उसके साथ बातें मत करना। उसे नहाने के लिए गर्म पानी दे देना, खिला-पिला देना, फिर सोने देना। यह हमारा ही लड़का है। समझे?''

''जी, हाँ!'' मैंने कहा, हालाँकि बहुत कुछ मेरी समझ में नहीं आया।

* * *

मैंने सबसे पहले उससे पूछा : "कुछ खाओगे?"

"बाद में," लड़के ने आँखें उठाये बिना कहा।

मैंने उसके सामने मेज पर कागज, लिफाफे और कलम रख दिये, स्याही भी दे दी। फिर डग-आउट से निकलकर वसील्येव से चौकी पर जाने के लिये कहा और लौटकर दरवाजे को काँटे से बन्द कर दिया।

लड़का बेंच की कगार पर लाल, दहकती अँगीठी की ओर पीठ किये बैठा था; उसने पहले जो गीली पतलून कोने में फेंक दी थी, अब वह उसके पैरों के पास पड़ी थी। पिन खोलकर जेब में से उसने गन्दा रूमाल निकाला और सारा सामान मेज पर फैला दिया। फिर गेहूँ और रई के दाने, सूरजमुखी के बीज और सनोबर व फर की नुकीली पत्तियों की अलग-अलग ढेरियाँ लगा दीं। इसके बाद हर ढेरी को ध्यान से गिनने लगा और कागज पर लिखता गया।

जब मैं मेज के पास गया तो उसने जल्दी से कागज पलट दिया और मेरी ओर द्वेष भरी नज़रों से देखा।

"अच्छा, मैं नहीं देखूँगा, नहीं देखूँगा," मैंने जल्दी से उसे विश्वास दिलाया।

बटालियन के हेडक्वार्टर में फोन करके मैंने जल्दी से दो बाल्टी पानी गरम करके टब के साथ डग-आउट में पहुँचाने का हुक्म दिया। मेरे हुक्म को दोहराते हुए सार्जेन्ट की आवाज में छिपा आश्चर्य मैं पहचान गया। मैंने उससे कहा कि मैं नहाना चाहता हूँ। उस समय रात के डेढ़ बजे थे और शायद मास्लोव की तरह उसने भी सोच लिया कि या तो मैंने बहुत पी ली है, या मेरे पास करने को कुछ नहीं है। साथ ही मैंने रेजीमेण्ट के हेडक्वार्टर में हरकारे की हैसियत से भेजने के लिए पाँचवीं कम्पनी के फुर्तीले जवान त्सारीव्नी को तैयार करने को कहा।

फोन पर बात करते हुए मैं मेज की ओर बगल करके खड़ा था, और मैंने कनखियों से देखा कि लड़के ने कागज पर आड़ी-खड़ी लकीरें खींचकर उसे खानों में बाँट दिया है और किनारे पर बायीं ओर के आड़े खानों में बड़ी-बड़ी बच्चों जैसी लिखाई में लिख दिया है : "...2...4,5..."। इन अंकों का मतलब क्या था और इनके बाद उसने क्या लिखा मुझे मालूम नहीं और आखिर तक मैं जान नहीं पाया।

नाक सुड़कते हुए कागज को हाथ से ढके वह काफी देर, कोई घंटे भर उस पर कलम चलाते हुए लिखता रहा। उसकी उँगलियों पर खरोंचों के निशान थे, नाखून कुतरे हुए थे, गर्दन और कान बहुत दिनों से साफ नही किये गये थे। बीच-बीच में रुककर वह परेशानी से होंठ चबाता, सोचता या कुछ याद करता, नाक सुड़कता और फिर से लिखने लगता था। गर्म और ठण्डा पानी आ गया था; कोई डग-आउट में आ न पाये इसलिये मैं खुद ही बाल्टियाँ और टब अन्दर ले आया था और वह था कि लिखे जा रहा था। पानी ठण्डा न हो जाये इस डर से मैंने बाल्टी अँगीठी पर रख दी।

काम खत्म कर उसने लिखे हुए पन्नों को तह करके लिफाफे में रखा, उसे थूक से गीला करके चिपका दिया। मैंने पैकेट डग-आउट के पास इंतजार कर रहे हरकारे को देकर कहा :

"इसे फौरन रेजीमेण्ट के हेडक्वार्टर पहुँचा दो। बहुत जल्दी! काम पूरा हो जाने पर क्रायेव को खबर

कर देना।"

फिर लौटकर मैंने एक बाल्टी में थोड़ा ठण्डा पानी मिला दिया। जाकेट उतारकर लड़का टब में बैठकर नहाने लगा।

उसके सामने मैं अपने आपको अपराधी अनुभव कर रहा था। जाहिर है, उसने मेरे सवालों के जवाब हिदायतों की वजह से नहीं दिये थे, और मैं था कि जो मुझे नहीं जानना था वही जानने की कोशिश में उस पर चिल्ला रहा था, उसे धमका रहा था। सभी को मालूम है कि गुप्तचरों के अपने रहस्य होते हैं, जिनके बारे में हेडक्वार्टर के बड़े अफसर तक नहीं जानते हैं।

अब मैं आया की तरह उसकी देखभाल करने तक को तैयार था; यहाँ तक कि मैं खुद अपने हाथों से उसे नहलाना चाहता था, पर हिम्मत नहीं कर पाया : वह मेरी ओर नहीं देख रहा था। मुझ पर ध्यान न देकर वह ऐसा जता रहा था मानो उसके अलावा डग-आउट में कोई न हो।

"लाओ, तुम्हारी पीठ साफ कर दूँ," अनायास मैंने हिचकिचाकर कहा।

"मैं खुद कर लूँगा!" उसने मेरी बात काटकर कहा।

मुझे साफ तौलिया और उसके पहनने की सूती कमीज हाथ में लिये अँगीठी के पास खड़े रह जाना पड़ा। मैं देगचे में रखे शाम के खाने—गोश्त के साथ बाजरे की खिचड़ी—को जिसे मैंने अभी तक छुआ भी नहीं था चलाने लगा।

नहाने के बाद वह सुनहरे बालोंवाला, गोरा-चिट्टा लड़का निकला; बस चेहरा और हाथ ही कुछ सँवलाये हुए थे, हवा से या शायद धूप से। उसके कान छोटे-छोटे, गुलाबी, कोमल और, जैसा कि मुझे लगा, एक जैसे नहीं थे : दाहिना कान पीछे की ओर चिपका हुआ और बायाँ कुछ आगे की ओर निकला हुआ था। गालों की उभरी हुई हड्डियोंवाले उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी, आश्चर्यजनक हद तक एक-दूसरे से दूर कुछ कंजी सी आँखें देखने लायक थीं। मैंने शायद कभी किसी की आँखें एक दूसरे से इतनी दूर नहीं देखी थीं।

उसने बदन पोंछकर सुखाया और मेरे हाथों से कमीज ले ली, जो अँगीठी के पास होने की वजह से गर्म हो गई थी। कमीज पहनकर उसने अच्छी तरह उसकी आस्तीनें चढ़ा लीं और मेज के पास बैठ गया। उसके चेहरे पर उदासी और सतर्कता का वह भाव अब दिखाई नहीं दे रहा था। वह थका-थका सा देख रहा था, उसकी मुद्रा कठोर और गम्भीर थी।

मैंने सोचा था कि वह खाने परर एकदम टूट पड़ेगा, पर उसने कई बार चम्मच पकड़ा अनमनेपन से कुछ खाया और बर्तन परे खिसका दिया। फिर वह उसी तरह चुपचाप बिस्कुट और बेहद शक्कर मिली चाय का—जिसे अपने रसद में से देने में मैंने कंजूसी नहीं की थी—एक प्याला पीकर उठ गया और धीरे से कहा :

"शुक्रिया।"

मैं इसी बीच टब बाहर ले जाकर पानी फेंक आया, जो ऊपर से साबुन के झाग की वजह से कुछ कम लेकिन नीचे से बहुत ही गन्दा था। फिर तकिये को हाथ से पीटकर एकसार करके बेंच पर रख दिया। लड़का मेरे बिस्तर पर चढ़ गया और दीवार की ओर मुँह करे हथेली को गाल के नीचे रखकर लेट

गया। उसने मेरी सभी गतिविधियों को मेरी जिम्मेदारी मान लिया था; मैं समझ गया कि वह पहली बार ''उस पार'' से नहीं आ रहा है और जानता है कि जैसे ही उसके आने की खबर फौज के हेडक्वार्टर को मिलेगी, वैसे ही ''पूरी सुविधाएँ देने'' का आदेश आयेगा।... उसे दो कम्बल उढ़ाकर मैंने उन्हें चारों ओर से अच्छी तरह दबा दिया, जैसा कभी मेरी मां मेरे लिये किया करती थी।

2

मैं चुपचाप बाहर जाने की तैयारी करने लगा—सिर पर लोहे का टोप लगाकर फौजी बरसाती पहन लिया और हाथ में टॉमीगन लेकर मैं धीरे-धीरे डग-आउट से बाहर निकल आया। मैंने संतरी को मेरे जाने के बाद किसी को भी न घुसने देने का आदेश दे दिया।

बरसात की रात थी। वैसे तो पानी बरसना बन्द हो गया था, पर उत्तरी ठण्ड हवा के झोंके आ रहे थे और अन्धेरा छाया हुआ था।

मेरा डग-आउट हमें जर्मनों से अलग करनेवाली दूनेपर नदी से सात सौ मीटर की दूरी पर झाड़ियों के बीच था। चूँकि नदी का उस तरफवाला किनारा ऊँचा था, इसलिये हमारी अगली मोर्चेबन्दी नदी से दूर, ज्यादा सुविधाजनक जगह पर थी; नदी के पास सिर्फ सुरक्षा करनेवाली टुकड़ियाँ ही तैनात कर रखी थीं।

दूर, शत्रु के किनारे पर रोशनी देनेवाले रॉकेटों की चमकों के द्वारा रास्ता ढूँढ़ते हुए मैं झाड़ियों के बीच अन्धेरे में आगे बढ़ रहा था—रॉकेट जर्मनों की रक्षा की पूरी की पूरी मोर्चेबन्दी पर कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर चमक रहे थे। रात का सन्नाटा बीच-बीच में मशीनगनों की गोलियों की बौछारों से टूट रहा था : जर्मन रातों को लगातार—जैसा कि हमारा रेजीमेण्ट कमाण्डर कहता था, ''पक्के बन्दोबस्त के लिये''—कुछ-कुछ देर बाद हमारे किनारे और नदी पर गोलियाँ बरसाते रहते थे।

दूनेपर की तरफ निकलकर मैं खाई की ओर बढ़ा जहाँ सबसे पासवाली चौकी थी, और सुरक्षा प्लाटून के कमाण्डर को बुलवा भेजा।

जब वह हाँफते हुए मेरे पास पहुँचा, मैं उसके साथ नदी के किनारे-किनारे चल दिया। उसने तुरन्त मुझसे ''छोकरे'' के बारे में पूछा, उसने सोचा शायद मैं उसकी गिरफ्तारी के सिलसिले में आया हूँ। उसको जवाब न देकर मैंने दूसरी बातें शुरू कर दीं, पर खुद मेरा ध्यान बार-बार लड़के की ओर चला जाता था।

मैंने अन्धेरे में छिपे दूनेपर के आधे किलोमीटरवाले पाट को गौर से देखा और पता नहीं क्यों मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह नन्हा-सा बोंदरेव उस पार से आया है। उसे कौन लोग पहुँचा गये थे और कहाँ हैं वे? कहाँ है नाव? क्या सचमुच सुरक्षा चौकियों ने उसे नहीं देखा? या, हो सकता है, उसे किनारे से काफी दूर पानी में उतार दिया हो? इस दुबले-पतले, कमजोर लड़के को ठण्डे, पतझड़ के पानी में उतारने का फैसला कैसे किया होगा?...

हमारी डिवीजन दूनेपर को पार करने के लिये तैयारियाँ कर रही थी। निर्देश में, जो मुझे मिला था



और जिसे मैंने लगभग रट लिया था, हट्टे-कट्टे आदमियों के हिसाब से तैयार किये गये उस निर्देश में कहा गया था : "...अगर पानी का तापमान 15 सें. से कम हो, तो अच्छे से अच्छे तैराक तक के लिए तैरकर पार करना बेहद मुश्किल है, और चौड़ी नदियों को पार करना तो बिल्कुल असम्भव ही है।" यह तो 15 सें. से कम होने की बात है, और अगर तापमान लगभग 15 सें. है तो?

नहीं, नाव जरूर किनारे तक आई होगी, पर फिर उसे किसी ने देखा क्यों नहीं? लड़के को उतारकर वह चुपचाप चोरी-छिपे वापस क्यों चली गई? मैं अटकलों में खो-सा गया।

पर सुरक्षा चौकियाँ तो जाग रही थीं। नदी के बिल्कुल किनारे पर तैनात बस एक खन्दक में हमें एक ऊँघता हुआ जवान मिला। वह खड़े-खड़े ही खन्दक की दीवार से टिका हुआ सो रहा था, उसका लोहे का टोप आगे की ओर ढलक गया था। हम लोगों के आते ही उसने झपटकर टॉमीगन उठा ली—हम बस बाल-बाल बचे, उसने जागते ही हमें गोलियों से भून डाला होता। दबी आवाज में उसे और सेक्शन कमाण्डर को डाँटते हुए मैंने उसे एकदम ड्यूटी से हटाकर सजा देने का हुक्म दिया।

निरीक्षण खत्म करके हम लोग दाहिने पार्श्व की एक खन्दक में मुण्डेर के नीचे ताक में बैठ गये और जवानों के साथ सिगरेट पीने लगे। मशीनगनवाली इस बड़ी खन्दक में चार लोग थे।

"कामरेड सीनियर लेफ्टिनेण्ट, क्या हुआ इस 'लौंडे' का, सब जाँच कर ली?" कुछ भारी आवाज में एक ने पूछा; वह मशीनगन के पास खड़ा पहरा दे रहा था और सिगरेट नहीं पी रहा था।

"क्यों क्या बात है?" मैंने सावधान होकर पूछा।

"वैसे ही। सोचता हूँ कि यह बस यों ही नहीं है। ऐसी रात में तो कुत्ते को भी घर से नहीं निकालते हैं, और वह नदी में उतर गया। क्या जरूरत थी?... वह क्या नाव ढूँढ़ रहा था, उस पार जाना चाह रहा था? क्यों?... सन्देहजनक है यह लौण्डा, उसकी अच्छी तरह जाँच करनी चाहिए! उस पर सख्ती से दबाव डालो ताकि वह मुंह खोलकर बोल जाये।"

"हाँ, सन्देहजनक है," दूसरे ने कुछ कम विश्वास के साथ हामी भरी। "चुप है, और सुना है, खूँखार नज़रों से देखता है। और उसने इतने कम कपड़े क्यों पहन रखे थे?"

"लड़का नोवोस्योल्की का है," आराम से सिगरेट का गहरा कश खींचते हुए मैंने झूठ बोला। (नोवोस्योल्की हम लोगों के पीछे चार किलोमीटर दूर आधा जला हुआ बड़ा गाँव था)। "जर्मन उसकी माँ को पकड़ ले गये, अपने लिये कोई ठिकाना नहीं ढूँढ़ पा रहा है... ऐसे में नदी में ही डूबोगे।"

"तो यह बात है!.."

"हुड़क रहा है अभागा," मेरे सामने उकड़ूँ बैठकर सिगरेट पीते हुए प्रौढ़ सिपाही ने गहरी साँस लेकर हमदर्दी के साथ कहा। सिगरेट की रोशनी में उसका चौड़ा, काला, बढ़ी हुई दाढ़ीवाला चेहरा दिख रहा था। "उदासी से भयानक कुछ नहीं होता! और युर्लोव बस बुरी बात ही सोचता है, बस लोगों में बुराई ढूँढ़ता है। ऐसा नहीं करना चाहिए," उसने मशीनगन के पास खड़े जवान की ओर देखकर नरमी और समझदारी से कहा।



"मैं चौकन्ना रहता हूँ," भारी आवाज में युर्लोव ने हठ के साथ सबको सुनाकर कहा। "और तुम मुझे धिक्कारो मत, मुझे बदल नहीं पाओगे! मैं विश्वास करनेवालों और दयालुओं को सहन नहीं कर सकता। इसी विश्वास की वजह से सीमा से मास्को तक खून की नदियाँ बह रही हैं... बहुत हो चुका!.. और तुम गले तक दया और विश्वास में डूबे हुए हो, अपनी थोड़ी सी हमदर्दी जर्मनों को उधार दे दो, अपने दिलों पर पोत लेंगे!... आप, कामरेड सीनियर लेफ्टिनेण्ट, यह बताइये : उसके कपड़े कहां हैं?और वह पानी में आखिर कर क्या रहा था?बहुत अजीब बात है यह सब; मेरी समझ में तो दाल में कुछ काला है!..."

"देखा, पूछ कैसे रहा है, जैसे अपने किसी मातहत से," प्रौढ़ सिपाही ने हँसकर कहा। "तुम्हें क्या जरूरत है इसमें सिर खपाने की, जैसे तुम्हारे बिना सुलझा नहीं सकते। बेहतर हो कि तुम यह पूछो कि अफसर लोगों का वोद्का के बारे में क्या ख्याल है। इतनी ठण्ड है कि बस, और गर्माने के लिये कुछ नहीं है। उसे जल्दी देना शुरू कर देंगे क्या, पूछो। और लड़के से हमारे बिना भी निबट सकते हैं।..."

जवानों के साथ थोड़ी देर और बैठने के बाद मुझे ध्यान आया कि अब होलिन आने ही वाला होगा, इसलिये उनसे विदा लेकर मैं वापस चल पड़ा। मैंने मना कर दिया कि कोई मुझे पहुँचाने आये, पर जल्द ही इस बात पर पछताने लगा; अन्धेरे में मैं भटक गया : जैसा बाद में मालूम हुआ, दाहिना रास्ता पकड़ा, देर तक झाड़ियों के बीच घूमता रहा संतरियों की तेज आवाजों पर रुकते हुए। तीस मिनट बाद ही ठण्डी हवा में निरर्थक भटककर मैं डग-आउट पहुँच पाया।

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि लड़का सो नहीं रहा था।

वह बेंच पर पैर लटकाये सिर्फ कमीज पहने बैठा था। अँगीठी बहुत पहले ही बुझ गई थी, डग-आउट में काफी ठण्ड थी—मुंह से हल्की-हल्की भाप निकल रही थी।

"अभी तक आये नहीं?" आँखों में आँखें डाल लड़के न पूछा।

"नहीं। तुम सो जाओ, सो जाओ। आयेंगे तो मैं जगा दूँगा।"

"और वह पहुँच गया?"

"वह कौन?" मेरी समझ में नहीं आया।

"जवान। पैकेट के साथ।"

"पहुँच गया," मैंने कहा, हालाँकि मुझे मालूम नहीं था : हरकारे को भेजकर मैं उसके और पैकेट के बारे में भूल गया था।

लड़का सोच में डूबे हुए कुछ देर बत्ती की रोशनी देखता रहा, और अचानक, जैसाकि मुझे लगा, परेशानी से पूछ बैठा :

"आप यहीं थे, जब मैं सो रहा था?मैं नींद में बोलता तो नहीं हूँ?"

"नहीं, सुना तो नहीं। क्यों क्या हुआ?"

"वैसे ही। पहले तो नहीं बोलता था। और अब पता नहीं। कुछ बेचैनी-सी है मुझमें," उसने दुखी होकर स्वीकारकर लिया।

जल्द ही होलिन आ गया। हाथ में एक बड़ी सी जर्मन अटैची लिये सत्ताईस साल का, काले बालोंवाला, हट्टा-कट्टा, सुन्दर नौजवान डग-आउट में घुसा। दरवाजे से ही गीली अटैची मेरी ओर ढकेलकर वह लड़के की ओर लपका :

"इवान!"

होलिन को देखते ही लड़के में जैसे जान पड़ गई और वह मुस्कुरा दिया। मुस्कुरा दिया पहली बार, खुश होकर, बिल्कुल बच्चों की तरह।

गहरे दोस्तों का मिलन था यह, कोई शक नहीं कि इन क्षणों में वहाँ मेरी कोई जरूरत नहीं थी। वे दोनों गले लग गये, बड़ों की तरह; होलिन ने लड़के को कई बार चूमा, एक कदम पीछे हटकर उसके छोटे, दुबले कन्धों को दबाते हुए उत्साह भरी नजरों से उसे देखकर वह बोला :

"...कातासोनिच नाव के साथ दीकोव्का के पास तुम्हारा इंतजार कर रहा है, और तुम यहाँ हो..."

"दीकोव्का में इतने जर्मन हैं कि किनारे तक आना असम्भव है," दोषी की तरह हँसकर लड़के ने कहा। "मैं सोस्नोव्का से तैरकर आया हूँ। जानते हो, बीच में ही बिल्कुल थक गया और ऐंठन भी होने लगी—सोचा अब अंत..."

"अरे तुम क्या तैरकर आये हो?!" हैरानी से चिल्लाकर होलिन ने पूछा।

"लट्ठे पर। तुम गुस्सा मत हो, तैरना पड़ा। नावें ऊपर की तरफ थीं, चारों ओर पहरा था। और आपकी नाव को उस अन्धेरे में, सोचते हो, आसान है ढूँढ़ना?फौरन पकड़ा जाता!... जानते हो, थक गया, और लट्ठा घूम रहा था, छिटक-छिटक जाता था, टाँग भी अकड़ गई थी, सोच रहा था : खत्म! धारा!... ले आई, ले आई... पता नहीं कैसे तैर पाया।"

सोस्नोव्का एक बहुत छोटा-सा गाँव था बहाव के ऊपर की ओर, दुश्मनों की तरफवाले किनारे पर; लड़का पूरे तीन किलोमीटर तैरकर आया है। करिश्मा ही है कि इस बरसाती, शरद की रात में, ठण्डे पानी में ऐसा कमजोर और छोटा-सा लड़का तैरकर आ गया!....

होलिन ने पलटकर बहुत तेजी से मेरी ओर अपना भारी-भरकम हाथ बढ़ाया, फिर अटैची उठाकर आसानी से बेंच पर रख दी। तालों को खोलकर उसने मुझसे कहा :

''जाकर गाड़ी पास ले आओ, हम लोग पास नहीं आ पाये। और संतरी से कहो कि किसी को भी अंदर न आने दे और खुद भी न आये—हमें ताक-झाँक करनेवालों की जरूरत नहीं। समझे?..''

लेफ्टिनेण्ट-कर्नल ग्रिज्नोव के इस ''समझे'' का असर बस हमारी डिवीजन पर ही नहीं, बल्कि फौज के हेडक्वार्टर पर भी आ गया था : प्रश्नवाचक ''समझे?'' और आज्ञासूचक ''समझो!''

गाड़ी ढूँढ़कर और ड्राइवर को डग-आउट के पास तक पहुँचने का रास्ता बताकर जब मैं दस मिनट बाद वापस आया तो लड़के का हुलिया बिल्कुल बदल गया था।

उसने ठीक अपनी नाप की सिली छोटी-सी, बर्फ जैसे सफेद कॉलरवाली, ऊनी फौजी कमीज, जिस पर 'देशभक्तिपूर्ण युद्ध' आर्डर और नया 'वीरता के लिये' पादक लगे थे, गहरे-नीले रंग की पतलून और साफ-सुथरे, बढ़िया चमड़े के बूट पहन रखे थे। उसका हुलिया अब रंगरूट से मिलता-जुलता था—रेजीमेण्ट में ऐसे कई लड़के थे,—बस इसकी कमीज पर पट्टियाँ नहीं थीं; और हाँ, वे लड़के इसकी तुलना में काफी तंदुरुस्त और ताकतवर थे।

शान से स्टूल पर बैठा हुआ वह होलिन से बात कर रहा था। मेरे अन्दर आते ही वे लोग चुप हो गये और मैं यहाँ तक सोच बैठा कि होलिन ने मुझे गाड़ी के पास इसीलिये भेजा होगा कि इवान से अकेले में बात कर सके।

यद्यपि उसने असंतोष के भाव से मुझसे कहा : ''कहाँ गायब हो गये थे?चलो एक प्याला ले लो और बैठो।''

मेज पर नया अखबार बिछा था और उसका लाया खाने का सामान रखा था : चर्बी, सलामी, टिन के दो बन्द डिब्बे, बिस्कुट का पैकेट, दो बड़ी सी कागज की पुड़ियाँ और बनात के खोल में बन्द फ्लास्क। बेंच पर भेड़ की खाल का एक नया, बढ़िया लड़कों वाला कोट और अफसरों की जैसी टोपी पड़े थे।

होलिन ने ''सभ्य लोगों'' की तरह डबलरोटी के पतले-पतले टुकड़े काटे और फिर फ्लास्क से तीनों प्यालों में वोद्का ढाल दी : मेरे और अपने लिये आधा-आधा प्याला और लड़के के लिए बस थोड़ा सा।

''मिलने की खुशी में!'' प्याला ऊपर उठाकर खुश होकर, मनचलेपन से होलिन ने कहा।

''इसलिये कि मैं हमेशा वापस लौट सकूँ,'' विचारमग्न लड़के ने कहा।

होलिन ने जल्दी से उसकी ओर देखकर सुझाव दिया :

''इसलिये कि तुम सुवोरोव फौजी स्कूल में चले जाओ और अफसर बनो।''

''नहीं, यह फिर कभी!'' विरोध करते हुए लड़के ने कहा। ''अभी लड़ाई है, इसलिये मेरे हमेशा वापस आने के लिये!'' हठी आवाज में उसने दोहराया।

''चलो, ठीक है, झगड़ा नहीं करेंगे। तुम्हारे भविष्य के लिये। विजय के लिये!''

हम लोगों ने प्याले टकराये और पी गये। पीने पर उसका दम घुट गया, वह खाँसने लगा, उसकी आँखों में आँसू भर आये; वह छिपाकर जल्दी से उन्हें पोंछने लगा। होलिन की तरह उसने भी डबलरोटी का एक टुकड़ा उठा लिया और देर तक उसे सूँघता रहा, फिर धीरे-धीरे चबाकर उसे खा लिया।

होलिन फुरती से सैण्डविच बना-बनाकर लड़के के सामने रखता जा रहा था; पर उसने एक सैंडविच उठाया और धीरे-धीरे खाता रहा जैसे इच्छा न हो।

''तुम खाओ, और खाओ!'' खुद चाव से खाते हुए होलिन ने लड़के से कहा।

''ज्यादा खाने की आदत छूट गई है,'' गहरी साँस लेकर लड़के ने कहा। ''नहीं खा पा रहा हूँ।''

होलिन को वह ''तुम'' ही कह रहा था, देख भी बस उसे रहा था; मेरी ओर तो उसने लगभग बिल्कुल ध्यान ही नहीं दिया। वोद्का पीने के बाद मेरी और होलिन की खूब भूख खुल गई थी; हम लोग फुरती से अपने जबड़ों से काम लेने लगे। लड़के ने तो बस दो छोटे-छोटे सैंडविच खाकर हाथ-मुँह रूमाल से पोंछा और कहा :

''बस!''

फिर होलिन ने उसके सामने मेज पर रंग-बिरंगे कागजों में लिपटी हुई चाकलेटें बिखेर दीं। चाकलेटें देखकर भी लड़के का चेहरा खुशी से खिल नहीं उठा, जैसा कि उसकी उम्र के बच्चों में होता है। उसने एक चाकलेट उठाई और हड़बड़ी न करते हुए ऐसी बेपरवाही से उसे खोला मानो वह रोज ही ढेरों चाकलेटें खाता हो। फिर छोटा-सा टुकड़ा काटकर दूसरी चाकलेटें मेज के बीच में खिसका दीं और हमसे कहा :

''खाइये।''

''नहीं, भई,'' होलिन ने मना किया। ''वोद्का के बाद तो किसी चीज का कोई मजा नहीं है।''

''तो फिर चलो,'' लड़के ने उठकर मेज की ओर न देखते हुए अचानक कहा। ''लेफ्टिनेण्ट-कर्नल मेरा इंतजार कर रहे होंगे, यहाँ बैठने से क्या फायदा?... चलो!'' उसने आग्रहपूर्वक कहा।

''अभी चलते हैं,'' कुछ परेशान होकर होलिन ने कहा। उसक हाथ में फ्लास्क था, यह साफ था कि वह मेरे और अपने लिये और ढालना चाह रहा था; पर यह देखकर कि लड़का उठ गया है, उसने फ्लास्क वापस रख दिया। ''अभी चलते हैं,'' उसने उदास होकर दोहराया और उठ खड़ा हुआ।

इस बीच लड़के ने टोपी पहनकर देखी :

''कम्बख्त, ढीली है!''

''इससे छोटी टोपी नहीं थी। मैंने खुद चुनी है,'' सफाई सी देते हुए होलिन ने समझाया। ''हमें तो बस पहुँचना है, फिर कुछ सोच निकालेंगे...''

उसने खेद के भाव से खाने के सामान से लदी मेज की ओर देखा; फ्लास्क उठाकर हिलाया और दुखी होकर मुझ पर नज़र डाली, फिर गहरी साँस लेकर कहा :

''कितना सामान बेकर जायेगा, हाँ!''

''उनके लिये छोड़ दो!'' लड़के ने नाराजगी और उपेक्षा से कहा। ''तुम भूखे हो क्या?''

''अरे नहीं!... बस फ्लास्क मेरी लिस्ट में शामिल है,'' होलिन ने हँसी में कहा। ''और चाकलेटें

उसके क्या काम की...''

''लालची मत बनो!''

''ऐसा ही करना पड़ेगा... ओह, कहाँ-कहाँ हमारा सामान बेकार नहीं गया...'' होलिन ने फिर गहरी साँस लेकर मुझसे कहा : ''डग-आउट के संतरी को हटा दो। और ध्यान रखो कि कोई हमें देखे नहीं।''

ढीली-ढाली फौजी बरसाती ओढ़कर मैं लड़के के पास आया। लड़के के फर कोट के बटन बन्द करते हुए होलिन ने शेखी मारते हुए कहा :

''गाड़ी में सूखी घास है—पूरा गद्दाहै! मैंने कम्बल और तकिये ले लिये थे। अभी लेट जायेंगे—ऐन हेडक्वार्टर तक।''

''अच्छा, वान्यूशा*, विदा!'' मैंने लड़के की ओर हाथ बढ़ाया।

''विदा नहीं, फिर मिलेंगे,'' सख्ती से लड़के ने टोका और छोटा-सा, दुबला-पतला हाथ बढ़ाते हुए भौंहें चढ़ाकर मेरी ओर देखा।

गुप्तचर विभाग की, तिरपाल से ढकी हुई 'डॉज' मोटरगाड़ी डग-आउट से दस कदम की दूरी पर खड़ी थी; मैं उसे फौरन नहीं देख पाया।

''रोदिओनोव!'' मैंने धीमे से संतरी को आवाज दी।

''मैं यहाँ हूँ, कामरेड सीनियर लेफ्टिनेण्ट!'' बिल्कुल पास में, मेरी पीठ के पीछे भारी, फटी हुई आवाज सुनाई दी।

''हेडक्वार्टर के डग-आउट में जाओ। मैं जल्द ही तुम्हें बुला लूँगा।''

''जी!'' जवान अन्धेरे में गायब हो गया।

मैंने पूरा चक्कर लगाया—कहीं कोई नहीं था। 'डाज' का ड्राइवर फौजी बरसाती ओढ़े स्टीयरिंग व्हील पर झुका हुआ ऊँघ सा रहाथा।

मैंने डग-आउट के पास आकर दरवाजा टटोला और उसे खोलकर कहा :

''चलिये!''

हाथ में अटैची लिये होलिन और लड़का गाड़ी की ओर बढ़े, तिरपाल फड़फड़ा उठा, धीमी आवाज में थोड़ी-सी बातचीत सुनाई दी। होलिन ने ड्राइवर को जगाया, इंजन चालू हुआ और 'डाज' चल दी।

3

सार्जेंट-मेजर कातासोनोव—डिवीजन की गुप्तचर कम्पनी के प्लाटून का कमाण्डर—तीन दिन बाद मेरे पास आया।

उसकी उम्र तीस साल से ज्यादा थी; वह कद में ऊँचा नहीं, दुबले-पतले शरीर का था। उसका छोटा मुँह और छोटी सी, चपटी नाक थी। आँखें नीली सी और सजग थीं। आकर्षक और विनम्र चेहरेवाला कातासोनोव खरगोश जैसा लग रहा था। वह नम्र और शान्त स्वभाव का था, ऊपरी तौर पर उसमें कोई खास बात नहीं थी कि ध्यान दिया जाये। वह तुतलाकर बोलता था और शायद इसीलिये वह शर्मीला था

और लोगों के बीच चुप रहता था। अगर मालूम न हो तो सोच पाना मुश्किल ही है कि यह हमारी फौज के सबसे अच्छे ''जबान''* पकड़नेवालों में से एक था। डिवीजन में सब उसे प्यार से कातासोनिच कहते थे।

कातासोनोव को देखकर मुझे फिर नन्हे बोंदरेव की याद आ गई–इन दिनों मैंने उसके बारे में अनेक बार सोचा था। मैंने मौका मिलते ही कातासोनोव से लड़के के बारे में पूछने को तय किया–उसे मालूम होना चाहिए। यही तो था कातासोनोव, जो उस रात नाव के साथ दीकोव्का के पास इंतजार कर रहा था, जहाँ ''इतने जर्मन हैं कि किनारे तक आना असम्भव है।''

हेडक्वार्टर के डग-आउट में घुसते हुए उसने लाल किनारीवाली बनाती साइड-कैप तक हाथ उठाकर धीरे से सलाम किया और दरवाजे के पास ही खड़ा हो गया; उसने सामान का थैला भी नहीं उतारा और चुपचाप इंतजार करता रहा, कब मैं क्लर्कों को डाँटना बन्द करूँ।

वे लोग काम पूरा नहीं कर पाये थे, और मैं चिढ़ा हुआ गुस्से में था : अभी-अभी फोन पर मास्लोव का उकता देनेवाला उपदेश सुना था। वह लगभग रोज सुबह मुझे फोन करता था और हर बार वही एक बात : ठीक समय पर, और कभी-कभी तो समय से पहले लगातार रिपोर्टों, सूची पत्रों, फार्मों और खाकों को भेजने की माँग। यहाँ तक कि मुझे शक भी होने लगा था कि रिपोर्टों की कई किस्में खुद उसकी सोची हुई थीं : वह लाल फीताशाही का बड़ा शौकीन था।

उसकी बात सुनकर लगता था कि अगर मैं समय पर ये सारे कागज रेजीमेण्ट के हेडक्वार्टर में पहुँचाता रहूँगा, तो लड़ाई कामयाबी के साथ कुछ ही दिनों में खत्म हो जायेगी। मतलब सब कुछ मुझ पर निर्भर है। मास्लोव की माँग थी कि मैं ''व्यक्तिगत रूप से'' रिपोर्टों में ''आत्मा उड़ेला करूँ''। मैं जी लगाकर काम करता था और अपने हिसाब से तो ''आत्मा उड़ेला करता था'', पर बटालियन एडजुटेण्ट और अनुभवी क्लर्क नहीं थे, इसलिये हमें अक्सर देर हो जाती थी, और लगभग हमेशा पता चलता था कि हमने कहीं न कहीं गलती की है। और मैंने न जाने कितनी बार सोचा कि लड़ना रिपोर्टें लिखने से कहीं ज्यादा आसान काम है, और बेकरारी से इंतजार कर रहा था कब भेजेंगे बटालियन के असली कमाण्डर को–वही सहे अपनी मुसीबत!

मैं क्लर्कों को डाँट-फटकार रहा था, और कातासोनोव टोपी हाथ में दबाये चुपचाप दरवाजे पर खड़ा हुआ इंतजार कर रहा था।

''तुम क्या मेरे पास आये हो?'' आखिर मैंने उसकी ओर पलटकर पूछा, हालाँकि पूछना कोई जरूरी नहीं था : मास्लोव ने मुझे आगाह कर दिया था कि कातासोनोव आयेगा; उसको प्रेक्षण चौकी जाने देने और उसकी मदद करने का हुक्म था।

''आपके पास आया हूँ,'' शर्मीली मुस्कराहट के साथ कातासोनोव ने कहा। ''उस किनारे को देखने।''

''क्या है फिर... देखो,'' महत्व जताने के लिये आवाज धीमी करके एहसान करते हुए मैंने अनुमति दी और अरदली को आज्ञा दी कि कातासोनोव को बटालियन की प्रेक्षण चौकी तक पहुँचा आये।

दो घण्टे बाद रिपोर्ट रेजीमेण्ट के हेडक्वार्टर में भेजकर मैं खाना चखने के लिये बटालियन के किचन

में गया, फिर झाड़ियों के बीच में से होकर प्रेक्षण चौकी में चला गया।

कातासोनोव स्टीरियोस्कोपिक दूरबीन से उस किनारे को देख रहा था। मैं भी देखने लगा, हालाँकि मैं हर चीज से परिचित था।

धुँधले और हवा से कटे-फटे द्नेपर के चौड़े पाट के पीछे—दुश्मन की तरफवाला किनारा। पानी के किनारे के साथ-साथ रेत की पतली-सी पट्टी, उसके ऊपर टीली, कम से कम एक मीटर ऊँचा, और आगे ढलवाँ किनारा जिस पर कहीं न कहीं झाड़ियां उगी थीं। रात को यह दुश्मन के गश्तों से भर जाता था। और आगे कोई आठ मीटर की ऊँचाई की लगभग खड़ी ढलान। उसके सिरे पर दुश्मन की अगली मोर्चेबन्दी की खाइयाँ। इस समय उनमें सिर्फ निगरानी करनेवालों का पहरा था, बाकी लोग शेल्टरों में छिपे आराम कर रहे थे। रात को जर्मन लोग खन्दकों में चले जायेंगे और वहाँ से अँधेरे में गोलियाँ चलायेंगे और सुबह तक रोशनी देने वाले राकेट छोड़ते रहेंगे।

उस पार पानी के पास रेतीली पट्टी पर पाँच लाशें रखी थीं। उनमें से तीन विभिन्न मुद्राओं में अलग-अलग पड़ी थीं, कोई शक नहीं कि वे सड़ने लगी थीं। मैं उन्हें दो हफ्तों से देखता रहा था। पर अब दो नई लाशें पास ही रख दी गई थीं, चट्टान की ओर पीठ करके ठीक प्रेक्षण चौकी के सामने जहाँ इस समय मैं था। दोनों ही लाशें लगभग बिल्कुल नंगी थीं और उनके पाँवों में बूट भी नहीं थे। उनमें से एक ने नाविकों जैसी धारियोंवाली कमीज पहन रखी थी जो स्टीरियोस्कोपिक दूरबीन में साफ दिखाई दे रही थी।

"ल्याखोव और मोरोज," दूरबीन से अलग हुए बिना कातासोनोव ने कहा।

मालूम हुआ कि ये उसके दोस्त थे, डिवीजन की गुप्तचर कम्पनी के सार्जेन्ट। देखते हुए ही उसने धीमी, तोतली आवाज में बताया कि यह सब कैसे हुआ।

...चार दिन पहले गुप्तचरों की एक टोली—पाँच आदमी—"जबान" पकड़ने के लिये उस पार गई थी। उन्होंने बिना शोर के "जबान" पकड़ ली, पर लौटते समय जर्मनों ने उन्हें देख लिया। तब पकड़े गये "जबान" के साथ तीन नाव की ओर बढ़ने लगे और कामयाब भी रहे (हालाँकि उनमें से एक रास्ते में सुरंग फटने के कारण मारा गया, और "जबान" भी मशीनगन की गोलियों की बौछार से नाव में घायल हो गया था)। ये दो —ल्याखोव (धारियोंवाली कमीज पहने) और मोरोज—अपने दोस्तों की आड़ करते हुए लेटकर गोलियाँ चलाने लगे।

वे लोग दुश्मन की मोर्चेबन्दी के बीच में मारे गये थे : जर्मन उनके कपड़े उतारकर उन्हें नदी के पास घसीट लाये और उन्हें ऐसी जगह बैठा दिया ताकि वे हमारी ओर से दिखाई दे सकें, नसीहत के तौर पर...

"इन्हें ले आना चाहिए..." अपनी छोटी-सी कहानी खत्म कर गहरी साँस लेते हुए कातासोनोव ने कहा।

जब हम लोग शेल्टर से निकले, मैंने छोटे बोंदरेव के बारे में पूछा।

"वान्यूशा?.." कातासोनोव ने मेरी ओर देखा, उसका चेहरा कोमल, हार्दिक मुस्कान से चमक उठा। "शानदार लड़का है! हाँ, मनमौजी है, मुसीबत है उसके साथ! कल तो पूरा युद्ध हुआ था।"

"क्यों क्या हुआ?"

"लड़ाई उसके लिये क्या उचित काम है?... उसे सुवोरोव फौजी स्कूल में भेज रहे हैं। अफसरों का हुक्म है। और वह जिद पकड़ गया—किसी भी तरह राजी नहीं कर पा रहे उसे। बस एक बात दोहराता है : लड़ाई के बाद। और अभी, कहता है, मैं गुप्तचर ही बना रहूँगा।"

"और अगर अफसरों का हुक्म है—फिर तो लड़ाई नहीं कर पायेगा।"

"अरे उसे रोका जा सकता है भला! घृणा से उसका दिल जला जा रहा है।... अगर उसे टोह लेने नहीं भेजेंगे तो खुद चला जायेगा। एक बार जा भी चुका है..." साँस खींचकर कातासोनोव ने घड़ी की ओर देखा तो चौकन्ना होकर बात बदली : "बिल्कुल बातों में ही अटक गया। तोपचियों की प्रेक्षण चौकी तक इस रास्ते से जा सकता हूँ?" हाथ से रास्ता दिखाते हुए उसने पूछा।

पलक झपकते ही वह डालियों को इधर-उधर हटाते हुए, बिना शोर किये झाड़ियों के बीच आगे बढ़ गया।

* * *

हमारे और तीसरे बटालियनों की प्रेक्षण चौकियों और डिवीजन के तोपखाने की प्रेक्षण चौकी से भी कातासोनोव लगातार दो दिन से जर्मन किनारे को देख रहा था कॉपी में नोट करते हुए और खाके खींचते हुए। मुझे बताया गया कि उसने पूरी रात प्रेक्षण चौकी में स्टीरियोस्कोपिक दूरबीन के पास काट दी, वह सुबह, दोपहर, शाम हर वक्त वहीं रहा; अपने आप ही मेरे मन में विचार उठा : वह सोता कब है?

तीसरे दिन सुबह होलिन आया। उसने हेड क्वार्टर के डग-आउट में घुसकर बड़े तपाक से सबको सलाम किया। "ये लो और मत कहना कि कम है!" कहकर उसने मेरा हाथ इस तरह दबाया कि मैं दर्द से तिलमिला उठा।

"तुम्हारी मुझे जरूरत पड़ेगी!" उसने मुझे आगाह किया, फिर रिसीवर उठाकर उसने तीसरे बटालियन का नम्बर मिलाया और उसके कमाण्डर कैप्टन र्याबूत्सेव से बात करने लगा।

"...तुम्हारे पास कातासोनोव आयेगा—मदद कर देना उसकी!... वह खुद समझा देगा... और उसे गर्म-गर्म खाना भी खिला देना!... आगे सुनो : अगर तोपची या और कोई मेरे बारे में पूछे तो कहना कि मैं तुम्हारे हेडक्वार्टर में दोपहर एक बजे के बाद आऊँगा," होलिन ने आदेश के स्वर में कहा। "और तुम्हारी भी मुझे जरूरत पड़ेगी! मोर्चेबन्दी का खाका तैयार करना और अपनी जगह रहना..."

वह र्याबूत्सेव से "तुम" कहकर बात कर रहा था।

हालाँकि र्याबूत्सेव उससे दस साल बड़ा रहा होगा। र्याबूत्सेव से भी और मुझसे भी वह मातहतों की तरह बात करता था, हालाँकि वह हम लोगों का अफसर नहीं था। उसका ढंग ही ऐसा था; वह डिवीजन के हेडक्वार्टर के अफसरों से ठीक ऐसे ही बात करता था और हमारी रेजीमेण्ट के कमाण्डर से भी। यह सही है कि वह हम सभी लोगों के लिए ऊपर के हेडक्वार्टर का प्रतिनिधि था, पर यही तो सब कुछ नहीं था। सभी गुप्तचरों की तरह उसे विश्वास था कि फ़ौज में लड़ाई के सभी कामों में गुप्तचर का काम सबसे मुख्य है और इसलिए सभी को उसकी मदद करनी चाहिए।

रिसीवर वापस रखकर मुझसे बिना पूछे कि क्या काम करनेवाला हूँ या मुझे हेडक्वार्टर में कोई काम

तो नहीं है, उसने आदेश के स्वर में कहाः

"मोर्चेबन्दी का ख़ाका ले लो और चलो तुम्हारी फ़ौज देखते हैं..."

उसका यह आदेश देनेवाला ढंग मुझे पसन्द नहीं था, पर गुप्तचरों से उसके बारे में, उसकी निडरता और हाजिरदिमागी के बारे में मैं बहुत सुन चुका था, इसलिये उसको यह सब माफ करते हुए मैं चुप रहा। कोई ज़रूरी काम मेरे पास नहीं था, फिर भी जान बूझकर मैंने कहा कि हेडक्वार्टर में अभी थोड़ी देर मुझे रुकना पड़ेगा। वह यह कहकर कि गाड़ी के पास मेरा इन्तजार करेगा, डग-आउट से चला गया।

लगभग पन्द्रह मिनट बाद रेजीमेण्ट के हेडक्वार्टर के आदेशोंवाली रजिस्टर को देखकर मैं बाहर निकला। गुप्तचर विभाग की ट्रेलरवाली 'डॉज', जिस पर तिरपाल तना हुआ था, कुछ दूर पर फर के पेड़ों के नीचे खड़ी थी। ड्राइवर कन्धे पर टॉमीगन रखे एक ओर टहल रहा था। होलिन स्टीयरिंग पर नक्शा खोले बैठा था, उसके पास ही कातासोनोव मोर्चेबन्दी का खाका हाथ में लिये बैठा था। वे लोग बात कर



रहे थे; जैसे ही मैं पास पहुँचा, उन लोगों ने चुप होकर मेरी ओर सिर घुमाया। जल्दी से गाड़ी से कूदकर हमेशा की तरह शर्मीली मुस्कुराहट के साथ कातासोनोव ने मुझे सलाम किया।

"ठीक है, चलो!" नक्शा और खाका लपेटते हुए होलिन ने उससे कहा और वह भी गाड़ी से उतर आया। "सब कुछ अच्छी तरह देख लेना और आराम करना! मैं दो-तीन घण्टे बाद आऊँगा..."

एक पगडण्डी पर मैं होलिन को अगली पंक्तियों की ओर ले जा रहा था। 'डाज' तीसरे बटालियन की ओर जा रही थी। होलिन का मिजाज कुछ अच्छा था, वह खुशी-खुशी सीटी बजाते हुए कदम बढ़ा रहा था। दिन शान्त और ठण्डा था; इतना शान्त कि लगता था कि लड़ाई को भुलाया जा सकता है। पर यह रही, सामने ही : जंगल के किनारे-किनारे अभी-अभी खुदी हुई खन्दकें और बायीं ओर खन्दकों को जोड़नेवाली आदमी कद के बराबर की खाई में नीचे उतरने का रास्ता। ऊपर से अच्छी तरह घास और झाड़ियों से ढकी हुई वह नदी के किनारे तक चली गई थी। उसकी लम्बाई 100 मीटर से ज्यादा थी।

बटालियन में जवानों की कमी के बावजूद रातों-रात इतनी लम्बी खाई खोद डालना (और वह भी सिर्फ एक कम्पनी की ताकत से!) कोई आसान काम नहीं था। मैंने इसके बारे में होलिन को बताया यह सोचकर कि वह हमारे काम की बड़ाई करेगा, पर इसकी ओर कम ध्यान देकर वह इस बात में ज्यादा दिलचस्पी ले रहा था कि बटालियन की मुख्य और सहायक प्रेक्षण चौकियाँ कहाँ-कहाँ तैनात थीं। मैंने दिखा दीं।

''कैसी शान्ति है!'' कुछ आश्चर्य से उसने कहा। वह जंगल के किनारे झाड़ियों के पीछे से दूरबीन से द्नेपर और उसके किनारों को देखने लगा—यहाँ से, छोटे-से टीले पर से सब कुछ जैसे हथेली पर रखा दिखाई देता था। साफ था कि मेरी ''फौजों'' में उसकी दिलचस्पी कम थी।

वह देख रहा था और मैं उसके पीछे बेकार खड़ा था; तभी याद आने पर मैंने पूछा :

''जो लड़का मेरे पास था, आखिर वह था कौन? कहाँ का था?''

''लड़का?'' अनमनेमन से होलिन ने मुझसे पूछा, वह शायद किसी और चीज़ के बारे में सोच रहा था। ''हाँ, इवान!... अगर ज्यादा जानोगे तो जल्दी बूढ़े हो जाओगे!'' उसने मेरी बात हँसी में उड़ा दी और प्रस्ताव किया : ''अच्छा, चलो तुम्हारी 'मीट्रो' देखते हैं!''

खाई में अन्धेरा था। कहीं-कहीं पर रोशनी के लिये दरारें छोड़ दी गई थीं, पर अब वे डालियों से ढकी थीं। हम लोग अन्धेरे में थोड़ा झुककर चलते हुए आगे बढ़ रहे थे; लग रहा था जैसे यह सीलन भरी, अन्धेरी सुरंग कभी खत्म ही नहीं होगी। पर तभी सामने रोशनी दिखाई दी, और थोड़ा-सा चलकर हम द्नेपर से पन्द्रह मीटर दूर सुरक्षा चौकियों की खन्दक में पहुँच गये।

सेक्शन कमाण्डर नौजवान सार्जेंट चौड़ी छाती और भारी-भरकम डील-डौलवाले होलिन की ओर कनखियों से देखते हुए मुझे रिपोर्ट देने लगा।

नदी का तट रेतीला था, पर खन्दक में टखनों तक कीचड़ थी—शायद इसलिये कि खन्दक की तली नदी में पानी की सतह से नीची रही होगी।

मुझे मालूम था कि होलिन को अच्छा मिजाज होने पर बातें करना और मजाक करना पसन्द था।

ज

ैसे अब ही लो—'बेलोमोर' सिगरेट का पैकेट निकालकर उसने मुझे और जवानों को सिगरेटें दीं और खुद भी सिगरेट जलाते हुए उसने कहा :

''आपके यहाँ की ज़िन्दगी क्या खूब है! लड़ाई चल रही है पर लगता है जैसे वह है ही नहीं। शाबाश!...''

''सेहतगाह!'' उदासी से उसका समर्थन करते हुए मशीनगनवाले चुपाखिन ने कहा। वह ऊँचे कद का, झुके हुए कन्धोंवाला, दुबला-पतला जवान था; उसने रुई की जाकेट और पतलून पहन रखी थी। सिर पर से लोहे का टोप उतारकर उसने फावड़े के हत्थे पर टाँग दिया और खन्दक की मेण्डेर पर चढ़ गया। देखते ही देखते उस पार से गोलियाँ आने लगीं, सिर के ऊपर उनकी तेज सीटियाँ सुनाई पड़ने लगीं।

''स्नाइपर?'' होलिन ने पूछा।

"सेहतगाह," उदास आवाज में चुपाखिन ने दोहराया। "प्रिय जनों की देखभाल में मिट्टी-स्नान!... "

...उसी अन्धेरी खाई से होकर हम लोग प्रेक्षण चौकी में वापस आये। जर्मन इतने चौकन्नेपन से हमारी अगली पंक्तियों को देखते रहते थे यह होलिन को पसन्द नहीं आया। हालाँकि यह स्वाभाविक ही था कि दुश्मन चौकन्ना था और लगातार चौकसी कर रहा था, होलिन अचानक उदास होकर चुप हो गया।

वह प्रेक्षण चौकी पर निगरानी करनेवालों से कुछ प्रश्न पूछते हुए दस मिनट तक दाहिने किनारे को स्टीरियोस्कोपिक दूरबीन से लगातार देखता रहा। उसने उनके रजिस्टर को देखा और बिगड़ने लगा कि वे लोग कुछ नहीं जानते हैं, कि जो कुछ उन्होंने दर्ज किया है वह बहुत थोड़ा है और उससे दुश्मन के कार्यक्रम और व्यवहार के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता। मैं उससे सहमत नहीं था पर चुप रहा।

"तुम्हें मालूम है वहाँ धारीदार कमीज पहने कौन है?" उस किनारे पर मारे गये गुप्तचरों के बारे में उसने मुझसे पूछा।

"मालूम है।"

"फिर क्या बात है, उन्हें ला नहीं सकते?" उसने नाराजी और नफरत से पूछा। "बस एक घण्टे का काम है! ऊपर से आदेश के इन्तजार में हो क्या?"

हम लोग शेल्टर से निकले तो मैंने पूछा :

"आप कातासोनोव के साथ क्या देख-खोज रहे हैं?टोह लेने जाने वाले हैं क्या?"

"तफसीलें अखबारों में पढ़ लेना!" मेरी ओर न देखते हुए होलिन ने नाराजगी से कहा और जंगल से होकर तीसरे बटालियन की ओर चल दिया।

मैं बिना सोचे-विचारे उसके पीछे चल दिया।

"मुझे तुम्हारी और ज़रूरत नहीं है!" बिना घूमे अचानक उसने कहा।

मैंने रुककर परेशानी से उसे जाते हुए देखा और पलटकर हेडक्वार्टर की ओर चल दिया।

अरे रुको तो!.. होलिन की बेतकल्लुफी से मैं चिढ़ गया। बुरा मानकर मैं मन ही मन गालियाँ देने लगा। किनारे से गुजरते एक सिपाही ने सलाम करके घूमकर मुझे आश्चर्य से देखा।

हेडक्वार्टर में क्लर्क ने बताया :

"मेजर ने दो बार फोन किया था। आपको आकर फोन करने को कहा था..."

मैंने रेजीमेण्ट के कमाण्डर को फोन किया :

"क्या हाल है तुम्हारे यहाँ?" सबसे पहले उसने शान्त और धीमी आवाज में पूछा।

"सब ठीक है, कामरेड मेजर।"

"तुम्हारे पास होलिन आयेगा... जो कुछ वह कहे कर देना, उसकी पूरी मदद करना..."

भाड़ में जाये यह होलिन!..

इसी बीच मेजर ने थोड़ी देर चुप रहकर आगे कहा :

"यह 'वोल्गा' का आदेश है। मुझे नम्बर एक सौ एक ने फोन किया था।"

'वोल्गा'—फौज का हेडक्वार्टर था, नम्बर एक सौ एक—हमारी डिवीजन का कमाण्डर कर्नल वोरोनोव था। "तो क्या हुआ," मैंने सोचा। "होलिन के पीछे भागा मैं नहीं फिरूँगा! जो कहेगा—कर दूँगा! पर उसके पीछे-पीछे नहीं फिरूँगा!"

होलिन के बारे में न सोचने की कोशिश करते हुए मैं दूसरे कामों में लग गया।

दोपहर के खाने के बाद मैं बटालियन के चिकित्सा-चौकी गया। वह दाहिने पार्श्व के दो बड़े शेल्टरों में, तीसरे बटालियन के पास था। वैसे तो यह व्यवस्था सुविधाजनक नहीं थी, पर बात यह है कि डग-आउट और शेल्टर, जहाँ हम लोग बसे हुए थे जर्मनों के बनाये हुए थे, और सारा साज-सामान उन्हीं का लगाया हुआ था। साफ है कि उन्होंने हमारे बारे में शायद ही सोचा होगा।

दस दिन पहले बटालियन में नियुक्त हुई सुडौल, सुन्दर, सुनहरे बालोंवाली और गहरी नीली आँखों वाली, बीस साल की नई चिकित्सा सहायक ने परेशानी से शानदार बालों को बाँधे हुए जाली के रूमाल पर हाथ रखा और मुझे रिपोर्ट देने की कोशिश करने लगी। यह रिपोर्ट नहीं बल्कि डरी हुई, अस्पष्ट बड़बड़ाहट थी; पर मैंने उससे कुछ कहा नहीं। इससे पहले चिकित्सा सहायक एक बूढ़ा और दमे का मरीज सीनियर लेफ्टिनेण्ट वोस्त्रिकोव था। वह दो हफ्ते पूर्व लड़ाई के मैदान में मारा गया था। वह अनुभवी, बहादुर और फुरतीला था। और यह?... फिलहाल मैं इससे नाराज था।

फौजी पोशाक—कमर पर चौड़ी बेल्ट से कसी हुई, प्रेस की हुई फौजी कमीज, मजबूत जाँघों पर फिट स्कर्ट और सुडौल टाँगों पर क्रोम चमड़े के बूट—सब कुछ उसके ऊपर खूब फबता था : चिकित्सा सहायक इतनी सुन्दर थी कि मैं उसे न देखने की कोशिश करता था।

इसके अलावा वह मेरे ही शहर की थी, वह भी मास्कोवाली थी। अगर लड़ाई न हो रही होती तो इससे मिलकर मैं इससे शायद प्यार करने लगता, और अगर वह भी मुझसे प्यार करती तो मैं बहुत खुशनसीब होता, शामों को उससे मिलने भागता, गोर्की पार्क में उसके साथ नाचता, कहीं नेस्कूचनी बाग में उसे चूमता... पर लड़ाई हो रही थी। मैं बटालियन के कमाण्डर की ड्यूटी पूरी कर रहा था और वह मेरे लिये सिर्फ और सिर्फ चिकित्सा सहायक थी—वह भी अपना काम मुस्तैदी से न करनेवाली।

मैंने उसे रूखेपन से बताया कि कम्पनियों में फिर से जाँच होगी कि जूँएं तो नहीं हैं। कपड़े भी अभी तक ठीक ढंग से उबाले नहीं जाते हैं और सिपाहियों के नहाने-धोने का इन्तजाम भी अभी तक ढंग से नहीं किया जाता है। मैंने इसी तरह की और भी बहुत-सी शिकायतें कीं और आदेश दिया कि वह इस बात को न भूले कि वह कमाण्डर है और सारे काम अपने जिम्मे न लेकर कम्पनियों के मेडिकल अरदलियों से काम करवाये।

वह मेरे सामने "सावधान" की मुद्रा में सिर झुकाये खड़ी थी। रुक-रुककर, धीमी आवाज में वह लगातार दोहरा रही थी : "जी, हाँ... जी, हाँ... जी, हाँ...",—मुझे आश्वासन दे रही थी कि वह कोशिश करेगी और जल्द ही "सब कुछ ठीक हो जायेगा"।

वह निरुत्साहित लग रही थी, मुझे उस पर तरस आ गया। पर मैं यह उस पर जाहिर नहीं होने देना चाहता था—उस पर तरस खाने का मुझे कोई अधिकार नहीं था। जब लड़ाइयाँ नहीं हो रही थीं उसे सहा जा सकता था। पर अभी द्नेपर पार करनी थी, और होनेवाला आक्रमण भी आसान नहीं

होगा—बटालियन में दसियों घायल होंगे, उनकी जान बचाने की जिम्मेदारी बहुत बड़ी हद तक चिकित्सा-सेवा के लेफ्टिनेण्ट के पदवाली इस लड़की पर होगी।

कुछ निराश भाव से मैं डग-आउट से बाहर निकला, चिकित्सा-सहायक मेरे पीछे।

दाहिनी ओर, हमसे लगभग सौ कदम की दूरी पर छोटा-सा टीला था, जिसमें डिवीजन के तोपखाने की प्रेक्षण चौकी थी। टीले के पृष्ठभाग की ओर अफ़सरों की टोली खड़ी थी : होलिन, र्‍याबृत्सेव, तोपखाने की रेजीमेण्टकी बैटरियों के परिचित कमाण्डर, तीसरे बटालियन की मार्टर कम्पनी का कमाण्डर और दो अपरिचित अफसर। होलिन व अन्य दो लोगों के हाथों में नक्शे या खाके थे। मैं समझ गया कि टोह लेने की तैयारी हो रही थी; और सभी बातों को ख्याल में रखते हुए यह साफ था कि टोह लेना तीसरे बटालियन के क्षेत्र से किया जायेगा।

हम लोगों की उपस्थिति महसूस करके अफसर लोग पलटकर हमारी ओर देखने लगे। र्‍याबृत्सेव, तोपची और मॉर्टर कम्पनी के कमाण्डर ने मुझे सलाम करते हुए हाथ हिलाये; मैंने भी उन्हें जवाब में सलाम किया। मैं इन्तज़ार कर रहा था कि होलिन अभी मुझे पुकारेगा—मुझे "उसकी पूरी मदद जो करनी है", पर वह मेरी ओर बगल किये खड़ा था और अफसरों को नक्शे पर कुछ दिखा रहा था।

मैंने चिकित्सा-सहायक की ओर मुड़कर कहा :

"तुम्हें दो दिन का समय दे रहा हूँ। चिकित्सा सेवा में सब कुछ ठीक-ठाक करके मुझे खबर करो।"

वह होठों ही होठों में अस्पष्ट रूप से कुछ बड़बड़ाई। मैंने रुखाई से उसे सलाम किया और यह तय करके कि पहला मौका मिलते ही उसे यहाँ से हटाने का दृढ़तापूर्वक अनुरोध करूँगा, मैं वहाँ से चला आया। अच्छा हो कि दूसरे चिकित्सा सहायक को भेज दें और वह भी किसी पुरुष को।

शाम तक मैं कम्पनियों के बीच रहा : डग-आउटों और शेल्टरों को देख लिया, हथियारों की जाँच की, जवानों से बातें कीं जो मेडिकल बटालिनयन से वापस आये थे, फिर डोमिनो खेलने में लग गया।

धुँधलका होने पर ही मैं अपने डग-आउट में वापस आया तो वहाँ होलिन को देखा। वह फौजी कमीज और पतलून पहने हाथ-पाँव फैलाये मेरे बिस्तर पर सो रहा था। मेज पर एक परचा पड़ा था—"मुझे साढ़े छः बजे जगा देना। होलिन।"

मैं बिल्कुल ठीक समय पर पहुँचा और उसे जगा दिया। आँखें खोलकर वह बेंच पर बैठ गया, जम्हाई लेते हुए उसने अँगड़ाई ली और कहा :

"नौजवान, पसन्द तो तुम्हारी बुरी नहीं है।"

"क्या?" समझ में न आने पर मैंने पूछा।

"लड़कियों के अच्छे पारखी हो तुम। चिकित्सा सहायक के साथ जोड़ी अच्छी जमेगी।" कोने में जाकर जहाँ वाश-बेसिन लगा था, वह हाथ-मुँह धोने लगा। "बस दिन में उसके पास मत जाना," उसने सलाह दी, "प्रतिष्ठा खराब होगी।"

"भाड़ में जाओ तुम!" मैंने गुस्से से चिल्लाकर कहा।

"गँवार हो तुम, गाल्त्सेव," बेपरवाही से होलिन ने कहा। वह मुँह धो रहा था। जोर से छींटे उड़ाते हुए उसने कहा : "दोस्ती का मजाक भी नहीं समझते हो... और तौलिया तुम्हारा गन्दा है, वह धो भी

सकती थी। अनुशासन नहीं है!"

"गन्दे" तौलिये से मुँछ पोंछकर उसने पूछा :

"मेरे बारे में किसी ने पूछा तो नहीं?"

"मालूम नहीं, मैं यहाँ नहीं था।"

"और तुम्हें किसी ने फोन नहीं किया?"

"बारह बजे के करीब रेजीमेण्ट के कमाण्डर ने फोन किया था।"

"क्यों?"

"तुम्हारी मदद करने का अनुरोध किया था।।"

"वह तुमसे 'अनुरोध' करता है?... वाह देखो तो!" होलिन ने बत्तीसी दिखाई। "क्या खूबी से तुम्हारे यहाँ काम चलते हैं!" उसने मेरी ओर उपहास और तिरस्कार भरी नज़र से देखा। "ओह क्या दिमाग पाया है! तुमसे क्या मदद ली जा सकती है?...

सिगरेट पीते हुए वह डग-आउट से निकल गया, पर फौरन वापस आ गया और हाथ रगड़ते हुए प्रसन्न भाव से बोला :

"वाह! रात आयेगी बिल्कुल फर्माइशी!.. और तुम कहाँ की तैयारी करने लगे?" उसने सख्ती से पूछा। "नहीं, तुम कहीं जाओ नहीं, तुम्हारी ज़रूरत पड़ सकती है।..."

बेंच पर बैठकर कुछ सोचते हुए वह गाने लगा, एक ही से शब्द दोहराते हुए :

ओह, रात अन्धेरी,



डर मोहे लागे,
आह, ले चल,
मरीया, मुझे...

मैं फोन पर चौथी कम्पनी के कमाण्डर से बात करने लगा और जैसे ही मैंने रिसीवर रखा, पास आती हुइ गाड़ी की आवाज़ सुनाई दी। किसी ने धीरे-से दरवाजा खटखटाया।

"आ जाइये!"

कातासोनोव ने अन्दर आकर दरवाजा बन्द कर दिया और सलामी देकर कहा :

"आ गये हैं, कामरेड कैप्टन!"

"संतरी को हटाओ! गाना बन्द करके फुरती से उठते हुए होलिन ने मुझसे कहा।

हम लोग कातासोनोव के पीछे-पीछे बाहर निकले। बूँदाबाँदी हो रही थी। डग-आउट के पास ही जानी-पहचानी तिरपालवाली गाड़ी खड़ी थी। इन्तजार करने के बाद कि संतरी अन्धेरे में गायब हो जाये, होलिन ने पीछे से तिरपाल हटाया और धीरे-से कहा :

"इवान!.."

"मैं यहाँ हूँ," तिरपाल के अन्दर से बच्चे की धीमी आवाज सुनाई दी, और फौरन ही एक नन्ही-सी आकृति तिरपाल के अन्दर से ज़मीन पर कूद पड़ी।

4

"सलाम!" जैसे ही हम लोग डग-आउट में घुसे, लड़के ने मुझसे कहा और अचानक मुस्कुराते हुए मेरी ओर मित्रता के भाव से हाथ बढ़ाया।

वह तरोताजा और स्वस्थ लग रहा था, गाल गुलाबी हो रहे थे। कातासोनोव ने उसके फर-कोट से भूसा झाड़ा और होलिन ने चिन्ता करते हुए कहा :

"चाहो तो लेट लो, थोड़ा आराम कर लो।"

"अरे नहीं! दिन भर सोया हूँ और फिर से आराम करूँ?"

"फिर हम लोगों के लिये कुछ मजेदार चीज़ निकालो," होलिन ने मुझसे कहा, "कोई पत्रिका या कुछ और... होनी चाहिए चित्रों वाली!"

कातासोनोव लड़के को कपड़े उतारने में मदद करने लगा, और मैंने मेज पर 'अंगारा', 'लाल सैनिक' और 'मोर्चे की झाँकी' पत्रिकाओं के कुछ अंक रख दिये। कुछ पत्रिकाएँ लड़के की देखी हुई थीं—उसने उन्हें एक ओर उठाकर रख दिया।

आज उसमें बड़ा फर्क लग रहा था : वह बातूनी था, बार-बार मुस्कुरा रहा था, मेरी ओर मैत्री के भाव से देख रहा था और मुझे "तुम" कहकर सम्बोधित कर रहा था, जेसे होलिन और कातासोनोव को। मेरे मन में उस सुनहरे बालोंवाले लड़के के लिये प्यार-सा उमड़ आया। याद आने पर कि मेरे पास टॉफियों का डिब्बा है, मैंने उसे निकाला और खोलकर उसके सामने रख दिया, चाकलेटी रंग की

मलाईवाला दूध उसके प्याले में डाला, फिर उसके पास ही बैठकर साथ-साथ पत्रिकाएँ देखने लगा।

इसी बीच होलिन और कातासोनोव जानी-पहचानी ट्रोफी अटैची, फौजी बरसाती में बँधी बड़ी-सी गठरी, दो टॉमीगन और तहदार लकड़ी की छोटी-सी अटैची गाड़ी से ले आये।

गठरी को बेंच के नीचे रखकर वे हम लोगों के पीछे बैठकर बातें करने लगे। मैं सुना कैसे होलिन दबी आवाज में कातासोनोव से मेरे बारे में कह रहा था :

"...तुमने सुना होता, कैसे यह जर्मन बोलता है—बिल्कुल जर्मन की तरह! वसन्त में मैंने इसे दुभाषिए का काम करने के लिये राजी कर रहा था, और वह, देखो, बटालियन का कमाण्डर हो गया है... ."

ऐसा हुआ था। एक बार होलिन और लेफ्टिनेण्ट कर्नल ग्रिज्नोव ने यह सुनकर कि डिवीजन कमाण्डर के आदेश पर बन्दियों से मैं कैसे पूछताछ कर रहा था, मुझे गुप्तचर विभाग में दुभाषिए का काम करने के लिये मनाने का प्रयास किया था, पर मेरा मन नहीं था और अब मुझे इसका दुख नहीं है : गुप्तचर विभाग में काम करने को मैं तैयार था, पर टोह लेने का काम, दुभाषिए का नहीं।

कातासोनोव ने अँगीठी में लकड़ियाँ ठीक कीं और धीरे-से साँस छोड़ी :

"रात तो बड़ी सुहानी है!.."

वह और होलिन फुसफुसाकर आनेवाले काम के बारे में बातें कर रहे थे, मुझे पता लग गया कि ये लोग टोह लेने की तैयारी नहीं कर रहे थे। मुझे साफ दिखाई दे रहा था कि आज रात होलिन और कातासोनोव लड़के को दूनेपर के पार जर्मनों के पिछवाड़े में भेजने वाले हैं। इसीलिये ये लोग छोटी डिंगी नाव लेकर आये थे, पर कातासोनोव होलिन को मना रहा था कि वह मेरे बटालियन से चपटी तलीवाली नाव ले ले। "बहुत बढ़िया नाव है!" उसने फुसफुसाकर कहा।

"सूँघ लिया शैतानों ने!.." बटालियन में मछुआरों वाली, चपटी तली की पाँच नावें थीं—हम उन्हें तीन महीने से अपने साथ ढो रहे थे। उन्हें दूसरे बटालियनोंवाले जब्त न कर लें, जहाँ सिर्फ एक-एक ही नाव थी, इसलिये मैंने उन्हें होशियारी से छिपा देने और कूच के समय पुआल से ढकने को कह रखा था, और नदी पार करने के लिये सहायक साधनों की संख्या की रिपोर्ट में बस दो ही नाव लिखता था, न कि पाँच।

लड़का टॉफी कुतर रहा था और पत्रिकाएँ देख रहा था। होलिन और कातासोनोव की बातें वह सुन नहीं रहा था। सारी पत्रिकाएं देखकर उसने उनमें से एक छाँट ली जिसमें गुप्तचरों के बारे में कहानी थी और मुझसे कहा :

"यह मैं पढ़ूँगा... और सुनो, तुम्हारे पास ग्रामोफोन है?"

"है, पर स्प्रिंग टूटी हुई है।"

"बड़ी ग़रीबी में जी रहे हो," उसने कहा, फिर अचानक पूछ बैठा : "कान हिला सकते हो तुम?"

"कान?.. नहीं, मैं नहीं हिला सकता," मैंने हँसते हुए कहा। "क्यों?"

"और होलिन हिला सकता है!" उसने गर्व से सूचित किया और पलटकर कहा : "होलिन, दिखाओ तो जरा—कैसे हिलाते हो कान!"

"जो हुक्म आपका," होलिन झट से पास आ गया और हम लोगों के सामने खड़े होकर कान हिलाने लगा। उस समय उसका चेहरा बिल्कुल हिल नहीं रहा था।

लड़के ने खुश होकर गर्व से मेरी ओर देखा।

"दुखी मत हो," होलिन ने मुझसे कहा, "कान हिलाना मैं तुम्हें सिखा दूँगा। यह तो हो जायेगा। अब चलो हमें नाव दिखा दो।"

"तुम लोग मुझे अपने साथ ले चलोगे?" अचानक मैंने पूछा, हालाँकि मैं खुद भी चौंक गया अपने प्रश्न से।

"कहाँ अपने साथ?"

"उस पार।"

"देखो तो इन्हें," होलिन ने मेरी ओर संकेत किया। "इन्हें भी उस पार जाना है! पर उस पार तुम्हें क्या करना है?.." और नज़रों से मेरी थाह लेते हुए उसने पूछा : "तैरना तो आता है तुम्हें?"

"मुझे आता है, परेशान न हो! नाव भी खेता हूँ और तैरता भी हूँ।"

"कैसे तैरते हो—ऊपर से नीचे होकर?" गम्भीर मुद्रा बनाकर होलिन ने पूछा।

"किसी भी हालत में तुमसे बुरा नहीं।"

"ठीक-ठीक बताओ, दूनेपर पार कर जाओगे?"

"कोई पाँच बार," मैंने कहा। यह सही भी था, अगर इस बात का ध्यान रखा जाये कि मेरा मतलब गर्मियों में कम कपड़ों में तैरने से था। "आराम से कोई पाँच बार, उस पार से इस पार!"

"बड़े कड़ियल जवान हो!" अचानक होलिन खिलखिला उठा; वे तीनों ही हँस रहे थे। वैसे देखा जाये तो होलिन और लड़का ही हँस रहे थे, कातासोनोव तो शरमाकर मुस्कुरा रहा था।

अचानक होलिन ने गम्भीर होकर पूछा :

"और राइफल पकड़ने का शौक तुम्हें नहीं है?"

"अरे, जाओ!.." मैंने इस प्रश्न में छिपे मजाक को समझते हुए झुँझलाकर कहा।

"देख रहे हो," होलिन ने मेरी ओर इशारा करके कहा, "इतनी जल्दी पारा चढ़ गया! कोई पकड़ नहीं हैं, नसें एकदम कमजोर हैं, और उस पार जाने का आग्रह है। नहीं, जवान, बेहतर हो कि तुमसे पाला न ही पड़े!"

"तो फिर मैं नाव नहीं दूँगा।"

"नाव तो हम लोग खुद ही ले लेंगे, हमारे पास क्या हाथ नहीं हैं?नहीं तो डिवीजन कमाण्डर को फोन कर दूँगा और नाव तुम नदी तक अपनी पीठ पर लादकर ले जाओगे।"

"अब बन्द भी करो," लड़के ने सुलह करवाने के ढंग से बीच में कहा। "वह तो वैसे ही दे देगा... दे दोगे ना?" मेरी आँखों में झाँककर उसने पूछा।

"देनी ही पड़ेगी," बनावटी मुस्कान के साथ मैंने कहा।

"तो चलो, देखते हैं!" होलिन ने मेरा हाथ पकड़कर कहा। "और तुम यहीं रहो," उसने लड़के से कहा, "बस खेलना-कूदना मत, आराम करना।"

कातासोनोव ने तहदार लकड़ी की अटैची को स्टूल पर रखकर उसे खोला—उसमें तरह-तरह के औजार, कई डिब्बे, लत्ते, मोटा सन, पट्टियाँ थे। रुईदार जाकेट पहनने से पहले मैंने पेटी में चाकू बाँध लिया।

"वाह, चाकू!" उत्साह से लड़के ने कहा, उसकी आँखें चमक उठीं। "दिखाओ!"

मैंने उसकी ओर चाकू बढ़ाया; उसे हाथ में उलट-पुलटकर उसने मुझसे कहा :

"सुनो, इसे मुझे दे दो!"

"मैं तुम्हें दे देता, पर समझो... यह उपहार है।"

मैं उससे झूठ नहीं बोल रहा था। वह चाकू मेरे सबसे प्यारे दोस्त कोत्या खोलोदोव की यादगार भेंट थी। तीसरी क्लास से मैं और कोत्या एक ही बेंच पर बैठते थे, साथ-साथ ही फौज में आये, साथ-साथ फौजी स्कूल में पढ़े और एक ही डिवीजन में लड़े और फिर एक ही रेजीमेण्ट में आ गये।

...सितम्बर की उस सुबह मैं देस्ना नदी के किनारे एक खन्दक में तैनात था। मैंने देखा कि कैसे कोत्या अपनी कम्पनी के साथ—हमारी डिवीजन में सबसे पहले—दाहिने किनारे की ओर तैरने लगा। कुन्दों, पीपों और लग्गों से बने हुए छोटे बेड़े नदी के बीच से गुजर रहे थे, तभी जर्मन तोपों और मॉर्टरों की आग से तैरनेवालों पर टूट पड़े। पानी का सफेद फौव्वारा कोत्या के बेड़े के ऊपर उड़ आया।... आगे क्या हुआ मैं देख नहीं पाया—टेलीफोन ऑपरेटर के हाथ में रिसीवर खड़खड़ा उठा : "गाल्त्सेव, आगे बढ़ो!.." और मैं, मेरे पीछे पूरी कम्पनी—सौ से कुछ ज्यादा लोग—मुण्डेर लाँघकर पानी की ओर बढ़ चले, ठीक वैसे ही बेड़ों की ओर।... आधे घण्टे बाद ही दाहिने किनारे पर आमने-सामने की लड़ाई हो रही थी।...

मैं अभी तक तय नहीं कर पाया था कि इस चाकू का मैं क्या करूँ : अपने पास रहने दूँ, या लड़ाई के बाद मास्को लौटकर अर्बात की सुनसान गली में जाकर कोत्या के माँ-बाप को चाकू वापस कर दूँ, बेटे की आखिरी याद के रूप में...

"मैं तुम्हें दूसरा भेंट कर दूँ," मैंने लड़के से वायदा किया।

"नहीं, मुझे यही चाहिए!" उसने मचलकर मेरी आँखों में झाँककर कहा। "इसे मुझे दे दो!"

"लालच मत करो, गाल्त्सेव," होलिन ने नाराजगी से कहा। वह तैयार खड़ा मेरा और कातासोनोव का इन्तजार कर रहा था। "कंजूसी मत करो!"

"मैं तुम्हें दूसरा भेंट कर दूँगा। बिल्कुल ऐसा ही!" मैंने लड़के को आश्वासन दिया।

"तुम्हारे पास ऐसा ही चाकू होगा," कातासोनोव ने चाकू देखकर उससे वायदा किया। "मैं ढूँढ़ निकालूँगा।"

"मैं तुम्हें जरूर बनवा दूँगा, वायदा करता हूँ!" मैंने विश्वास दिलाया। "यह भेंट है, समझो जरा—स्मृति!"

"ठीक है फिर," आखिर तो लड़को ने नाराजी भरी आवाज में सहमति दिखाई। "अभी तो छोड़ दो उसे—खेलने के लिये..."

"छोड़ दो चाकू और चलो," होलिन ने हड़बड़ी मचाते हुए कहा।

"मैं तुम्हारे साथ जाकर क्या करूँगा?मेरे लिये क्या खुशी!" जाकेट बन्द करते हुए मैंने कहा। "तुम लोग अपने साथ तो मुझे लोगे नहीं, और नावें कहाँ हैं मेरे बिना भी तुम्हें मालूम है।"

"चलो, चलो," होलिन ने मुझे घसीटते हुए कहा। "मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा," उसने वायदा किया, "बस आज नहीं।"

हम तीनों एक साथ निकले और झाड़ियों के बीच में से होकर दाहिने पार्श्व की ओर चल दिये। हल्की-हल्की, ठण्डी झड़ी पड़ रही थी। चारों ओर अन्धेरा, काला आसमान फैला हुआ था—न तारे थे, न चन्द्रमा।



कातासोनोव अटैची लिये बिना शोर किये इतने विश्वास के साथ सबसे आगे चल रहा था, जैसे हर रात वह इस पगडण्डी पर चलता रहा हो। मैंने फिर होलिन से लड़के के बारे में पूछा, उसने बताया कि नन्हा बोंदरेव गोमेल शहर का है, पर लड़ाई से पहले परिवार के साथ बाल्टिक क्षेत्र में एक सीमान्त चौकी पर रहता था। उसके पिता सीमा-रक्षक थे, और लड़ाई के पहले दिन ही मारे गये। जगह छोड़कर भागते समय उसकी डेढ़ साल की बहन उसके ही हाथों में मारी गयी।

"उसे इतना सहना पड़ा है कि हमने कभी सपने में भी नहीं देखा," होलिन ने फुसफुसाकर कहा। "वह छापामारों के बीच भी रहा और त्रोस्त्यांत्स—मौत के शिविर—में भी... उसके दिमाग़ में बस एक ही बात है : आखिरी दम तक बदला लेने की! जब शिविर के बारे में बातें करता है या पिता या बहन को याद करता है तो गुस्से से पूरा का पूरा काँपने लगता है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि बच्चे इतनी घृणा कर सकता है।..."

होलिन एक क्षण चुप रहकर मुश्किल से सुनाई पड़नेवाली फुसफुसाहट में आगे कहने लगा :

"हम लोगों ने पूरे दो दिन कोशिश की कि उसे सुवोरोव फौजी स्कूल में जाने के लिए मना सकें। फौज के कमाण्डर ने खुद उसे मनाया—प्यार से भी और डाँटकर भी। आखिर में उसे टोह लेने जाने की इजाजत दे दी पर आखिरी बार जाने की शर्त के साथ!.. उसे न भेजना भी आफत है। जब वह सबसे पहली बार हमारे पास आया था, हमने तय किया था कि उसे नहीं भेजेंगे! पर वह खुद चला गया। जब लौटा तो हमारे ही लोगों ने—शीलिन की रेजीमेण्ट की एक सुरक्षा चौकी से—उस पर गोलियाँ चला दीं। उसका कन्धा घायल हो गया पर किसी को दोषी भी नहीं ठहरा सकते : रात अन्धेरी थी, किसी को कुछ भी नहीं मालूम था!.. जो कुछ वह करता है, उसमें बड़े भी काम सफल होते हैं। वह अकेला ही गुप्तचर

कम्पनी से ज्यादा है। दुश्मन के पिछवाड़े में घुसकर अपने को वैध बना पाना और पाँच-दस दिन वहाँ रह पाना गुप्तचरों के समूह के लिये असंभव है। और अकेला गुप्तचर भी इसमें कम सफल होता है। बात यह है कि बड़ा आदमी किसी भी रूप में शक पैदा करता है। और भिखारी का भेसवाला बेघर लड़का दुश्मन के पिछवाड़े में गुप्तचर के काम के लिये शायद सबसे अच्छा है।... काश तुम उसे पास से जानते होते—ऐसे लड़के के बारे में तो बस सपने में ही सोचा जा सकता है!.. तय है कि अगर लड़ाई के बाद उसकी माँ नहीं मिली तो कातासोनोव या लेफ्टिनेण्ट कर्नल उसे गोद ले लेंगे।..''

''वे ही लोग क्यों, तुम क्यों नहीं लोगे गोद?''

''मैं लेता जरूर,'' गहरी साँस खींचते हुए होलिन ने फुसफुसाकर कहा, ''पर लेफ्टिनेण्ट-कर्नल इसके खिलाफ हैं। उनका कहना है कि अभी तो मुझे ही काफी कुछ सीखना है!'' हँसते हुए उसने कहा।

मैं लेफ्टिनेण्ट-कर्नल से सहमत था : होलिन थोड़ा रूखा था, और कभी-कभी बेतकल्लुफ और कटु स्वभाव का भी। यह सच है कि लड़के के सामने वह खुद को काबू में रखता था, मुझे तो लगा कि वह इवान से थोड़ा डरता था।

नदी के किनारे से डेढ़-सौ मीटर की दूरी पर हम लोग उन झाड़ियों की ओर घूम गये, जहाँ फर के पेड़ों की टहनियों से ढकी हुई चपटी तली वाली नावें रखी थीं। मेरे आदेश पर उन्हें तैयार रखा जाता था और एक दिन के अन्तर से पानी में भिगोया जाता था, जिससे वे सूख न जायें।

होलिन और कातासोनोव नावों की तलियों व दीवारों को टटोलते और खटखटाते हुए देख रहे थे। फिर वे हर नाव को सीधा करके उसमें बैठते और उसे ''खेकर'' परखते। आखिर में उन्होंने एक छोटी-सी नाव चुन ली जो बस इतनी बड़ी थी कि तीन-चार आदमियों से ज़्यादा उसमें बैठ नहीं सकते थे।

''इस जंजीर का यहाँ कोई काम नहीं,'' होलिन ने जंजीर उठाई और जैसे मालिक हो घुमाकर उसको निकालने लगा। ''बाकी सब कुछ नदी के किनारे कर लेंगे। सबसे पहले पानी में चलाकर देखते हैं।...''

हम लोगों ने नाव उठा ली—होलिन ने आगे की ओर से नाव पकड़ रखी थी, मैंने और कातासोनोव ने पीछे की ओर से— और झाड़ियों के बीच कुछ कदम आगे बढ़ाये।

''भाड़ में जाओ तुम लोग!'' अचानक होलिन ने धीरे से गुस्से भरी आवाज में चिल्लाकर कहा।

''मुझे दो नाव!..''

हम लोगों ने उसे नाव दी; उसने नाव को अपनी पीठ पर लाद लिया, नाव की दीवारों को हाथों से पकड़ लिया और थोड़ा-सा झुककर वह लम्बे-लम्बे डग भरते हुए कातासोनोव के पीछे-पीछे नदी की ओर चल दिया।

नदी के किनारे उन्हें छोड़कर मैं आगे निकल गया सुरक्षा चौकी पर संतरियों को आगाह करने के लिए—इसीलिये तो होलिन को मेरी जरूरत थी।

होलिन अपने बोझ के साथ धीरे-धीरे पानी तक जाकर रुक गया।

हम तीनों ने बड़ी सावधानी से, ताकि शोर न हो, नाव पानी में उतार दी।

''बैठो!''

हम लोग बैठ गये। होलिन ने नाव को धक्का दिया और कूदकर पिछले हिस्से में बैठ गया—नांव किनारे से फिसलकर चल पड़ी। कातासोनोव चप्पू चलाते हुए—एक से खेते हुए और दूसरे से पानी पीछे फेंकते हुए—नाव को कभी दाहिनी ओर तो कभी बायीं ओर घुमा रहा था। फिर वह और होलिन मानो नाव को पलटने का पक्का इरादा करके कभी नाव के बायें बाजू की ओर तो कभी दायें बाजू की ओर झुकने लगे, इस बात का ध्यान रखते हुए कि पानी न भर जाये, फिर घुटनों के बल बैठकर हथेलियों से तली और दीवारें टटोलकर देखने लगे।

"बढ़िया नाव है!" कातासोनोव ने बड़ाई करते हुए फुसफुसाकर कहा।

"हाँ, चलेगी," होलिन ने सहमति प्रकट की। "यह तो सचमुच नाव चुराने में माहिर है—खराब नहीं लेता!... बताओ, गाल्त्सेव, कितने मालिकों को अभागा बना दिया?.."

दाहिने किनारे से लगाता पानी के ऊपर गोलियों की बौछार हो रही थी।

"गोलियों की इतनी तेज बौछार है कि बस!" हँसते हुए तुतलाकर कातासोनोव ने कहा। "जर्मन बड़े मितव्ययी लगते हैं, कुछ कंजूस भी, पर देखो, कितनी फजूलखर्ची! क्या जरूरत है अन्धाधुँध गोलियाँ चलाने की?.. कामरेड कैप्टन, फिर सुबह तड़के अपने साथियों को उस पार से उठा लायेंगे क्यों?" अनिश्चित से स्वर में उसने होलिन से कहा।

"आज नहीं। बस, आज नहीं..."

कातासोनोव आराम से नाव खेने लगा। किनारा पास आने पर हम लोग उतर गये।

"ठीक है, फिर चप्पुओं के कड़ों पर पट्टी लपेट देते हैं और चप्पू टिकाने की जगहों में तेल डाल देते हैं, बस!" खुश होकर होलिन ने कहा और मेरी ओर मुड़कर पूछा :

"तुम्हारे यहाँ इस खन्दक में कौन है?"

"दो जवान हैं।"

"एक को यहाँ छोड़ दो। भरोसे का हो और चुप रहना जानता हो! समझे?मैं उसके पास जाता हूँ सिगरेट पीने—देखूँगा उसे!... सुरक्षा प्लाटून के कमाण्डर को आगाह कर देना : रात को दस बजेके बाद गुप्तचरों की एक टोली, सम्भव है!,—ऐसे ही कहना उससे : सम्भव है!" होलिन ने जोर दिया, "उस किनारे जायेगी। उसके समय तक सभी चौकियों को आगाह कर दिया जाये। खुद कमाण्डर पासवाली बड़ी खन्दक में रहे, जहाँ मशीनगन है।" होलिन ने बहाव के नीचे की ओर हाथ से इशारा किया। "अगर लौटते समय हम पर किसी ने गोली चलाई तो मैं उसका सिर फोड़ दूँगा!.. कौन जायेगा, क्यों और कैसे,—इस बारे में एक शब्द भी नहीं। ध्यान रखो : इवान के बारे में बस तुम जानते हो। मैं तुमसे कुछ लिखवा नहीं रहा हूँ, पर अगर तुमने कुछ बक दिया तो मैं तुम्हें.."

"तुम मुझे धमका क्यों रहे हो?" मैंने गुस्से से फुसफुसाकर कहा। "मैं क्या छोटा बच्चा हूँ?"

"मैं भी यही सोचता हूँ। बुरा मत मानो।" उसेने मेरा कंधा थपथपाया। "मेरा काम तो तुम्हें आगाह करना है... अब तुम काम करो!.."

कातासोनोव चप्पुओं के कड़ों के साथ व्यस्त हो गया था। होलिन ने भी नाव के पास जाकर काम शुरू कर दिया। एक मिनट खड़ा रहकर मैं नदी के किनारे-किनारे चल पड़ा।

सुरक्षा प्लाटून का कमाण्डर मुझे पास ही मिल गया—वह चौकियों का निरीक्षण करते हुए खन्दकों के बीच गश्त लगा रहा था। जैसे होलिन ने मुझसे कहा था, मैंने उसे हिदायतें दीं और बटालियन के हेडक्वार्टर की ओर चल दिया। निर्देश देकर और कागजों पर दस्तखत करके मैं अपने डग-आउट में लौट आया।

लड़का अकेला था। वह उत्तेजना और जोश से बिल्कुल लाल हो रहा था। उसके हाथ में कोत्या का चाकू था और सीने पर मेरी दूरबीन लटकी हुई थी, चेहरा अपराधी सा लग रहा था। डग-आउट में सबकुछ बेतरतीबी से फैला हुआ था : मेज उल्टी पड़ी थी, उसकी टाँगें ऊपर की ओर थीं, उस पर कम्बल ढका हुआ था, स्टूल की टाँगें बेंच के नीचे से झाँक रही थीं।

"सुनो, तुम नाराज मत होना," लड़के ने मुझसे कहा। "मैं अनचाहे... सच कह रहा हूँ, अनचाहे... "

और तभी मैंने देखा कि सुबह ही धोकर चमकाये हुए फर्श के तख्तों पर स्याही का बड़ा सा धब्बा है।

"तुम गुस्सा तो नहीं हो?" मेरी आँखों में झाँकते हुए उसने पूछा।

"अरे नहीं," मैंने कहा, हालाँकि डग-आउट की अस्तव्यस्तहालत और फर्श पर धब्बा मुझे कुछ ज्यादा अच्छा नहीं लग रहा था।

मैं चुपचाप सब कुछ ठिकाने से रखने लगा, लड़का मेरी मदद करने लगा। उसने धब्बे को देखकर मुझसे कहा :

"पानी गर्म कर लेते हैं। और साबुन से... मैं साफ कर दूँगा!"

"अरे, छोड़ो, तुम्हारे बिना ही किसी तरह..."

मुझे बहुत भूख लग रही थी, इसलिये फोन करके मैंने छः लोगों का खाना लाने को कहा—मुझे कोई शक नहीं था कि होलिन और कातासोनोव भी नाव ढो-ढोककर मुझसे कम भूखे नहीं होंगे।

गुप्तचरों की कहानीवाली पत्रिका देखकर मैंने लड़के से पूछा :

"पढ़ ली?"

"हाँ, दिल छू लेने वाली है। बस, सचमुच में ऐसा नहीं होता। उन्हें झट से पकड़ लेते। पर उन्हें बाद में आर्डर भी दिये गये।"

"तुम्हें किसलिये मिला है आर्डर?" मैंने पूछा।

"यह तो जब मैं छापामारों के साथ था तब मिला था।.."

"तुम छापामारों के साथ भी थे?" जैसे पहली बार सुना हो, मैंने आश्चर्य से पूछा। "फिर चले क्यों आये?"

"हमें जंगल में घेर लिया था, फिर मुझे हवाई जहाज से अपने लोगों के बीच भेज दिया। बोर्डिंग स्कूल में। पर मैं वहाँ से जल्द ही गायब हो गया।"

"गायब हो गये?"

"भाग लिया। बहुत मुश्किल था वहाँ रहना, बर्दाश्त के बाहर। रह रहे हो पर तुमसे कोई लाभ नहीं

है। और लगातार रटना पड़ता है—मछलियाँ रीढ़ की हड्डीवाली जानवर हैं... या आदमी के जीवन में शाकाहारियों का महत्व...''

''अरे, यह सब भी जानना जरूरी है।''

''जरूरी है। पर अब मुझे इसकी क्या जरूरत?मैंने लगभग महीना भर सहन किया। रात को लेटे-लेटे सोचता : मैं यहाँ क्यों हूँ?किसलिये?..''

''बोर्डिंग स्कूल तुम्हारे लिये ठीक जगह नहीं है,'' मैंने सहमति से कहा। ''तुम्हें कहीं और जाना चाहिए। तुम अगर सुवोरोव फौजी स्कूल में भरती हो जाओ,—वाह, क्या मजे रहें!''

''यह तुम्हें होलिन ने सिखाया है?'' लड़के ने जल्दी से पूछा और चौकस होकर मुझे देखने लगा।

'होलिन ने क्यों?मैं खुद ऐसा सोचता हूँ। तुम लड़ तो चुके ही हो : छापामारों के साथ भी और गुप्तचर विभाग में रहकर भी। तुम हो सम्मानित आदमी। अब तुम्हें क्या करना है : आराम करो और पढ़ो! तुम्हें मालूम है तुम कितने अच्छे अफसर बन सकते हो?..''

''यह होलिन ने तुम्हें सिखाया है!'' विश्वास के साथ लड़के ने कहा। ''पर बेकार ही!.. अफसर तो मैं बाद में भी बन सकता हूँ। अभी लड़ाई चल रही है, आराम वह कर सकता है जिससे कम फायदा हो।''

''यह ठीक है, पर तुम तो अभी काफी छोटे हो!''

''छोटा?.. और तुम मौत के शिविर में कभी रहे हो?'' अचानक उसने पूछा; उसकी आँखें भयानक रूप से तमतमा रही थीं; यह बच्चों की घृणा नहीं थी। ऊपरवाला नन्हा सा होंठ फड़क रहा था। ''तुम मुझे क्यों मना रहे हो, क्यों?!'' उत्तेजना से उसने चिल्लाकर कहा। ''तुम्हें... तुम्हें कुछ भी नहीं मालूम औरअपनी नाक मत घुसेड़ो!... बेकार की दौड़-धूप...''

कुछ मिनट बाद ही होलिन आ गया। तहदार लकड़ी की अटैची बेंच के नीचे खिसकाकर वह स्टूल पर बैठा और सिगरेट पीने लगा गहरे कश खींचते हुए।

''फिर सिगरेट पी रहे हो,'' नाराज होकर लड़के ने कहा। वह चाकू से खेल रहा था, उसे खोल में से निकालता, फिर वापस रख देता, कभी पेटी पर बायीं ओर, तो कभी दाहिनी ओर टांगता। ''सिगरेट पीने से फेफड़े हरे हो जाते हैं।''

''हरे?'' अनमनेपन से मुस्कुराकर होलिन ने पूछा। ''होने दो हरे। किसे दिखाई देते हैं?''

''पर मैं नहीं चाहता कि तुम सिगरेट पियो! मेरे सिर में दर्द हो जायेगा।''

''ठीक है, मैं बाहर चला जाता हूँ।''

होलिन उठा। उसने मुस्कुराकर लड़के परनज़र डाली। उसके तमतमाये चेहरे को देखकर उसके पास गया और उसके माथे पर हाथ रखा। अब अपनी बारी पर उसने नाराजगी से कहा :

''फिर ऊधम मचाया?.. बहुत बुरी बात है! लेटो और आराम करो। लेटो, लेटो!''

लड़का अच्छे बच्चों की तरह बेंच पर लेट गया। होलिन ने एक और सिगरेट निकालकर अपनी जली हुई सिगरेट से उसे जलाया और फौजी ओवरकोट पहनकर डग-आउट से बाहर निकल गया। मैंने देखा कि सिगरेट पीते समय उसके हाथ कुछ-कुछ काँप रहे थे। मेरी ''नसें कमजोर'' हैं, पर यह भी तो



काम से पहले परेशान हो रहा था। मैंने उसमें कुछ अनमनापन या कुछ बेचैनी सी देखी। अपनी तेज नज़र के बावजूद उसने फर्श पर स्याही का धब्बा नहीं देखा और वह दिख भी कुछ अजीब सा रहा था। पर हो सकता है, यह मुझे बस लगा।

उसने खुले में दस मिनट तक सिगरेट पी (जाहिर है, बस एक ही सिगरेट नहीं)। लौटकर उसने मुझसे कहा :

''डेढ़ घण्टे बाद जायेंगे। चलो, खाना खाते हैं।''

''कातासोनोव कहाँ है?'' लड़के ने पूछा।

''उसे डिवीजन के कमाण्डर ने फौरन बुलवाया था। वह डिवीजन चला गया।''

''चला गया?!'' लड़के ने फुरती से उठकर पूछा। ''चला गया और यहाँ आया तक नहीं?मुझे सफलता की शुभकामनाएँ भी नहीं दीं?''

''वह आ नहीं पाया! उसे फौरन आने को कहा गया था,'' होलिन ने समझाया। ''मैं तो सोच भी नहीं पा रहा कि वहाँ ऐसा क्या हो गया... उन्हें तो मालूम है कि हमें उसकी ज़रूरत है, पर अचानक बुला लिया...''

''भागकर आ सकता था। क्या दोस्त है...'' दुखी और चिन्तित होकर लड़के ने कहा। वह सचमुच अनमना हो गया था।

दीवार की ओर मुँह करके वह आधे मिनट चुप लेटा रहा, फिर उसने पलटकर पूछा :

''तो क्या बस हम दोनों जायेंगे?''

''नहीं, तीनों। वह जायेगा हम लोगों के साथ,'' जल्दी से सिर हिलाकर उसने मेरी ओर इशारा किया।

मैं उसकी ओर हैरानी से देख रहा था, फिर यह सोचकर कि वह मजाक कर रहा है मैं हँस दिया।

''तुम हँसो मत, और मूर्खों की तरह मुझे मत देखो। तुमसे कुछ ऊटपटाँग नहीं बक रहा हूँ,'' होलिन

ने कहा। उसका चेहरा गम्भीर और कुछ परेशान-सा था।

मैंने फिर भी विश्वास नहीं किया और चुपचाप बैठा रहा। "तुम खुद ही तो चाह रहे थे। खुद ही आग्रह किया था! अब क्या डर रहे हो?" उसने पूछा, वह मेरी ओर एकटक ऐसी नफरत और द्वेष भरी नज़रों से देख रहा था कि मुझे बहुत अजीब-सा लगने लगा। अचानक मैंने महसूस किया, मैं समझ गया कि वह मज़ाक नहीं कर रहा है।

"मैं डर नहीं रहा हूँ!" मैंने विचारों को समेटने की कोशिश करते हुए दृढ़ता से घोषित किया। "बस अचानक कुछ..."

"ज़िन्दगी में सब अचानक ही होता है," होलिन ने कुछ सोचते हुए कहा। "मैं तुम्हें लेकर नहीं जाता, विश्वास करो : यह जरूरी है! कातासोनिच को फौरन बुला भेजा है, समझ रहे हो, फौरन! समझ नहीं पा रहा, उनके यहाँ ऐसा क्या हो गया... हम लोग दो घण्टे बाद वापस आ जायेंगे," होलिन ने विश्वास दिलाया। "बस, तुम खुद ही तय करो। खुद! अगर कुछ हो जाये तो बात मुझ पर मत डालना। अगर यह पता लग गया कि तुम अपनी इच्छा से उस पार गये थे तो हम पर खूब डाँट पड़ेगी। इसलिये अगर कुछ हो जाए तो मत रोना : 'होलिन ने कहा था, होलिन ने जोर दिया था, होलिन ने दबाव डाला था!..' यह सब न हो इसलिये याद रखो कि तुमने खुद आग्रह किया था। आग्रह तो किया था?.. अगर कुछ हो जाये मुझ पर जरूर डाँट पड़ेगी पर तुम भी नहीं बचोगे!.. अपनी जगह किसे छोड़ने की सोच रहे हो?" थोड़ी देर रुककर होलिन ने पूछा।

"अपने सहायक को... कोल्बासोव को," मैंने सोचकर जवाब दिया। "वह लड़ाकू जवान है..."

"वह लड़ाकू जरूर है, पर बेहतर हो कि उससे पाला न ही पड़े। सहायक कमाण्डर सैद्धान्तिक आदमी होते हैं : अगर किसी रिपोर्ट के चक्कर में फँस जायेंगे तो झँझटों से बचना मुश्किल होगा," हँसते हुए उसने समझाया और अपनी आँखें ऊपर की ओर घुमाई। "भगवान हमें ऐसी मुसीबत से बचाये!"

"तो फिर पाँचवीं कम्पनी के कमाण्डर गूश्चिन को छोड़ दूँगा।"

"तुम ही जानो, खुद ही तय करो!" होलिन ने कहा, फिर सलाह दी : "तुम उसको अपने काम के बारे में कुछ मत बताना। इस बारे में कि तुम उस पार जाओगे बस सुरक्षा चौकीवालों को बताना है, समझे?अगर ध्यान रखो कि शत्रु केवल सुरक्षा में लगा है, और उसकी ओर से किसी तरह के आक्रमण की उम्मीद नहीं है, तो क्या हो सकता है फिर?.. कुछ भी नहीं! वह भी तुम अपने सहायक को छोड़कर जाओगे और बस दो घण्टों में वापस आओगे।..."

वह बेकार ही मुझे समझा रहा था। काम गम्भीर जरूर था, और अगर बड़े अफसरों को पता लग जाता तो झँझटों से बचना मुश्किल होता। पर मैंने बिल्कुल तय कर लिया था और मुसीबतों के बारे में न सोचने की कोशिश कर रहा था–पर आने वाले काम के बारे में चिन्ता और विचार बार-बार मेरे सामने आ जाते थे।

मुझे कभी भी टोह लेने जाना नहीं पड़ा था। वैसे तो तीन महीने पहले मैंने अपनी कम्पनी के साथ टोह लेने वाला हमला किया था और वह भी बड़ी सफलता से। पर टोह लेनेवाला हमला क्या होता है?यह तो वही आक्रमणकारी लड़ाई है, पर सीमित शक्तियों के साथ और बहुत थोड़े समय के लिये।

मुझे कभी भी टोह लेने जाना नहीं पड़ा था, इसलिये होने वाले काम के बारे में सोचते हुए मैं, स्वभावतः बिना चिंता किये नहीं रह सका।...

5

रात का खाना आ गया था। मैं खुद बाहर जाकर पतीलियाँ और गर्म चाय से भरी केतली ले आया। मैंने दही से भरा मिट्टी का बर्तन और मांस से भरा टिन का डिब्बा भी मेज पररख दिया। हम लोग खाने बैठ गये : लड़का और होलिन बहुत कम खा रहे थे, मेरी भूख भी मर गई थी। लड़के का चेहरा नाराजगी से भरा हुआ और कुछ-कुछ दुखी सा लग रहा था। साफ दिखाई दे रहा था कि उसे यह बात बहुत बुरी लग गई थी कि कातासोनोव सफलता की शुभकामनाएँ देने नहीं आया। खा-पीकर वह फिर बेंच पर लेट गया।

जब मेज साफ हो गई, तो होलिन ने नक्शा फैलाया और मुझे काम समझाने लगा।

हम तीनों नदी पार करके उस किनारे पहुँचेंगे, फिर नाव को झाड़ियों में छिपाकर नदी के किनारे-किनारे बहाव के ऊपर की ओर नाले तक कोई छः सौ मीटर तय करेंगे—होलिन ने नक्शे पर दिखाया।

"अच्छा होता अगर हम लोग नाव से ठीक उसी जगह पहुँचते, पर वहाँ नाव छिपाने की कोई जगह नहीं है," उसने समझाया

तीसरे बटालियन के क्षेत्र के ठीक सामने इस नाले से होकर लड़के को जर्मनों की अगली मोर्चेबन्दी पार करनी थी।

अगर लड़के को जर्मन देख लें तो पानी के पास खड़े हुए ही मुझे और होलिन को फायर शुरू करने का संकेत देनेवाला लाल सिगनल रॉकेट छोड़कर अपनी उपस्थिति प्रकट करनी थी। जर्मनों का ध्यान बँटाकर "किसी भी कीमत पर" लड़के के नाव तक पहुँचने में उसकी आड़ करनी होगी। सबसे आखिर में होलिन पीछे हटेगा।

अगर वे लोग लड़के को देख लेते तो हमारे रॉकेटों के सिगनल पर "मदद करनेवाले साधनों"—दो 76-मिलीमीटर तोपोंवाली बैटरियाँ, 120-मिलीमीटर मॉर्टरवाली बैटरी, दो मॉर्टरवाली कम्पनियों और मशीनगनवाली कम्पनी—को बायें किनारे से तेज हमला करके दुश्मन को चकाचौंध और हक्का-बक्का कर देना था और तोपों तथा मॉर्टर के गोलों की बौछार से नाले के दोनों ओर बनी जर्मन खाइयों को घेर लेना था, जिससे जर्मनों के सम्भावित हमलों को रोककर हमें नाव तक पहुँचने का समय मिल जाये।

होलिन ने मुझे हमारी टुकड़ियों से पारस्परिक कार्रवाइयों के सिग्नल बताये, विस्तार से सब समझाया और पूछा :

"तुम्हें सब समझ में आ गया?"

"हाँ, मेरे ख्याल से तो सभी कुछ।"

थोड़ी देर चुप रहकर जिस बात की मुझे चिन्ता थी मैंने पूछा : अकेले रह जाने पर ऐसे अँधेरे में

लड़का रास्ता तो नहीं भूल जायेगा और तोपों के चलने से उसे कोई नुकसान तो नहीं होगा?

होलिन ने लड़के की ओर इशारा करके समझाया कि उसने कातासोनोव के साथ तीसरे बटालियन के क्षेत्र से दुश्मन की मोर्चेबन्दी पार करने की जगह का कुछ घण्टों तक अध्ययन किया है और हर झाड़ी, हर टीले को वह जानता है! और जहाँ तक तोपों के हमले की बात है तो पहले से ही तय कर लिया गया है कि 70 मीटर चौड़ा ''दर्रा'' छोड़ दिया जायेगा।

मैं न चाहते हुए भी उस बारे में सोचा था कि कितनी अनसोची घटनाएँ हो सकती हैं, पर मैंने कुछ कहा नहीं। लड़का विचारों में डूबा हुआ कुछ दुखी सा लेटा था, उसने अपनी निगाहें ऊपर की ओर जमा रखी थीं। उसका चेहरा नाराजगी से भरा हुआ और उदासीन सा लग रहा था, जैसे हम लोगों की बातचीत से उसे कोई मतलब न हो।



मैंने नक्शे पर नीली रेखाएँ देखीं—जर्मनों की सशक्त मोर्चेबन्दी—और यह सोचकर कि सचमुच में वह कैसी होगी, धीरे से पूछा :

''क्या पार करने के लिये ठीक जगह चुनी है?क्या फौज के रणक्षेत्र में कहीं कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ दुश्मन की सुरक्षा-व्यवस्था कुछ ढीली हो?क्या कोई ऐसी 'कमजोर जगह', दरारें आदि नहीं है... जैसे दो टुकड़ियों के बीच में।''

होलिन ने अपनी भूरी आँखें सिकोड़कर मेरी ओर हँसकर देखा।

''अपनी टुकड़ियों में रहकर तुम लोग अपनी नाक से आगे कुछ नहीं देखते!'' उसने कुछ उपेक्षा से कहा। ''तुम लोगों को लगता है कि बस तुम्हारे सामने ही दुश्मन का मोर्चा सबसे ज्यादा सख्त है, बाकी जगहों पर बस, दिखावे के लिये! क्या सचमुच तुम यह सोचते हो कि हम लोगों ने सही जगह नहीं चुनी या हम लोग तुमसे कम समझते हैं?... अगर जानना चाहते हो तो यहाँ जर्मनों के पूरे मोर्चे पर इतनी फौजें ठसाठस भरी हैं कि तुमने कभी सपने में भी नहीं देखी होंगी। और दो टुकड़ियों के बीच की जगहों पर वे लोग और भी मुस्तैदी से नज़र रखते हैं—अपने से ज्यादा मूर्ख लोगों को मत ढूँढ़ो : मूर्ख अब नहीं बचे! मजबूत मोर्चेबन्दी दसियों किलोमीटर तक है।'' होलिन ने उदासी से साँस भरी। ''भले आदमी, यहाँ सब कुछ एक बार नहीं सोचा गया है। ऐसे कामों में बिना तैयारी के कुछ नहीं किया जाता, यह याद रखो!..''

वह उठकर लड़के के पास बेंच पर बैठ गया और धीमी आवाज में हिदायतें देने लगा, मेरे ख्याल से

यह कोई पहली बार नहीं थी :

"...नाले में बिल्कुल किनारे पर रहना। ध्यान रखो कि पूरे नीचे के हिस्से में सुरंगें बिछी हुई हैं... लगातार कान लगाकर सुनते रहना। थोड़ी देर दम साधे रहना और सुनना! खाइयों के बीच गश्त करने वाले घूमते रहते हैं, मतलब थोड़ी देर रेंगना फिर रुककर इन्तज़ार करना!.. जैसे ही गश्त हट जाये—खाई पार करके आगे बढ़ना..."

मैंने पाँचवी कम्पनी के कमाण्डर गूश्चिन को फोन किया और उसे बताया कि वह मेरी जगह यहाँ रहेगा, फिर उसे कुछ जरूरी हिदायतें दीं। रिसीवर रख देने पर मुझे होलिन की धीमी आवाज फिर सुनाई दी :

"...फ्योदोरोव्का में इन्तज़ार करना... मुश्किल में मत फँसना! सबसे खास बात है कि सावधान रहना!"

"तुम सोचते हो कि सावधान रहना बहुत आसान है?" ज़रा चिड़चिड़ेपन से लड़के ने पूछा।

"मुझे मालूम है! पर तुम सावधान रहना! और हमेशा ध्यान रखो कि तुम अकेले नहीं हो! याद रखो : जहाँ कहीं भी तुम हो, मैं हर समय तुम्हारे बारे में सोचता हूँ। और लेफ्टिनेण्ट कर्नल भी..."

"और कातासोनिच मेरे पास आये बिना ही चला गया," बालसुलभ नाराजगी से लड़के ने कहा।

"मैंने तुम्हें बताया तो कि वह आ नहीं पाया! उसे फौरन पहुँचने को कहा गया था। नहीं तो... तुम्हें तो मालूम ही है कि वह तुम्हें कितना प्यार करता है! तुम तो जानते ही हो कि उसके और कोई नहीं है और तुमसे उसे सबसे ज्यादा लगाव है! मालूम है न?"

"मालूम है," नाक सुड़ककर लड़के ने सहमति दिखाई, उसकी आवाज काँप रही थी। "फिर भी थोड़ी देर को तो आ सकता था..."

होलिन उसके पास लेट गया और हाथ से उसके सुनहरे, रेशम जैसे बालों को सहलाते हुए फुसफुसाकर कुछ कहने लगा। मैं उन लोगों की बातें न सुनने की कोशिश कर रहा था। यह देखकर कि मेरे पास अभी बहुत काम पड़ा है, मैं हड़बड़ी में उसे पूरा करने लगा, पर उस समय मेरी हालत कुछ भी करने लायक नहीं थी, इसलिये सब कुछ एक ओर पटककर मैं माँ को चिट्ठी लिखने बैठ गया। मुझे मालूम था कि गुप्तचर अपने काम पर जाने से पहले रिश्तेदारों और प्रियजनों को चिट्ठियाँ लिखते हैं। लेकिन मैं उस समय बहुत चिन्तित था, मेरा ध्यान उखड़-उखड़ जाता था। पेंसिल से आधा पन्ना लिखकर मैंने उसे फाड़ दिया और अँगीठी में फेंक दिया।

"समय हो गया," घड़ी पर नज़र डालकर होलिन ने मुझसे कहा और उठ गया। बेंच पर ट्रोफी अटैची रखकर उसने बेंच के नीचे से गठरी खींचकर निकाली, उसे खोला और हम लोग तैयार होने लगे।

अन्दर के सूती कपड़ों के ऊपर उसने पतला, ऊनी पाजामा और स्वेटर पहन लिया, फिर गर्म फौजी कमीज और पतलून, ऊपर से उसने हरा कैमुफ्लाश्ज ऑवरॉलूज ओढ़ लिया। उसको देखकर मैंने भी वैसे ही कपड़े पहन लिये। कातासोनोव का ऊनी पाजामा मेरे लिये छोटा था और जाँघों पर उधड़ने लगा था। मैं दुविधा में पड़कर होलिन की ओर देखने लगा।

"कोई बात नहीं," होलिन ने दिलासा देते हुए कहा। "चिन्ता मत करो! अगर फाड़ दोगे, तो नया

निकलवा लेंगे।" कैमुफल ऑवरॉलूज मेरे लिये लगभग ठीक-ठीक था, हाँ, पैंट थोड़े-से ऊँचे थे। पैरों में हमने नाल लगे हुए जर्मन बूट पहने। वे भारी थे और उनकी हमें आदत भी नहीं थी, पर, जैसा होलिन ने समझाया, एतिहात के लिए थे, ताकि उस पार हमारे पदचिन्हों को कोई पहचान न सके। होलिन ने खुद मेरे कैमुफलाश्ज ऑवरॉलूज के फीते बाँधे।

जल्द ही हम लोग तैयार थे : चाकू और 'फ-1' हथगोले हमने कमरबन्द में लटका लिए थे (होलिन ने एक खुद टैंकभेदी भारी 'र.प.ग.-40 हथगोला भी ले लिया था), कारतूसों से भरी हुई पिस्तौलें लिबास के नीचे छिपा रखी थीं। आस्तीनों में छिपी हुई चमकते डायलवाली घड़ियाँ और क़ुतुबनुमा थे। सिगनल पिस्तौलें देख ली थीं, होलिन ने टॉमीगनों की मैगजिनों की जाँच कर ली थी।

हम लोग तैयार हो गये थे, पर लड़का अभी तक सिर के नीचे हाथ रखे लेटा हुआ था और हम लोगों की ओर देख भी नहीं रहा था।

बड़ी जर्मन अटैची से फीके रंग का फटा-सा, रुईदार लड़कों वाला कोट और गहरे स्लेटी रंग के, पैबन्द लगे पैंट, बहुत पुरानी कानोंवाली टोपी, भद्‌दे-से लड़कों वाले बूट निकाल दिये गये थे। पटरे के किनारे पर अन्दर के मोटे सूती कपड़े पड़े हुए थे, पुराने, जगह-जगह से रफू किये गये स्वेटर और ऊनी मोजे, छोटा-सा, पीठ पर लादनेवाला गन्दा थैला, पट्टे और कुछ चिथड़े।

मोटे कनवास के टुकड़े में होलिन ने लड़के के लिये खाने का सामान बाँध दिया—कोई आधे किलोग्राम सॉसेज का टुकड़ा,चरबी के दो टुकड़े, पाव रोटी का बड़ा-सा टकड़ा तथा गेहूँ और रई की रोटियों के कुछ टुकड़े। सॉसेज घर का बना हुआ था, और चर्बी हमारे यहाँ की, फ़ौजी चर्बी नहीं थी। वह थी स्लेटी रंग की और टेढ़ी-मेढ़ी आकृतिवाली। और रोटी भी टेढ़ी-मेढ़ी, घरेलू अँगीठी पर बनी हुई थी।

मैं देखते हुए सोच रहा था कि कैसे छोटी से छोटी बात पहले से सोच ली गई थी।..

सब सामान थैले में भर दिया गया, पर लड़का बुत बना लेटा रहा। होलिन ने चुपके से उसकी ओर देखा, फिर एक भी शब्द बोले बिना सिगनल पिस्तौल को देखने और फिर से मैंगजिन की जाँच करने लगा।

आख़िर लड़का बेंच पर बैठकर बिना किसी हड़बडी के अपनी फौजी वरदी उतारने लगा। गहरे नीले रंग की पतलून के घुटनों पर और पीछे के हिस्से पर दाग़ पड़े हुए थे।

"राल है," उसने कहा, "साफ़ करने को कह देना।"

"ऐसा करते हैं : इसे गोदाम में भेज देते हैं और नई निकलवा लेते हैं," होलिन ने कहा।

"नहीं, इसी को साफ करने को कह देना।"

लड़का जल्दबाज़ी किये बिना ग़ैर फ़ौजी कपड़े पहनने लगा। होलिन ने उसकी मदद की, फिर उसे चारों ओर से देखने लगा। मैं भी देख रहा था : न किसी का लेना, न किसी का देना, बिना घर का भिखारी लड़का, भगोड़ा है— आक्रमण के समय ऐसे लड़के हमें रास्तों में कम नहीं मिले।

लड़के ने जेबों में घरेलू, खुलने-बन्द होनेवाला चाकू और कुछ फटे-पुराने नोट छिपा लिये : साठ-सत्तर जर्मन मार्क। और बस।

"छलाँग लगाकर देखते हैं," होलिन ने मुझसे कहा। खुद की जाँच करने के लिए हम लोगों ने कई छलांग लगाई। लड़के ने भी छलाँग लगाई, हालाँकि उसके पास ऐसी क्या चीजें थीं कि शोर करें?

पुरानी रूसी परम्परा के अनुसार हम लोग जाने से पहले बैठ गये और कुछ मिनट चुपचाप रहे। लड़के के चेहरे पर फिर वहीं बड़ों जैसा गम्भीर भाव और अन्दरूनी तनाव था, जैसा कि छः दिन पहले, जब वह पहली बार मेरे डग-आउट में आया था।

6

आँखों पर सिगनैंलवाली टॉर्चों की लाल राशनी डालकर (जिससे अँधेरे में ज्यादा अच्छी तरह देख सकें) हम लोग नाव की ओर बढ़ने लगे : सबसे आगे मैं, कोई पन्द्रह क़दम पीछे लड़का और उससे भी पीछे होलिन।

मुझे रास्ते में मिलने वाले हर आदमी से बात करके उसका ध्यान बँटाना था जिससे इस बीच लड़का छिप सके : हमारे सिवा अब उसे कोई और देख न ले—होलिन ने मुझे पहले से इस बारे में सख़्ती से आगाह कर दिया था।

दाहिनी ओर से अँधेरे में कमाण्डरों की आवाजें सुनाई पड़ी : "तोपचियो, अपनी-अपनी जगहों पर.. . हमले के लिए तैयार! झाड़ियों से चरमराने की आवाज आई और धीरे-से किसी के गुस्सा होने की आवाजें सुनाई दीं—मेरे और तीसरे बटालियनों के क्षेत्र में झाड़ियों में फैले हुए तोपों मॉर्टरों के पास जवान तैयारियाँ कर रहे थे।

इस फौजी कार्रवाई में हम लोगों के अलावा लगभग दो सौ आदमी भाग ले रहे थे। वे किसी भी क्षण जर्मनों पर टूटकर तूफानी अग्नि वर्षा करते हुए हमारी रक्षा करने को तैयार थे। और उनमें से किसी को भी काम का ख्याल नहीं था कि यहाँ टोह लेने का काम नहीं हो रहा था जैसा कि होलिन को मदद करने वाली टुकड़ियों के कमाण्डरों से कहना पड़ा था।

नाव से कुछ दूरी पर एक सुरक्षा चौकी थी। उस पर दो लोगों का पहरा था, पर होलिन के कहने पर मैंने सुरक्षा चौकियों के कमाण्डर से खन्दक में बस एक आदमी छोड़ देने के लिये कह दिया था—प्रौढ़ , समझदार लांस कार्पोरल द्योमिन को। जब हम नदी के किनारे पहुँच गया, तो होलिन ने मुझसे लांस कार्पोरल से बात करके उसका ध्यान बँटाने के लिये कहा, जिससे इस बीच वह और लड़का चुपचाप नाव में चढ़ सकें। मेरे ख़्याल से ये सारी एहतियातें बेकार थीं, पर होलिन के खफ़ियापन ने मुझे हैरान नहीं, किया : मुझे मालूम था कि बस वह ही नहीं, सभी गुप्तचर ऐसे होते हैं। मैं आगे की ओर चल दिया।

"बस बिना किसी टीका-टिप्पणी के!" रोबदार तरीके से फुसफुसाकर होलिन ने मुझे आगाह किया।

हर कदम पर हिदायतों से मैं ऊब चुका था : मैं बच्चा तो नहीं था, खुद समझता था क्या करना चाहिए। द्योतिन ने, जैसा तय थे, दूर से मुझे आवाज दी; मैं भी उसे जवाब देकर पास आ गया; खन्दक में छलाँग लगाकर मैं ऐसे खड़ा हो गया ताकि वह मुझसे बात करने के लिये मुड़कर पगडण्डी की ओर पीठ

कर लें।

"चलो सिगरेट पीते हैं," मैंने कहा और सिगरेट निकालकर एक खुद ले ली और दूसरी उसे दे दी।

हम लोग उकड़ूँ बैठ गये। वह सीली हुई माचिसों पर तीली रगड़ने लगा; आखिर एक तीली जल गई, वह उसे मेरे पास लाया, फिर खुद भी सिगरेट जला ली। तीली की रोशनी में मैंने देखा कि खन्दक की मुण्डेर के नीचे ताक़ में पुआल पर कोई सो रहा है। जानी-पहचानी लाल किनारीवाली साइड-कैप भी मैंने देख लिया। गहरा कश खींचकर मैंने बिना एक भी शब्द कहे टॉर्च जला ली और देखा कि ताक में कातासोनोव है। वह पीठ के बल लेटा था, चेहरा साइड-कैप से ढका था। मैंने कुछ भी समझे बिना साइड-कैप उठा ली—फीका, खरगोश की तरह नम्र चेहरा; बायीं आँख के ऊपर छोटा-सा, साफ-सुथरा सूराख : गोली का छेद...

"यों ही ऐसी कीमत चुकानी पड़ी," पास खड़े ग्रोमिन ने धीरे-से बड़बड़ाकर कहा, उसकी आवाज जैसे कहीं दूर से आ रही थी। "नाव ठीक करके वे दोनों मेरे साथ बैठकर सिगरेट पी रहे थे। कैप्टन यहाँ खड़े थे और मुझसे बातें कर रहे थे, और यह बाहर जाने लगा। बस अभी खन्दक के ऊपर ही निकला था और धीरे-धीरे नीचे की ओर लुढ़कने लगा था। हमने तो जैसे गोलियों की आवाज भी नहीं सुनी... कैप्टन इसकी ओर भागे, हिलाया : 'कातासोनिच!.. कातासोनिच!..' देखा—पर यह तो मर गया था। कैप्टन ने किसी से भी न कहने को कहा है।.."

इसीलिये किनारे से लौटने पर होलिन मुझे कुछ अजीब-सा लग रहा था।..

"बिना टीका-टिप्पणी के!" नदी की ओर से उसकी आदेशसूचक फुसफुसाहट सुनाई दी।

अब मेरी सब समझ में आ गया : लड़का काम करने जा रहा है; उसे किसी भी हालत में दुःखी नहीं करना है—उसे कुछ भी पता नहीं लगना चाहिए।

खन्दक में से निकलकर मैं धीरे-धीरे पानी की ओर बढ़ने लगा।

लड़का और मैं नाव में बैठ गये। मेरे हाथ में टॉमीगन तैयार थी।

''बराबर से बैठो,'' होलिन ने हम लोगों को बरसाती से ढकते हुए फुसफुसाकर कहा। ''ध्यान रखना कि नाव में झुकाव न हो!''

नाव को घुमाकर वह खुद भी बैठ गया और चप्पू ले लिये। घड़ी की ओर देखकर उसने थोड़ा-सा और इंतजार किया, फिर धीरे-से सीटी बजाई : यह कार्रवाई शुरू होन का सिगनल था।

उसको उसी समय उत्तर मिला : दाहिनी ओर से, अँधेरे में से, जहाँ तीसरे बटालियन के पार्श्व में मशीनगनवाली बड़ी खन्दक में मदद करने वाली टुकड़ियों के कमाण्डर और तोपखाने की निगरानी करने वाले थे। बन्दूक की गोली चलने की आवाज आई।

नाव घुमाकर होलिन ने खेना शुरू कर दिया—जल्द ही किनारा गायब हो गया। ठण्डी, बरसाती रात का धुँध हम लोगों से लिपट गया।

* * *

मैं चेहरे पर होलिन की तालबद्ध, गर्म साँस महसूस कर रहा था। वह बहुत जोर से चप्पू चलाकर

नाव खे रहा था; चप्पुओं से पानी के छपछपाने की आवाज सुनाई दे रही थी। मेरे पास बरसाती में छिपा हुआ लड़का चुपचाप पड़ा था।

सामने दाहिने किनारे पर जर्मन हमेशा क्री तरह गोलियाँ चला रहे थे, और रॉकेटों से अगली पंक्तियों को रोशन कर रहे थे,—बरसात की वजह से चमक उतनी तेज नहीं थी। और हवा भी हमारी ओर थी। मौसम हम लोगों के अनुकूल था।

हमारे किनारे से नदी के ऊपर ट्रेसर गोलियों की बौछार हो रही थी। ऐसी गोलियाँ तीसरे बटालियन के बायें पार्श्व से हर पाँच-सात मिनट बाद छोड़ी जानी थीं : अपने किनारे पर वापस आते समय उन्हें हमे रास्ता दिखाना था।

''शक्कर!'' होलिन ने फुसफुसाकर कहा। हम लोगों ने मुँह में दो-दो शक्कर के टुकड़े रख लिये और लगन से उन्हें चूसने लगे : इससे हमारी आँखों और कानों की संवेदनशीलता बढ़नी थी।

हम लोग अब शायद बीच नदी में थे, जब एकदम सामने मशीनगनें खटखटाने लगी थीं। गोलियाँ सनसना रही थीं और टंकार के साथ छींटे उड़ाते हुए बिल्कुल पास ही पानी में गिर रही थी।

"'म.ग.-34'," फुसफुसाकर लड़के ने बिल्कुल सही-सही बता दिया; वह बहुत भरोसे के साथ मुझसे सटता जा रहा था।

''डर लग रहा है?''

''थोड़ा-थोड़ा,'' उसने मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज में हामी भरी। ''कैसे भी आदत नहीं पड़ती। कुछ परेशानी-सी है.... और खैरात पर जिन्दगी बसर करने की आदत भी नहीं पड़ सकती। ओह, घिन आती है!''

मैंने सोचा कि इस गर्वीले और स्वाभिमानी लड़के के लिये भीख माँगकर खुद को हीन बनाना कितना मुश्किल होगा।

''सुनो,'' याद आने पर मैंने पूछा, ''हमारे बटालियन में एक बोंदरेव है। वह भी गोमेल का है। वह तुम्हारा रिश्तेदार तो नहीं है,''

''नहीं। मेरे कोई रिश्तेदार नहीं हैं। एक माँ है। उसके बारे में भी नहीं मालूम कहाँ है अब......'' उसकी आवाज काँप नहीं थी। ''मेरा कुलनाम सच में तो बुस्लोव है, बोंदरेव नहीं।''

''और नाम भी इवान नहीं है?''

''नहीं, नाम तो इवान ही है। सही है।''

''चुप!....''

होलिन ने अब धीमे-धीमे खेना शुरू कर दिया था—हम किनारे के पास आ गये थे। मैं। अँधेरे में बहुत गहराई तक देखने की कोशिश करने लगा : बारिश की वजह से ट्रेसर रॉकेटों की धुँधली चमकों के सिवाय कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

हम लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। अगले ही पल तला रेत से टकरा गया। होलिन ने फुरती से चप्पू रख दिये और नाव से बाहर कूदकर पानी में खड़े-खड़े नाव के पिछले हिस्से को जल्दी से किनारे की ओर घुमा दिया।



दो मिनट तक हम लोग कान लगाकर सुनते रहे। सुनाई पड़ रहा था कि कैसे बरसात की बूँदें पानी पर, जमीन पर, बिल्कुल भीग गई बरसाती पर पड़ रही थीं। मुझे होलिन की तालबद्ध साँस लेने की आवाज और अपने दिन की धड़कन सुनाई दे रही थी। पर कोई भी सन्देहजनक शोर, आवाज या सरसराहट हमें सुनाई नहीं पड़ी। होलिन ने बिल्कुल मेरे कान के पास साँस लेकर कहा :

"इवान, नाव में रहो! और तुम बाहर उतर आओ और पकड़ लो......"

वह अँधेरे में गोता लगा गया। मैं सावधानी पूर्वक बरसाती में से निकला और पानी में किनारे की रेत पर खड़ा हो गया, टॉमीगन ठीक की और नाव को पकड़कर खींचने लगा। मैंने महसूस किया कि लड़का उठ गया और नाव में मेरे पास खड़ा है।

"बैठ जाओ और बरसाती ओढ़ लो," उसे हाथ से टटोलकर मैंने फुसफुसाकर कहा।

"अब सब एक ही बात है," उसने मुश्किल सुनाई पड़नेवाली आवाज में जवाब दिया।

होलिन अचानक प्रकट हो गया और कुछ पास आकर खुशी भरी आवाज में फुसफुसाकर बोला :

"सब कुछ ठीक-ठाक है....."

पता चला कि वे झाड़ियाँ जहाँ हमें नाव छिपानी थी बहाव के नीचे की ओर बस तीस कदम की दूरी पर थीं।

कुछ मिनट बाद हम लोगों ने नाव छिपा दी और नदी के किनारे-किनारे थोड़ा-सा झुककर बीच-बीच में रूकते और कान लगाकर सुनते हुए सावधानी पूर्वक बढ़ने लगे। जब ट्रेसर रॉकेट कहीं पास ही चमकता तो हम लोग टीले के उभरे हुए भाग के नीचे रेत पर गिरकर बिना हिले मरे हुओं की तरह लेट जाते। मैंने कनखियों से लड़के की ओर देखा—उसके कपड़े बरसात के कारण काले पड़ गये थे। मैं और होलिन वापस जाकर कपड़े बदल लेंगे, और वह.......

अचानक होलिन ने चाल धीमी की और लड़के का हाथ पकड़कर पानी में दाहिनी ओर चला गया। सामने रेत पर कुछ चमक रहा था। "हमारे गुप्तचरों की लाशें," मैंने सोचा।

"यह क्या है?" लड़के की आवाज सुनाई दी।

"जर्मन हैं," होलिन ने जल्दी से फुसफुसाकर से कहा और उसे आगे ले गया। "हमारे स्नाइपर का कारनामा है।"

"ओह, दुष्ट! अपने लोगों तक को नंगा कर देते हैं!" मुड़कर देखते हुए घृणा से लड़का बुड़बुडाया।

मुझे लगा कि हम लोग सालों से चल रहे थे और हमें बहुत पहले ही पहुँच जाना चाहिए था। पर मुझे याद आया कि उन झाड़ियों से, जहाँ हमने नाव छिपाई थी, इन शवों तक तीन सौ मीटर के करीब दूरी थी। और नाले तक पहुँचने के लिए अभी इतना ही और चलना था।

जल्द ही हमें एक और शव दिखाई दिया। वह बिल्कुल सड़ गया था और दूर से ही उससे उबकाई पैदा करने वाली बदबू आ रही थी। बाँयें किनारे से बरसाती आसमान को भेदते हुए हमारी पीठ के पीछे एक बार फिर ट्रेसर गोलियों की बौछार छूटी। नाला कहीं पास ही था; पर हम उसे देख नहीं रहे थे। शायद इसलिये कि उसने नीचे के पूरे हिस्से में सुरंगे बिछी हुई थीं, उसके किनारे खाइयों से घिरे थे और चारों ओर कड़ा पहरा था। जर्मनों को शायद पूरा विश्वास था कि कोई भी यहाँ आने की जुर्रत नहीं करेगा।

यह नाला उसके लिये एक अच्छा खासा फन्दा था, जिसे उसमें देख लें। और पूरा हिसाब-किताब इसी बात पर था कि लड़का सही-सलामत पार कर ले।

होलिन आखिर रुका और हमें बैठने को कहकर खुद आगे चला गया।

जल्द ही वह वापस आ गया और मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाज में आदेश दिया :

"मेरे पीछे आओ!"

हम लोग और तीस कदम आगे बढ़े और टीले के उभरे हुए हिस्से के नीचे उकड़ूँ बैठ गये।

"नाला हम लोगों के सामने है, सीधे!" कैमुफ्लाश्ज ऑवरॉलूज की आस्तीन चढ़ाकर होलिन ने घड़ी के चमकते डायल की ओर देखा और लड़के से फुसफुसाकर कहा : "हम लोगों के हिसाब से अभी चार मिनट बाकी हैं। क्या हाल है?"

"ठीक है।"

थोड़ी देर हम लोग अँधेरे को सुनते रहे। लाश और सीलन की बदबू आ रही थी। हमारी दायीं ओर तीन मीटर की दूसरी पर रेत पर दिखाई देने वाली एक लाश होलिन को दिशा जानने में मदद कर रही थी।

"ठीक है, अब मैं जा रहा हूँ," लड़के ने कहा।

"मैं तुम्हें छोड़ आता हूँ," अचानक होलिन ने फुसफुसाकर कहा, "नाले पर, बस थोड़ी दूर तक ही।"

यह तो योजना के मुताबिक नहीं था!

"नहीं!" लड़के ने विरोध किया। "अकेला ही जाऊँगा! तुम बड़े हो-तुम्हारे साथ पकड़ लेंगे।"

"मैं चलूँ?" मैंने हिचकिचाहट से पूछा।

"बस नाले पर," होलिन ने फुसफुसाकर कहा। "वहाँ मिट्टी है–निशान छोड़ दोगे। मैं ले चलूँ

तुम्हें!"

"मैंने कह दिया!" लड़के ने जिद और गुस्से से कहा। "मैं खुद ही जाऊँगा!"

वह मेरे पास ही खड़ा था, छोटा-सा, दुबला पतला। मुझे लगा वह अपने पुराने कपड़ों में पूरा का पूरा काँप रहा था। पर हो सकताा है, यह मुझे बस लग रहा हो.....

"फिर मिलेंगे," उसने होलिन से कहा।

"फिर मिलेंगे!" (वे लोग एक दूसरे को गले लगा लिये और होलिन ने उसे चूमा।) "बस सावधान रहना! अपना ध्यान रखना! अगर हमारा क्षेत्र बदल गया तो फ़्योदोरोव्का में इंतजार करना!"

"फिर मिलेंगे," लड़के ने मुझसे कहा।

"फिर मिलेंगे!" अँधेरे में उसका छोटा-सा, दुबला-पतला हाथ ढूँढ़कर उसे जोर से दबाते हुए चिन्ता से फुसफुसाकर मैंने कहा।

उसे चूमने की मेरी इच्छा थी, पर एकदम से हिम्मत नहीं कर पाया। उस समय मैं बहुत चिन्तित हो रहा था। उससे पहले मैंने मन ही मन करीब दस बार दोहराया : "फिर मिलेंगे!"—ताकि छः दिन पहले की तरह से फिर न बक दूँ :

"अलविदा!"

इससे पहले कि मैं उसे चूमना हिम्मत कर पाऊँ वह चुपचाप अँधेरे में गायब हो गया।



7

मैं और होलिन छिपकर टीले के उभरे हुए हिस्से की आड़ में उकड़ूँ बैठ गये। उसका किनारा हमारे सिरों तक आ रहा था। हम कान लगाकर सुनने लगे। पानी बहुत धीमे-धीमे, तालबद्ध ढंग से बरस रहा था,—पतझड़ की ठण्डी बरसात, लग रहा था, कभी खत्म नही होगी। नदी के पानी से हड्डियों गलानेवाली ठण्ड और नमी आ रही थी। हम लोगों के अकेले रह जाने के बाद लगभग चार मिनट निकल गये; उस ओर से जहाँ लड़का गया था पैरों की आवाज और धीमी, अस्पष्ट,

कंठ्य आवाजें सुनाई दीं।

"जर्मन!...."

होलिन ने मेरा कन्धा दबाया, पर मुझे सचेत करने की जरूरत नहीं थी—मैंने, हो सकता है, उससे पहले ही सुन लिया था और टॉमीगन को कसके पकड़कर और हाथ में हथगोला दबाये पूरा सुन्न हो गया था।

कदमों की आवाज पास आती जा रही थी। अब पहचाना जा सकता था कि कैसे कुछ लोगों के पैरों के नीचे कीचड़ छपछपाया। मेरा गला सूख गया था और दिल पागल की तरह धक-धक कर रहा था।

"Verfluchtes Wetter! Hohl es der Teufel...."*

"Halte's Maul, Otto!.... Links halten!...."**

वे लोग इतने पास-से निकले कि ठण्डे कीचड़ के छींटे मेरे मुँह पर छिटक आये। कुछ ही क्षणों में ट्रेसर रॉकेट की चमक में बरसात की पतली-सी धुँध में हमने उन्हें देखा—वे लम्बे-चौड़े थे (हो सकता है, मुझे ऐसा लगा हो क्योंकि मैं उन्हें नीचे से देख रहा था), लोहे के टोप और घुटनों तक के बूट पहने थे—ठीक वैसे ही जैसे मैं और होलिन पहने थे। तीन लोग फौजी बरसातियाँ पहने थे और चौथा बरसात के कारण चमक रहा लम्बा फौजी ऑवरकोट, जो कमर पर बेल्ट से बँधा था और जिसमें पिस्तौलदान लटका था। टॉमीगन उनके सीनों पर टँगी थी।

वे लोग चार थे—एस.एस. फौजों की गश्त, जिनके पास से अभी-अभी गोमेल शहर का बारह साल का इवान बुस्लोव निकला था, जिसे हमारी टोही दस्तावेजों में बोंदरेव के कुलनाम से जाना जाता था।

रॉकेट की काँपती हुई रोशनी में जब हमने उन्हें देखा, वे लोग हमसे दस कदम की दूरी पर रुककर पानी की ओर उतरने जा रहे थे। साफ़ सुनाई पड़ रहा था कि कैसे वे रेत पर कूदे और उन झाड़ियों की ओर बढ़ने लगे जहाँ हमने नाव छिपाई थी।

होलिन से ज्यादा मुझे कठिनाई हो रही थी। मैं गुप्तचर नहीं था, लड़ाई के पहले दिनों से मैं लड़ ही रहा था। जिन्दा और हथियारबन्द दुश्मन को देखते ही मुझे लड़ाई के समय बहुत बार आजमाये हुए सिपाही के जोश ने आ घेरा। मुझे इच्छा महसूस हुई—सही कहा जाये तो जरूरत—जल्दी से उन्हें मार दूँ! मैं उन्हें गोलियों की बौछार से दबा देता! "मार दूँ उन्हें!"—टॉमीगन घुमाते समय मैं शायद किसी और बात के बारे में नहीं सोच रहा था। पर मेरी जगह होलिन सोच रहा था। मेरी गतिविधियाँ देखकर उसने मेरा कन्धा जैसे शिकंजे में दबाया,—होश आने पर मैंने टॉमीगन नीचे कर ली।

"वे लोग नाव देख लेंगे!" जैसे ही पैरों की आवाज दूर हो गई अपना कन्धा मसलते हुए फुसफुसाकर मैंने कहा।

होलिन चुप रहा।

"कुछ करना चाहिए," थोड़ी देर चुप रहकर मैंने परेशनी से फिर फुसफुसाकर कहा। "अगर वे नाव देख लें..."

"अगर!..." क्रोधोन्मत्त होलिन ने मेरे चेहरे पर साँस छोड़ी। मैंने महसूस किया कि वह मेरा गला

तक घोंट सकता है। "और अगर लड़के को पकड़ लें तो?! तुम सोच क्या रहे हो, यहाँ उसे अकेला छोड़ने की?... तुम हो क्या : नीच, सूअर या बस बेवकूफ़?..."

"बेवकूफ़," मैंने सोचकर कहा।

"शायद तुम्हारी नसें कमज़ोर हैं," होलिन ने कहा। "लड़ाई खत्म हो जायेगी तो इलाज करवाना पड़ेगा।....."

मैं हर मिनट इंतज़ार करते हुए कि नाव मिलने पर अभी जर्मनों की चिल्लाहट सुनाई देगी तनाव के साथ कान लगाकर सुन रहा था। बाँयीं ओर मशीनगन की गोलियों की आवाज सुनाई दी, उसके बाद–दूसरी की, बिल्कुल हमारे ऊपर, और फिर से खामोशी में बरसात का तालबद्ध शोर सुनाई देने लगा। नदी के किनारे की पूरी लम्बाई पर कभी इधर तो कभी उधर ट्रेसर रॉकेट ऊपर उड़ रहे थे, चमककर चिंगारियाँ फेंक रहे थे, छनछना रहे थे और जमीन पर पहुँचने से पहले बुझ रहे थे।

उबकाई पैदा करनेवाली लाश की बदबू न जाने क्यों बढ़ गई थी। मैं थूकता जा रहा था और मुँह से साँस लेने की कोशिश कर रहा था, पर इससे कम मदद मिली।

मुझे सिगरेट पीने की बहुत इच्छा हो रही थी। जिन्दगी में कभी इतनी इच्छा सिगरेट पीने की नहीं हुई थी। पर मैंने बस सिगरेट निकालकर उँगलियों से उसे मसलते हुए सूँघा।

हम लोग जल्द ही बिल्कुल भीग गये थे और ठण्ड से काँप रहे थे पर पानी था कि बन्द ही नहीं हो रहा था।

"नाले में मिट्टी है, उसका नाश हो!" अचानक होलिन ने फुसफुसाकर कहा। "अभी अच्छी मूसलाधार बारिश हो और सब धो दे...."

वह सारे समय लड़के के बारे में सोच रहा था और मिट्टी से भरा नाला, जहाँ पैरों के निशान रह जाते, उसे परेशान कर रहा था। मैं समझ गया उसकी परेशानी कितनी ठोस थी : अगर नदी के किनारे से लेकर अगली पंक्तियाँ पार करते हुए छोटे पैरों के ताज़े निशान जर्मन देख लेंगे तो इवान का पीछा करने वालों का दल लगा दिया जायेगा। हो सकता है कुत्तों के साथ। एस. एस. रेजिमेंटों में लोगों का शिकार करने के लिये सिखाये हुए काफ़ी कुत्ते थे।

मैं एक सिगरेट चबाने लगा। कुछ अच्छा उसमें नहीं था, पर मैं चबाता रहा। होलिन ने शायद सुन लिया और पूछा :

"तुम यह क्या खा रहे हो?"

"सिगरेट पीने की इच्छा है–मरा जा रहा हूँ!" मैंने गहरी साँस लेकर कहा।

"और माँ के पास जाने की इच्छा नहीं है?" होलिन ने ताना मारते हुए पूछा। "मेरी इच्छा तो माँ के पास जाने की है! बुरा न होता है, क्यों?"

हम लोगों ने भीगे, ठण्ड से काँपते हुए और कान लगाकर सुनते हुए बीस मिनट तक और इंतज़ार किया। बर्फ़-सी गीली क़मीज़ पीठ से चिपक गई थी। बरसात धीरे-धीरे बर्फ़ में बदलती गई–मुलायम, गीली बर्फ़ गिरती, पतली पर्त के रूप में रेत को ढक लेती और पिघल जाती।

"लगता है, निकल गया वह," आख़िर होलिन ने आराम से साँस ली और उठ गया।

थोड़ा झुककर और टीले के उभरे हुए हिस्से से बिल्कुल सटकर चलते हुए हम लोग नाव की ओर बढ़ने लगे; बीच-बीच में हम रुकते और कान लगाकर सुनते जाते थे। मुझे पूरा विश्वास था कि जर्मनों ने हमारी नाव देख ली है और अब झाड़ियों में घात लगाये बैठे हैं। पर होलिन से यह बात कहने की हिम्मत नहीं कर पायाः मुझे डर था कि वह मेरी हँसी उड़ायेगा।

हम लोगों ने अँधेरे में नदी के किनारे-किनारे छिपकर चलते-चलते फिर से अपने गुप्तचरों की लाशों से टकराये थे। हमने उनसे अभी मुश्किल से पाँच ही क़दम आगे बढ़ाये थे कि होलिन रुक गया, हाथ से पकड़कर मुझे अपनी ओर खींचा और मेरे कान में फुसफुसाकर कहा :

"तुम यहीं रुको। मैं अकेले नाव के लिये जाता हूँ, ताकि कहीं दोनों न फँस जायें। जब मैं पास आ जाऊँ तो जर्मन में आवाज दोगे। धीरे-धीरे!.... अगर अचानक मैं पकड़ा जाऊँ तो शोर होगा–उस पार तैरकर चले जाना। और अगर एक घण्टे बाद न लौटूँ तो भी तैरकर चले जाना। तुम तो पाँच बार इधर से उधर तैर सकते हो न?" उसने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"तैर सकता हूँ," मैंने काँपते हुए गले से उसकी बात की पुष्टि की। "और अगर तुम्हें घायल कर दिया तो?"

"यह मुम्हारे सोचने की बात नहीं है। ज़्यादा मत सोचा करो।"

"नाव के पास नदी के किनारे-किनारे जाने से बेहतर है कि नदी में तैरकर जाया जाये," मैंने कुछ अविश्वास से कहा। "मैं जा सकता हूँ......."

"मैं शायद ऐसा ही करूं...... और तुम किसी भी हालत में कुछ करने की मत सोचना! अगर तुम्हें कुछ हो गया तो हमें खूब डाण्ड पड़ेगी। समझे?"

"हाँ, पर अगर......"

"बिना किसी 'अगर' के!..... तुम अच्छे आदमी हो, गाल्त्सेव," अचानक होलिन ने फुसफुसाकर कहा, "पर कमज़ोर नसोंवाले। हमारे काम में यह सबसे खतरनाक चीज़ है।

वह अँधेरे में चला गया, और मैं इंतज़ार करने के लिये रह गया। पता नहीं कितनी देर यह कष्टदायक इंतज़ार मैंने किया : मैं ठण्ड में इतना जम गया था और इतना परेशान था कि घड़ी देखने की सोच भी नहीं पाया। ज़रा-सा भी शोर न करने की कोशिश करते हुए मैं अपने हाथ हिला रहा था और उठ-बैठ रहा था, जिससे थोड़ी-सी गर्मी आ सके। थोड़ी-थोड़ी देर में मैं रुकता और कान लगाकर सुनता जाता था।

आखिर मुश्किल से सुनाई पड़ने वाली पानी की छप-छप सुनकर मैंने हाथ मुँह के पास ले जाकर फुसफुसाकर कहा :

"हाल्ट...... हाल्ट......"

"चुप, शैतान! यहाँ आओ।......"

सावधानी से पैर उठाते हुए मैंने कुछ क़दम बढ़ाये, बर्फ़ीली जकड़न से मेरे पैर दबाते हुए ठण्डा पानी जूतों में भर गया।

"वहाँ नाले के पास सब शान्त है?" सबसे पहले होलिन ने पूछा।

"सब शान्त है।"

"देख ही रहे हो, कुछ भी नहीं हुआ, सब ठीक है," उसने खुशी से फुसफुसाकर कहा। "नाव में बैठो," उसने मुझसे टॉमीगन लेकर कहा, और जैसे ही मैं नाव में घुसा उसने बहाव से उल्टी दिशा में खेना शुरू कर दिया।

नाव में बैठकर मैंने बूट उतारे और उनमें से पानी निकालने लगा।

बर्फ़ के बड़े गुच्छे गिरते और नदी को थोड़ा-सा छूकर पिघल जाते। बायें किनारे से फिर ट्रेसर गोलियों की बौछार आई। वह बिल्कुल हमारे सिर के ऊपर से गुज़री। पलटना चाहिए था पर होलिन बहाव से उल्टी दिशा में ही नाव चलाये जा रहा था।

"तुम किधर खे रहे हो?" समझ में ने आने पर मैंने पूछा।

कोई जवाब न देकर वह फुरती से चप्पू चलाता रहा।

"हम लोग कहाँ जा रहे हैं?"

"यह लो, थोड़ा गर्म हो लो!" उसने चप्पू छोड़कर मेरी ओर छोटा-सा चपटा फ़्लास्क फेंका।

सुन्न पड़ी उँगुलियों से मैंने मुश्किल से ढक्कन खोला और घूँट भर लिया-वोद्का की सुखद गर्माहट ने मेरा गला जला दिया, अन्दर गर्मी हो गई, पर मैं पहले की तरह ही काँप रहा था।

"आखिर तक पी लो," धीरे-से चप्पू चलाते हुए होलिन ने फुसफुसाकर कहा।

"और तुम?"

"मैं किनारे पर जाकर पी लूँगा। तुम पिलाओगे?"

मैंने और एक घूँट भरा, फिर अफ़सोस के साथ इस बात का यक़ीन होने पर कि फ़्लास्क में कुछ भी नहीं बचा है, मैंने उसे जेब में डाल लिया।

"और, हो सकता हो, उसने अभी तक पार न किया हो?" अचानक होलिन ने कहा। "हो सकता है, अभी लेटा हो और इंतज़ार कर रहा हो... इस समय उसके साथ होने की मेरी कितनी इच्छा है!......"

मुझे समझ में आ गया कि हम लोग वापस क्यों नहीं जा रहे हैं। हम लोग नाले के सामने ही थे, जिससे कुछ होने पर फिर दुश्मन के किनारे पर उतर सकें और लड़के को मदद कर सकें। और उधर से अँधेरे से नदी पर लगातार गोलियों की बौछार हो रही थी। जब गोलियाँ सनसनाते और छींटे उड़ाते हुए नाव के पास ही पानी में गिर पड़ती तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते। ऐसे अँधेरे में गीली बर्फ़ को मोटी पर्त के पीछे हमें देख पाना मुश्किल ही था, पर पानी में चारों ओर से गोलियों की बौछार के बीच, खुली जगह में होना बिल्कुल भी प्रिय नहीं था, जहाँ ऐसा कुछ भी नहीं था जिसके पीछे छिपा जा सके। होलिन ने मुझे उत्साहित करते हुए फुसफुसाकर कहा :

"ऐसी मूर्खता भरी गोलियों से तो कोई मूर्ख या कोई डरपोक ही शहीद हो सकता है! यह ध्यान रखो।"

कातासोनोव न मूर्ख था न डरपोक। मुझे इसमें कोई शक नहीं था, पर होलिन से मैंने कुछ कहा नहीं।

"और चिकित्सा-सहायक तुम्हारी सुन्दर है!" थोड़ी देर रूककर उसने कहा। साफ़ था कि वह मेरा

ध्यान बँटाना चाह रहा था।

"हाँ, सुन्दर है," दाँत किटकिटाते हुए और चिकित्सा-सहायक के बारे में बहुत कम सोचते हुए मैंने सहमति प्रकट की। चिकित्सा-चौकी का गर्म डग-आउट और अँगीठी मुझे याद आ गयी-बढ़िया लोहे की अँगीठी!....

बाँयें किनारे से तीन बार ट्रेसर गोलियों की बौछार आ चुकी थी। वह हमें लौटने का संकेत दे रही थी, और हम लोग थे कि दाँयें किनारे के ही पास पानी में घूम रहे थे।

"अब पार कर चुका होगा," आखिर होलिन ने कहा और बहुत तेज़ी से चप्पू चलाकर नाव घुमाने लगा।

वह अँधेरे में भी सही दिशा पकड़े रहा। हम लोग मेरे बटालियन के दाँयें पार्श्व में मशीनगनवाली बड़ी खन्दक के पास पहुँचे, जहाँ सुरक्षा प्लाटून का कमाण्डर था।

हम लोगों का इंतज़ार हो रहा था, फ़ौरन ही धीमी पर रोब भरी आवाज सुनाई पड़ी : "खड़े रहो! कौन आ रहा है?..." मैंने संकेत-शब्द कहा-मुझे आवाज़ से पहचान लिया और दूसरे ही क्षण हम लोग किनारे पर पहुँच गये।

मैं बिल्कुल थका हुआ था और हालाँकि मैंने कोई दो सौ ग्राम वोद्का पी ली थी, फिर भी पहले की तरह ही काँप रहा था और अकड़े हुए पैरों से मुश्किल से आगे बढ़ पा रहा था। दाँतों को न किटकिटाने की कोशिश करते हुए मैंने नाव खींचकर लाने और उसे छिपाने का आदेश दिया। मेरे प्रियपात्र सेक्शन कमाण्डर ज़ूयेव के साथ हम लोग नदी के किनारे-किनारे बढ़े। वह थोड़ा बेतकल्लुफ़ पर बहुत बहादुर सार्जेंट था। वह आगे-आगे चल रहा था।

"कामरेड सीनियर लेफ़्टिनेण्ट, पर 'ज़बान' कहाँ है?" अचानक हमारी ओर घूमकर उसने हँसकर पूछा।

"कौन 'ज़बान'?"

"कहते हैं कि आप लोग 'ज़बान' पकड़ने गये थे।"

मेरे पीछे चलते हुए होलिन ने अचानक मुझे धक्का दिया और ज़ूयेव की ओर बढ़ गया।

"'ज़बान' तुम्हारे मुँह में है! समझे?" उसने तेज़ी से एक-एक शब्द अलग-अलग बोलते हुए कहा। मुझे लगा उसने अपना भारी-भरकम हाथ ज़ूयेव के कन्धे पर रख दिया, या शायद उसका कॉलर ही पकड़ लिया हो : होलिन बहुत ज़्यादा मुँहफट और गुस्सैल था—वह ऐसा कर सकता था। "'ज़बान' तुम्हारे मुँह में है," धमकाते हुए उसने दोहराया। "और उसे वहीं रखना। तुम्हारे लिये ही यह बेहतर होगा!... और अब चौकी पर लौट जाओ।..."

जैसे ही ज़ूयेव हम लोगों से कुछ पीछे रह गया होलिन ने सख्ती से और जान-बूझकर जोर से कहा :

"तुम्हारे बटालियन में बातूनी बहुत हैं, गाल्त्सेव! और यह हमारे काम में सबसे खतरनाक चीज़ है...."

"और तुम भी क्या चीज़ हो! बटालियन छोड़ दिया और खुद उस किनारे 'ज़बान' पकड़ने चल दिये! शिकारी कहीं के!"

* * *



डग-आउट में आते ही अमने जल्दी से अँगीठी में आग जलाई और कपड़े उतारकर तौलियों से रगड़-रगड़कर बदन को पोंछा।

कपड़े बदलकर सूखे कपड़ों के ऊपर फ़ौजी ऑवरकोट पहनकर होलिन मेज़ के पास बैठ गया और अपने सामने नक़्शा फैलाकर ध्यान से उसे देखने लगा। डग-आउट में पहुँचकर वह अचानक कुछ मुरझा-सा गया, उसकी शक्ल काफ़ी थकी हुई और परेशान-सी लग रही थी।

मैंने मेज़ पर मांस का टिन, चरबी, नमकीन खीरोंवाली पतीली, रोटी, दही की बोतल और वोद्का से भरा फ़्लास्क रख दिये।

''और अगर मालूम हो जाता कि इस समय वह क्या कर रहा है?!'' अचानक होलिन ने उठते हुए कहा। ''और वहाँ क्या हो रहा है?''

''क्यों क्या हुआ?''

''उस किनारे पर इस गश्त को आधे घंटे बाद निकलना चाहिए था। समझ रहे हो?.....मंतलब या तो जर्मनों ने गश्ती कार्यक्रम में कुछ अदल-बदल की है, या हम लोग कहीं गड़बड़ा गये। और लड़का अपनी जिन्दगी से हाथ धो सकता है। हम लोगों ने तो सब मिनटों के हिसाब से तय किया था।''

''पर वह तो निकल गया था। हमने कितनी देर इंतज़ार किया था—एक घण्टे से कम नहीं—और सब जगह शान्ति थी।''

''कहाँ निकल गया था?'' होलिन ने झुँझलाकर कहा। ''अगर जानना चाहते हो तो उसे पचास किलोमीटर से ज्यादा चलना है। इसमें से बीस किलोमीटर उसे सुबह होने से पहले पार करने हैं। और हर क़दम पर उसको पकड़ा जा सकता है। और भी बहुत कुछ घट सकता है!... खैर छोड़ो, बातों से कुछ नहीं होने का!...'' उसने मेज़ पर से नक़्श हटा दिया। ''चलो!''

मैंने दो प्यालों में वोद्का ढाल दी।

''हम लोग जाम नहीं टकरायेंगे,'' एक प्याला उठाकर होलिन ने कहा।

''ओह कातासोनिच, कातासोनिच....'' नाक-भौं सिकोड़कर और गहरी साँस लेकर फटी हुई आवाज़ में होलिन ने कहा। ''तुम्हें तो क्या! पर मेरी तो उसने जिन्दगी बचायी थी।....''

उसने एक साँस में पीकर काली रोटी सूँघी, फिर और वोद्का माँगी।

खुद भी पूरी पीकर मैंने दूसरी बार ढाली-अपने लिये थोड़ी-सी और उसे प्याला भरकर।

प्याला लेकर वह बेंच की ओर मुड़ गया जहाँ लड़के के सामान से भरी अटैची रखी थी ओर धीरे-से कहाः

"इसलिये कि तुम लौट आओ और फिर कभी न जाओ। तुम्हारे भविष्य के लिये!"

हम लोगों ने जाम टकराये और पीने के बाद खाने लगे। कोई शक नहीं कि उस समय हम दोनों ही लड़के के बारे में सोच रहे थे। अँगीठी दोनों ओर से व ऊपर से चटक-लाल हो गई थी, उससे तेज गर्मी आ रही थी। हम लोग लौट आये थे और खतरे से बाहर गर्मी में बैठे थे। और वह शत्रु के किनारे पर बर्फ़ और अँधेरे में मौत से कन्धा मिलाकर चल रहा था.....

बच्चों के लिये कभी कोई विशेष प्यार मेरे मन में नहीं रहा, पर यह लड़का-हालाँकि मैं उससे बस दो बार ही मिला था,—मेरे लिये इतना निकट का और इतना प्रिय हो गया था कि मैं उसके बारे में चिन्ता किये बिना नहीं रह सका।

"तीन साल से लड़ाई में हो?' सिगरेट जलाते हुए उसने पूछा। "मैं भी तीन साल से हूँ.... पर मौत के सामने-इवान की तरह!—हम, हो सकता है, अभी पड़े ही नहीं... तुम्हारे पीछे तो बटालियन, रेजिमेण्ट, पूरी फ़ौज है..... पर वह अकेला है!" अचानक गुस्से से होलिन ने कहा। "बच्चा है वह!.... और तुमने उसे दो पैसे का चाकू देने में कंजूसी बरती!..."

"कंजूसी बरती!...." नहीं, मैं दे नहीं पाया; शहीद हो गये मित्र की एकमात्र यादगार, उसकी बची हुई एकमात्र व्यक्तिगत चीज़ को मुझे किसी को भी देने का कोई अधिकार नहीं था।

पर मैंने अपना वचन पूरा किया। डिवीजन के वर्कशॉप में उराल का एक प्रौढ़ सार्जेंट बहुत होशियार फ़िटर था। वसन्त में उसने कोत्या के चाकू की मूठ बनाई थी, अब मैंने उससे ठीक वैसी ही मूठ बनाने का और उसमें नया फ़ौजी चाकू लगाने का अनुरोध किया जो मैंने उसे दिया था। मैंने उससे बस चाकू बनाने का अनुरोध ही नहीं किया, बल्कि एक ट्रोफ़ी डिब्बा, जिसमें फ़िटिंग के काम के औज़ार थे—शिंकजा, बरमे, छेनियाँ—मैंने उसे भेंट कर दिया। मुझे तो उनकी कोई जरूरत नहीं थी, पर वह उन्हें देखकर बच्चों की तरह खुश हो गया।

उसने चाकू की मूठ बहुत मेहनत से और बहुत अच्छी बनायी थी—दोनों चाकुओं में बस इतना ही अन्तर था कि कोत्या के चाकू पर खरोंच के निशान थे और उसकी मूठ पर नाम और कुलनाम के पहले अक्षर खुदे हुए थे—"क. ख."। मैं सोच रहा था कि लड़का इतनी सुन्दर मूठवाला वास्तविक फ़ौजी चाकू पाकर कितना खुश होगा। मैं उसको समझ रहा था : मैं खुद भी तो थोड़े दिन पहले किशोर ही था।

यह नया चाकू मैं हमेशा पेटी में बाँधकर घूमता था, जिससे होलिन या लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल ग्रिज़्नोव से मिलते ही उन्हें दे दूँ। यह सोचना तो मूर्खता ही था कि मैं खुद कभी इवान से मिल पाऊँगा। कहाँ है अब वह?—यह तो मैं सोच भी नहीं सकता, हालाँकि अक्सर उसे याद करता था।

दिन बहुत जोशीले थे : हमारी फ़ौज की डिवीजनों ने द्नेपर पार कर ली थी, और दाहिने किनारे पर सफल लड़ाइयाँ जारी कर रखी थीं।...

चाकू का मैं प्रायः प्रयोग न करता था; बस एक बार आमने-सामने की लड़ाई में मैंने चाकू चला दिया था, और अगर वह न होता तो हैमबर्ग के एक मोटे, भारी-भरकम लांस कार्पोरल ने फावड़े से मेरा सिर ही फोड़ दिया होता।

जर्मनों ने जी तोड़ मुकाबला किया। आठ दिनों की भयंकर आक्रमणकारी लड़ाइयों के बाद हमें रुकने का आदेश मिला, और तभी, नवम्बर के शुरू में, एक साफ़ और ठण्डे दिन में, ठीक त्योहार से पहले मैं लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल ग्रिज़्नोव से मिला।

वह औसत क़द का था; उसका बड़ा-सा सिर मोटे-ताजे धड़ पर रखा हुआ था; उसने फ़ौजी ऑवरकोट और कानोंवाली टोपी पहन रखी थी। दायाँ पैर थोड़ा घसीटते हुए, जो फ़िनलैण्ड के विरुद्ध हुई लड़ाई में घायल था, वह रास्ते के किनारे-किनारे इधर-उधर टहल रहा था। जब मैं पेड़ों के झुरमुट से बाहर निकला, जहाँ मेरा बचाखुचा बटालियन तैनात था, उसे दूर से ही देखकर पहचान गया। ''मेरा बटालियन''—अब मैं पूरे आधार के साथ ऐसा कह सकता था : नदी पार करने से पहले मुझे बटालियन के कमाण्डर के पद पर पक्का कर दिया गया था।

पेड़ों के झुरमुट में, जहाँ हम लोगों ने अपना पड़ाव डाला था, शान्ति थी; पाले से सफ़ेद हुई पत्तियों ने ज़मीन ढक ली थी। घोड़े की लीद और पेशाब की बदबू फैली हुई थी। मोर्चे के इस हिस्से में आक्रमण करने वाली टुकड़ियों में कज़्ज़ाकों की गार्ड्स कोर थी। और इस झुरमुट में कज़्ज़ाकों ने पड़ाव डाला था। घोड़ों और गायों की बू से मुझे हमेशा अभी-अभी थन से निकाले गये दूध और ताज़ी गर्म रोटी की खुशबू की याद आती है। अब भी मुझे अपना गाँव याद आ गया जहाँ बचपन में हर गर्मियों में मैं अपनी छोटी-सी, दुबली-पतली, बेहद प्यार करने वाली दादी के पास जाता था। यह सब कुछ अभी ही घटित हुआ, पर अब मुझे लग कि यह बहुत दूर और कभी दोहराया जाने वाला नहीं है, जैसे कि लड़ाई से पहले की सभी बातें......

जैसे ही मैं झुरमुट से बाहर आया बचपन की यादें खत्म हो गई। रास्ता जली हुई, टूटी हुई और छोड़ी गई जर्मन गाड़ियों से भरा पड़ा था। मारे गये जर्मन अलग-अलग मुद्राओं में रास्ते में, गड्ढों में पड़े हुए थे। खन्दक के खुदे हुए मैदानों में जगह-जगह लाशों के भूरे ढेर दिखाई पड़ रहे थे।

रास्ते में, लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल ग्रिज़्नोव से पचास मीटर की दूरी पर, उनका ड्राइवर और लेफ़्टिनेण्ट अनुवादक जर्मन हेडक्वार्टर की बख्तरबन्द ट्रक की बॉडी में किसी काम में व्यस्त थे। और भी चार लोग—मैं उनकी पदवियाँ अच्छी तरह नहीं देख पया—रास्ते के उस ओर खन्दक़ों में चढ़-उतर रहे थे। लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल ने उनसे कुछ चिल्लाकर कहा, पर मैं हवा की वजह से नहीं सुन सका।

मेरे पास आने पर ग्रिज़्नोव ने मेरी ओर चेचक के दागोंवाला साँवला, मांसल चेहरा घुमाया और कुछ आश्चर्य और खुशी भरी आवाज़ में बोला।

''तुम जिन्दा हो, गाल्त्सेव?!''

''जिन्दा हूँ! मेरा क्या हो सकता है?'' मैंने मुस्कुराकर कहा। ''सलाम!''

''सलाम! अगर जिन्दा हो तो—सलाम!''

मैंने अपनी ओर बढ़े हुए उसके हाथ से हाथ मिलाया और चारों ओर देखा। फिर इस बात सक

यक़ीन होने पर कि ग्रिज़्नोव के सिवाय मुझे कोई नहीं सुनेगा मैंने उससे कहा :

"कामरेड लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल, पूछने की इजाज़त दें—इवान लौट आया क्या?"

"इवान?...... कौस-सा इवान?"

"अरे..... लड़का, बोंदरेव।"

"और तुम्हें इससे क्या मतलब, लौट आया है या नहीं?" उसने नाराज़गी से भौंहें सिकोड़ते हुए पूछा और काली, चालाक-सी आँखों से मेरी ओर देखा।

"मैं उसे उस पार छोड़कर आया था।...."

"इससे क्या मतलब कौन किसको उस पार छोड़ आया था! हर आदमी को बस वहीं जानना चाहिए, जो उसके जानने के लिये है। यही फ़ौज का नियम है, और गुप्तचरों के काम के लिए ख़ास तौर पर!"

"पर मैं तो काम की वजह से पूछ रहा हूँ। हाँ, व्यक्तिगत काम है... मेरी आपसे एक प्रार्थना हैं। मैंने उसे उपहास देने का वायदा किया था।..." कोट खोलकर मैंने पेटी पर से चाकू निकाला और लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल की ओर बढ़ाते हुए कहा : "कृपया यह उसे दे दीजिये। उसकी कितनी इच्छा थी यह चाकू लेने की, काश आप जान पाते!"

"मुझे मालूम है, गाल्त्सेव, मालूम है," गहरी साँस लेकर लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल ने कहा। उसने मुझसे चाकू लेकर उसे देखा। "अच्छा है। पर बेहतर भी होते हैं। ऐसे चाकू उसके पास दस से कम नहीं होंगे। पूरा बक्स भरकर.... क्या किया जा सकता हैं—लगाव ऐसा है! उम्र ऐसी है। सभी को मालूम है—लड़का है!.... ठीक है... अगर मिलूँगा, तो दे दूँगा..."

"क्या हुआ... नहीं लौटा क्या वह?" चिन्तित होकर मैंने पूछा।

"लौटा था। फिर चला गया... खुद चला गया..."

"अरे ऐसा क्यों?"

लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल नाक-भौं सिकोड़कर चुप हो गया और दूर कहीं देखने लगा। फिर नीचे, भारी-से गले से बोला :

"उसे फ़ौजी स्कूल भेज रहे थे, वह तैयार भी हो गया था। सुबह सब कागज़ात ठीक करने थे, और रात को वह भाग गया... उसे दोष भी नहीं दे सकता : मैं उसे समझता हूँ। यह तो लम्बा किस्सा है, और तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत है..."

उसने मेरी ओर बड़ा, चेचक के दागोंवाला, सख्त और ध्यानमग्न चेहरा घुमाया :

"घृणा उसमें खत्म नहीं हुई। उसे शांति भी नहीं है... हो सकता है, फिर लौट आये, पर, सम्भव है, छापामारों के पास चला जाये... तुम उसके बारे में भूल जाओ और आगे से ध्यान में रखो : गुप्तचरों के बारे में पूछना मना है। उनके बारे में जितनी कम बातें की जाती हैं और जितने कम लोग उनके बारे में जितनी कम बातें की जाती हैं और जितने कम लोग उनके बारे में जानते हैं उतना ही गुप्तचर ज़्यादा जीते हैं.... तुम उससे इत्तफ़ाक से मिले थे। और तुम बुरा मत मानो उसके बारे में जानने की तुम्हें इजाज़त नहीं है! इसलिये आगे से याद रखो : कुछ भी नहीं हुआ था, तुम किसी बोंदरेव को नहीं जानते, तुमने कुछ

नहीं देखा, कुछ भी नहीं सुना, और किसी को भी उस पास पहुँचाकर तुम नहीं आये। और इसीलिये पूछने को भी कुछ नहीं है। समझे?..."

...और मैंने फिर कभी कुछ नहीं पूछा। पूछने को कोई था ही नहीं। होलिन तो जल्द ही शहीद हो गया जब टोह लेने गया हुआ था : सुबह के धुँधलके में उसकी गुप्तचरों की टोली जर्मनों की घात में फँस गई। गोलियों की बौछार ने होलिन की टाँगें घायल कर दीं; सबको पीछे हटने का आदेश देकर वह लेट गया और आखिरी गोली तक गोलियाँ बरसाता रहा; जब जर्मनों ने उसे पकड़ा उसने टेंकभेदी हथगोला चला दिया... लेफ़्टिलेण्ट-कर्नल ग्रिज़्नोव दूसरी फ़ौज में नियुक्त कर दिया गया, मैं उससे फिर कभी नहीं मिला।

इवान को मैं भूल नहीं पाया जैसा कि लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल ने मुझे सलाह दी थी। पर उस नन्हे-से गुप्तचर को अनेक बार याद करते हुए भी कभी मैंने नहीं सोचा कि मैं उससे मिला पाऊँगा या उसके भाग्य के बारे में कुछ जान पाऊँगा।

9

कोवेल के पास लड़ाइयों के दौरान मैं बुरी तरह घायल हो गया था और कुछ ही कामों के योग्य बचा था : मुझे बस फ़ौजों के हेडक्वार्टरों में लड़ाई से अलग काम और पिछवाड़े की नौकरी की अनुमति थी। मुझे बटालियन और अपनी डिवीजन से अलग होना पड़ा। लड़ाई के आखिरी आधे साल मैंने उसी, पहले बेलोरूसवाले मोर्चे पर कोर के गुप्तचर विभाग में अनुवादक का काम किया, पर दूसरी फ़ौज में।

जब बर्लिन के लिये लड़ाइयाँ शुरू हुई, तो मुझे व दो और अफ़सरों को एक ख़ास दस्ते में शामिल किया गया। ये दस्ते जर्मन काग़ज़ात और दस्तावेज़ों पर क़ब्जा करने के लिए तैयार किये गये थे।



दो मई दिन में तीन बचे बर्लिन ने आत्मसमर्पण कर दिया। उन ऐतिहासिक क्षणों में हमारा दस्ता शहर के बिल्कुल बीच में प्रिंस-आल्ब्रेख्तश्त्रास्से सड़क पर एक आधी टूटी इमारत में थी, जहाँ कुछ ही समय पहले सरकारी खुफ़िया पुलिस तैनात थी।

जैसा हम लोगों ने सोचा ही था, अधिकतर काग़ज़ात जर्मन या तो ले गये या नष्ट कर दिये। बस चौथी मंज़िल पर भगवान जाने कैसे बची हुई फ़ाइलोंवाली अलमारियाँ और विशाल कार्ड-इंडेक्स मिले। इमारत में सबसे पहले घुसे टॉमीगनवालों ने इस बारे में खुशी भरी चीखों से सूचित

किया।

''कामरेड कैप्टन, वहाँ आँगन में गाड़ी में काग़ज़ात हैं!'' मेरे पास भागकर आये चौड़े कंधोंवाले, भारी-भरकम, छोटे क़द के सिपाही ने कहा।

बिखरे हुए पत्थरों और ईंटों के टुकड़ों से भरे इस विशाल आँगन में पहले दसियों या शायद सौ गाड़ियों के लिये गैराज बना था; उनमें से अब कुछ ही बची थीं–विस्फोटों से खराब हुई या ठीक नहीं की हुई। मैंने चारों ओर देखा : बंकर, लाशें, बमों की वजह से हुए गड्ढे, आँगन के कोने में माईन-डिटेक्टर के साथ खड़े हुए सैपर।

फाटक से कुछ दूरी पर एक बड़ी-सी ट्रक खड़ी थी। पिछला रेलिंग खुला हुआ था- बॉडी में तिरपाल के नीचे अफ़सर की लाश और पुलिंदों में बँधी हुई फ़ाइलें दिखाई दे रही थीं; अफ़सर ने काली एस0एस फ़ौजों के चिन्हवाली वरदी पहन रखी थी।

सिपाही मुश्किल से बॉडी में चढ़ा और पुलिंदे किनारे पर घसीट लाया। मैंने चाकू से रस्सी काट दी।

यह 'सेण्टर' जर्मन आर्मी ग्रुप की खुफिया मैदानी पुलिस के काग़ज़ात थे। ये 1943-44 की सर्दियों से सम्बन्धित थे। ताज़ीरी ''ऑपरेशनों'' और एजेंटों के कामों के बारे में मेरोरेंडम, खोज के तक़ाज़े और फ़ार्म, तरह-तरह की विशेष खबरों और रिपोर्टों की प्रतियाँ–वे बहादुरी और कायरता के बारे में, बदला लेनेवालों और मारे गये लोगों के बारे में, पकड़े गये और पकड़ में न आने वालों के बारे में बता रहे थे। इन काग़ज़ों में मुझे विशेष दिलचस्पी पैदा हो गई : मोज़िर और पेत्रिकोव, रेचित्सा और पींस्क–गोमेल और पोलेस्ये के क्षेत्र की इतनी जानी-पहचानी जगहें, जहाँ हमारा मोर्चा बढ़ रहा था–मेरे सामने आती जा रही थीं।

काग़ज़ों में काफ़ी फ़ार्म थे जिन पर संक्षेप में उन लोगों के बारे में लिखा था जिन्हें खुफ़िया पुलिस ढूँढ़ रही थी, पकड़ रही थी और जिनका पीछा कर रही थी। कुछ फ़ार्मों पर फ़ोटो चिपके हुए थे।

''कौन हैं ये?'' बॉडी में खड़े सिपाही ने झुककर मोटी और छोटी उँगली से दिखाकर मुझसे पूछा : ''कामरेड कैप्टन, कौन हैं ये?''

उसे जवाब न देकर मैं सुन्न-सा काग़ज पलटता रहा, एक के बाद एक फ़ाइलें देखता रहा और हम लोगों को भिगो रही बरसात की ओर भी ध्यान नही दिया।

हाँ, बर्लिन में हमारी विजय के उस महान दिन बरसात हो रही थी, हल्की-हल्की और ठण्डी; आसमान पर बादल छाये हुए थे। बस शाम से कुछ पहले आकाश बादलों से साफ़ हुआ था और धुएँ के पार से सूरज दिखाई देने लगा था।

दस दिन के ज़बर्दस्त हमलों के बाद अब ख़ामोशी का राज था, जो कभी-कभी टॉमीगन की गोलियों की बौछारों से टूट जाती थी। शहर के बीच में आग भभक रही थी। शहर के किनारे-किनारे, जहाँ बहुत सारे बाग़ थे, बकाइन की तेज़ खुशबू ने बाक़ी सब खुशबुओं को दबा दिया था। पर यहाँ जलने की गन्ध थी, खण्डहरों के ऊपर काला धुआँ छाया हुआ था।

''सब कुछ इमारत में ले जाओ!'' पुलिंदों की ओर इशारा करके आख़िर मैंने सिपाही को आदेश दिया और यंत्रवत् हाथ में पकड़ी हुई फ़ाइल खोल ली। उसे देखा तो मेरा दिल धड़क उठा : फ़ार्म पर

चिपके हुए फ़ोटो से इवान बुस्लोव मेरी ओर देख रहा था....

उसके चौड़ी हड्डियों वाले चेहरे और दूर-दूर फैली बड़ी आँखों से मैं उसे तुरन्त पहचान गया—इतनी दूर-दूर फैली हुई किसी की आँखें मैंने नहीं देखी थीं।

वह भौंहें चढ़ाकर कड़ी नज़रों से देख रहा था, ठीक वैसे ही जैसे द्नेपर के किनारे डग-आउट में हम लोगों की पहली मुलाक़ात के समय। बायें गाल पर हड्डी के नीचे नील पड़ा हुआ था।

फ़ोटोवाला फ़ार्म पूरा भरा नहीं गया था। अवाक् अवस्था में ही मैंने उसे पलटा- नीचे टाइपराइटर से छपा हुआ एक कागज़ लगा था : दूसरी जर्मन फ़ौज की खुफ़िया मैदानी पुलिस के प्रधान की विशेष सूचना की प्रति।

"...शहर लूनिनेत्स। 36-12-431 गुप्त। 'सेण्टर' आर्मी ग्रुप की मैदानी पुलिस के प्रधान को...

"...21 दिसम्बर, इस साल को 23वीं आर्मी कोर की तैनाती के निषिद्ध क्षेत्र में रेल पटरियों के पास सहायक पुलिस के अफ़सर येफ़ीम तित्कोव ने दस-बारह साल के रूसी स्कूली बच्चे को देखा और दो घंटे की निगरानी के बाद पकड़ लिया। वह बर्फ़ में लेटे हुए कालींकोविची-क्लींस्क के क्षेत्र में फ़ौजी गाड़ियों के चलन की निगरानी कर रहा था।

"पकड़े जाते समय अनजान ने (जैसा कि साबित है, स्थानीय निवासिनी मरीया स्योमिना को उसने अपना नाम 'इवान' बताया था) प्रचण्ड विरोध किया था, तित्कोव के हाथ पर काट लिया और बस वक़्त पर पहुँच गये लांस कार्पोरल वींत्स की मदद से ही उसे मैदानी पुलिस स्टेशन ले जाया जा सका...

"...यह साबित है कि 'इवान' 23वीं आर्मी कोर के क्षेत्र में कई दिनों से था... भीख माँगता था... सुनसान कोठरियों और पुआल के ढेरों में रातें बिताता था। हाथ और पैरों की उँगलियों को पाला मार गया था, वे सड़ने लगी थीं...

" 'इवान' की तलाशी लेने पर उसकी जेबों में नाक पोंछनेवाला रूमाल और 110 (एक सौ दस) जर्मन मार्क मिले। इस तरह की कोई चीज, जो इस बात की गवाही दे सके कि लड़के का सम्बन्ध छापामारों से या जासूसी से हैं, नहीं मिली। खास पहचान : पीठ के बीच में रीढ़ की हड्डी पर गोली से घायल होने का निशान है...

"चार दिन से पूरी कड़ाई और बारीकी से पूछताछ करने वाले मेजर फ़ॉन बीस्सिंग, ओबेर लेफ़्टिनेण्ट क्ल्याम्त और सार्जेंट-मेजर श्तामेर को 'इवान' ने इस तरह का कोई बयान नहीं दिया जिससे उसके व्यक्तित्व के बारे में कोई सूचना मिलती हो और जिससे निषिद्ध क्षेत्र व 23वीं आर्मी कोर के क्षेत्र में उसकी उपस्थिति की वजह का पता लग सके।

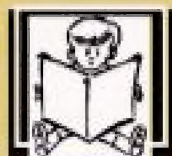
"पूछताछ के समय उद्दण्ड बना रहा : जर्मन फ़ौजों और जर्मन साम्राज्य के प्रति अपने दुश्मनी भरे रुख को उसने छिपाया नहीं।

"सशस्त्र सेनाओं के हाई कामन के 11 नवम्बर, 1941 के आदेश के अनुसार 25 दिसम्बर, 1943 को 6 बजकर 55 मिनट पर उसे गोली मार दी गई।

".. तित्कोव को ...100 (एक सौ) मार्क का इनाम दिया गया। रसीद साथ में लगाई जा रही है।.."

■





अनुराग ट्रस्ट

लखनऊ